भाद्रपद शुक्ल - 12 ■ संवत 2082 ■ वर्ष - 13 ■ अंक - 42 ■ पृष्ठ - 8 ■ रु. 5/- चेन्नई » गुरुवार » 04-09-2025 ■ www.dakshinbharat.com ■ Email : chennai@dakshinbharat.com

# दक्षिण भारत राष्ट्रमत

தக்ஷின் பாரத் ராஷ்ட்ரமத் | தினசரி ஹிந்தி நாளிதழ் | चेन्नई और बेंगलूरु से एक साथ प्रकाशित

5 मिलाद-उन-नबी पर विदेशी उपदेशकों को अनुमति नहीं है : जी परमेश्वर

6 डिजिटल युग में शिक्षक की भूमिका हुई अधिक महत्वपूर्ण

7 कृति सेनन बनीं यूएनएफपीए की ब्रांड एंबेसडर

## फर्स्ट टेक

### लीबिया में सैन्य मुख्यालय पर आत्मघाती हमला

**त्रिपोली 03 सितंबर (वार्ता)** लीबिया की राजधानी त्रिपोली से लगभग 170 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में बानी वालिद स्थित 444वीं कॉम्बैट ब्रिगेड के मुख्यालय को निशाना बनाकर एक आत्मघाती हमला किया गया है। ब्रिगेड ने मंगलवार को यह जानकारी दी। ब्रिगेड ने अपने फेसबुक पेज पर जारी एक आधिकारिक बयान में कहा कि एक आत्मघाती हमलावर ने मुख्यालय के सामने वाहन के अंदर खुद को उड़ा लिया। बयान में हमले के बाद की तस्वीरें भी जारी की गईं, जिसमें कहा गया कि स्थिति नियंत्रण में है और मुख्यालय अपना काम जारी रखे हुए है। 444वीं कॉम्बैट ब्रिगेड पश्चिमी क्षेत्र में लीबियाई सेना से संबद्ध सैन्य इकाइयों में से एक है जो त्रिपोली स्थित संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय एकता सरकार (जीएनयू) के अधीन है।

### भारत भर में 21 नदिया गंभीर बाढ़ की चपेट में

**नयी दिल्ली/भाषा।** केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी) ने बुधवार को बताया कि दिल्ली स्थित एक निगरानी केंद्र सहित अन्य निगरानी केंद्रों ने सूचना दी कि 21 नदियों में ''बाढ़ की स्थिति गंभीर है'' जबकि 33 अन्य नदियां सामान्य स्तर से ऊपर बह रही हैं। जिन 21 नदियां बाढ़ की गंभीर चपेट में हैं, उनमें बिहार में नौ, उत्तर प्रदेश में आठ और दिल्ली, जम्मू-कश्मीर, पश्चिम बंगाल और झारखंड में एक-एक नदी शामिल है। जिन 33 नदियों का जलस्तर सामान्य से अधिक है, उनमें उत्तर प्रदेश में नौ, बिहार में सात, असम में सात, उत्तराखंड में दो, ओडिशा में दो, तेलंगाना में दो और आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान तथा पश्चिम बंगाल में एक-एक नदी है। दिल्ली में रेलवे पुल पर यमुना नदी में भीषण बाढ़ की स्थिति है। उत्तरी पहाड़ी राज्य हाई अलर्ट पर हैं।

### अभिनेता आशीष कपूर को हिरासत में लिया गया

**नयी दिल्ली/भाषा।** टेलीविजन अभिनेता आशीष कपूर को दिल्ली पुलिस ने पुणे से हिरासत में लिया है। एक महिला ने अभिनेता पर राष्ट्रीय राजधानी में एक पार्टी में दुष्कर्म करने का आरोप लगाया है। पुलिस के एक अधिकारी ने बुधवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि पीड़ित महिला कपूर से सोशल मीडिया के जरिये संपर्क में आई थी और उसने आरोप लगाया कि दुष्कर्म की यह घटना अगस्त के दूसरे सप्ताह में दिल्ली में एक पार्टी में हुई थी। पुलिस अधिकारी ने कहा, ''अपनी शिकायत में महिला ने कहा कि कपूर ने शौचालय में उसका यौन उत्पीड़न किया।'' पुलिस के अनुसार शुरुआती प्राथमिकी में कपूर, उनके एक मित्र, मित्र की पत्नी और दो अज्ञात व्यक्तियों के नाम शामिल थे।

04-09-2025 सूर्यास्त 6:17 बजे | 05-09-2025 सूर्योदय 5:57 बजे

| BSE | NSE |
|---|---|
| 80,567.71 (+409.83) | 24,715.05 (+135.45) |

| सोना | चांदी |
|---|---|
| 10,637 रु. (24 कैरेट) प्रति ग्राम | 131,000 रु. प्रति किलो |

मिशन मंडेला
दक्षिण भारत राष्ट्रमत
दक्षिण भारत का लोकप्रिय हिन्दी दैनिक
epaper.dakshinbharat.com

कैलाश मण्डेला, मो. 9828233434

### दलहित दलन

सत्ता में ना होने से ही,
ना करें सभी पर बस विरोध।
कुछ मुद्दे ऐसे भी होते,
जिनका सारे ही रखें बोध।
सब दल कुछ ऐसी बातों पर,
मिल कर वैचारिक करें शोध।
कर देगा अहित देश का भी,
दलहित से उपजा क्षणिक क्रोध।।

## जीएसटी परिषद ने दी दो स्तरीय कर संरचना को मंजूरी

# जीएसटी में होंगे केवल दो कर स्लैब

**■ तंबाकू उत्पादों और सिगरेट को छोड़कर अन्य वस्तुओं के लिए 22 सितंबर से लागू होगी पांच प्रतिशत और 18 प्रतिशत की दो-स्तरीय कर संरचना**

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**नयी दिल्ली/भाषा।** जीएसटी परिषद ने बुधवार को लोगों को राहत देते हुए माल एवं सेवा कर के तहत पांच प्रतिशत और 18 प्रतिशत की दो-स्तरीय कर संरचना को मंजूरी दे दी। इसमें रोजमर्रा के उपयोग वाले सामानों पर जीएसटी दरों में कटौती की गयी है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने जीएसटी परिषद की 56वीं बैठक में लिये गये निर्णय के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि जीएसटी में व्यापक सुधारों के तहत बाल में लगाने वाले तेल, साबुन, साइकिल आम और मध्यम वर्ग की वस्तुओं पर जीएसटी 12 प्रतिशत या 18 प्रतिशत से घटाकर पांच प्रतिशत कर दिया गया है। इसके अलावा, छेना, पनीर, रोटी और पराठा पर कोई जीएसटी नहीं लगेगा। जीवन रक्षक दवाओं पर भी जीएसटी शून्य होगा।

सीतारमण ने यह भी कहा कि व्यक्तिगत जीवन बीमा, स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी के प्रीमियम पर जीएसटी से छूट मिलेगी।

इसके अलावा, छोटी कारों और 350 सीसी तक के दोपहिया वाहनों पर 18 प्रतिशत जीएसटी लगेगा। तिपहिया वाहन पर भी अब 18 प्रतिशत कर लगेगा।

उन्होंने कहा कि तंबाकू, पान मसाला और सिगरेट पर जीएसटी 40 प्रतिशत की विशेष दर से लगेगा।

सीतारमण ने कहा, '' यह केवल जीएसटी में सुधार नहीं है, बल्कि संरचनात्मक सुधारों और लोगों की जीवन को सुगम बनाने की दिशा में उठाया गया कदम है।'' तंबाकू उत्पादों और सिगरेट को छोड़कर नई जीएसटी दरें 22 सितंबर से प्रभावी होंगी।

- छेना, पनीर, रोटी, पराठे जैसे खाद्य उत्पादों, व्यक्तिगत जीवन बीमा, स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी के प्रीमियम पर कोई जीएसटी नहीं लगेगा
- आम आदमी एवं मध्यम वर्ग के इस्तेमाल वाले उत्पादों- हेयर ऑयल, साबुन, साइकिल, हस्तशिल्प, संगमरमर, ग्रेनाइट पत्थर पर पांच प्रतिशत जीएसटी
- छोटी कारों एवं 350 सीसी तक की मोटरसाइकिलों, तिपहिया, सभी वाहन कलपुर्जों, सीमेंट, सभी टीवी सेट पर 18 प्रतिशत जीएसटी
- पान मसाला, तंबाकू उत्पादों, सिगरेट और एयरेटेड ड्रिंक, 350 सीसी से अधिक क्षमता वाली मोटरसाइकिल, व्यक्तिगत इस्तेमाल वाले विमानों, 1200 सीसी से अधिक क्षमता वाली पेट्रोल कार और 1500 सीसी से अधिक क्षमता वाली डीजल कार पर 40 प्रतिशत की विशेष जीएसटी दर

# 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति परंपरा और आधुनिकता का सर्वश्रेष्ठ समन्वय है'

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**तिरुवरूर।** राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बुधवार को यहां कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति परंपरा और आधुनिकता का सर्वश्रेष्ठ समन्वय है और जो लोग इसे अपना सकते हैं और नए कौशल सीख सकते हैं, वे बदलाव के अगुआ बनेंगे। तमिलनाडु केंद्रीय विश्वविद्यालय के 10वें दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता करते हुए मुर्मू ने कहा कि विश्वविद्यालय शैक्षणिक स्तर के उच्च मानकों को बनाए रखने और बौद्धिक जिज्ञासा एवं आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देने वाला प्रेरक वातावरण बनाने के लिए विशेष प्रशंसा का पात्र है।

उन्होंने कहा, ''भारत में, हमारी महान और प्राचीन परंपराएं हैं जो ज्ञान के लिए ज्ञान की तलाश करती हैं।'' उन्होंने कहा कि आज के डिजिटल युग में, छात्रों के पास सीखने के इतने सारे संसाधन उपलब्ध होने से वे एक बेहतरीन स्थिति में हैं। उन्होंने कहा, ''आपके लिए अपनी समृद्ध विरासत को फिर से खोजना किसी भी पिछली पीढ़ी की तुलना में कहीं अधिक आसान है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मूल में है; यह परंपरा और आधुनिकता के सर्वोत्तम पहलुओं को एक साथ लाती है।'' छात्रों से निरंतर सीखते रहने का आग्रह करते हुए उन्होंने कहा कि पिछले कुछ दशकों में इंटरनेट क्रांति ने दुनिया को इस तरह बदल दिया है कि कई नए पेशे सामने आए हैं, जिनकी पहले कभी कल्पना भी नहीं की गई थी।

उन्होंने कहा, ''कृत्रिम बुद्धिमत्ता और औद्योगिक क्रांति 4.0, कार्य संस्कृति को और बदल देंगे। ऐसे गतिशील वातावरण में, जो लोग नए कौशल सीख सकते हैं, वे बदलाव में अग्रणी भूमिका के वाहक बनेंगे।'' मुर्मू ने कहा कि वह एक स्कूल शिक्षिका थीं। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी जीवनभर विद्यार्थी रहे और उन्होंने तमिल और बांग्ला जैसी भाषाओं को जाना, गीता जैसे धर्मग्रंथ का अध्ययन किया और साथ ही चप्पल बनाने और चरखा चलाने जैसे कौशल सीखे। उन्होंने कहा, ''उनके मामले में यह सूची लगभग अंतहीन है। गांधीजी अपने अंतिम समय तक असाधारण रूप से सजग और सक्रिय रहे। उन्होंने छात्रों को जिज्ञासु बने रहने की सलाह दी। इससे निरंतर सीखते रहने को बढ़ावा मिलेगा और निरंतर सीखने से उनके कौशल की हमेशा मांग बनी रहेगी।''

# भारत-जर्मनी संबंधों को और व्यापक बनाने की अपार संभावनाएं

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**नयी दिल्ली/भाषा।** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को कहा कि व्यापार, प्रौद्योगिकी, नवाचार और विनिर्माण जैसे क्षेत्र में भारत-जर्मनी सहयोग को और व्यापक बनाने की अपार संभावनाएं हैं।

मोदी ने यह बात जर्मनी के विदेश मंत्री जोहान वेडफुल से मुलाकात के बाद कही। मोदी ने सोशल मीडिया पर कहा, जर्मनी के विदेश मंत्री जोहान वेडफुल से मिलकर प्रसन्नता हुई। भारत और जर्मनी रणनीतिक साझेदारी के 25 वर्ष पूरे होने का जश्न मना रहे हैं। उन्होंने कहा, जीवंत लोकतंत्र और अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं के रूप में, हम व्यापार, प्रौद्योगिकी, नवाचार, विनिर्माण जैसे क्षेत्र में पारस्परिक रूप से लाभकारी सहयोग को बढ़ाने की अपार संभावनाएं देखते हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा, हम एक बहुध्रुवीय विश्व, शांति और संयुक्त राष्ट्र सुधारों के लिए एक समान दृष्टिकोण रखते हैं। मैंने जर्मन चांसलर को शीघ्र भारत आने का निमंत्रण दोहराया।

वेडफुल ने विदेश मंत्री एस जयशंकर के साथ व्यापक मुद्दों पर बातचीत के बाद मोदी से मुलाकात की।

प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात के बाद जर्मनी के विदेश मंत्री ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में यूक्रेन में युद्ध विराम के लिए भारत के आह्वान की सराहना की। उन्होंने कहा, आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ अच्छी बातचीत हुई। हमारे देशों ने अपनी रणनीतिक साझेदारी को व्यापक स्तर पर, विशेष रूप से सुरक्षा एवं रक्षा, अर्थव्यवस्था एवं व्यापार तथा कुशल श्रम के क्षेत्र में विस्तारित करने के लिए अच्छे कदम उठाए हैं।

उन्होंने कहा, हम यूक्रेन में युद्ध विराम के लिए भारत के आह्वान की भी सराहना करते हैं।

## गैंगस्टर मैनपाल ढिल्ला को कंबोडिया से प्रत्यर्पित किया गया, गिरफ्तार

**नयी दिल्ली/गुरुग्राम/भाषा।** हरियाणा के कुख्यात वांछित अपराधी मैनपाल ढिल्ला को राज्य पुलिस, केंद्रीय गृह मंत्रालय और विदेश मंत्रालय के सहयोग से केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा समन्वित एक अभियान में कंबोडिया से प्रत्यर्पित किए जाने के बाद गिरफ्तार किया गया। अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। हरियाणा के झज्जर जिले के बादली गांव का निवासी मैनपाल ढिल्ला उर्फ़ मैनपाल बादली पर हत्या समेत 22 मामले दर्ज हैं। अधिकारियों ने बताया कि 2007 और 2010 में दर्ज तीन मामलों में दोषी ठहराए जाने के बाद वह हिसार जेल में आजीवन कारावास की सजा काट रहा था। अधिकारियों ने बताया कि ढिल्ला पर जेल में रहते हुए एक व्यक्ति की हत्या का भी आरोप है। उसे 17 जुलाई 2018 को पैरोल पर रिहा किया गया था, जिसके बाद वह फर्जी पहचान पत्र के साथ विदेश भाग गया था।

# शहरी क्षेत्रों में यातायात सुगम बनाना प्राथमिकता : गडकरी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

नयी दिल्ली/भाषा। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने शहरों में भीड़भाड़ को देखते हुए यातायात की व्यवस्था को सुचारू बनाने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा है कि इसके लिए प्राथमिकता के आधार पर ठोस कदम उठाने की जरूरत है।

उन्होंने कहा कि शहरों में यातायात के संचालन के लिए रिंग रोड तथा बाईपास जैसी व्यवस्था पर ध्यान केंद्रित कर ऐसे उपाय किये जाने चाहिए कि शहरी क्षेत्र में बाहरी वाहनों का दबाव कम हो लम्बी दूरी के वाहनों को शहर के बाहरी इलाके से ही अपने गंतव्य तक भेजा जा सके। उनका कहना था कि इस बारे में वह सहयोगी मंत्रियों तथा अधिकारियों से चर्चा कर रहे हैं।

गडकरी ने बुधवार को सोशल मीडिया एक्स पर एक पोस्ट में कहा, शहरी क्षेत्रों के आसपास राष्ट्रीय राजमार्गों के सतत विकास के लिए नवीन नीतिगत उपायों पर एक परामर्श कार्यशाला की अध्यक्षता की।

मंत्रालय में राज्य मंत्री अजय टम्टा जी तथा हर्ष मल्होत्रा जी, राज्य सरकार के अधिकारी और नगर निगम आयुक्त इसमें शामिल हुए। कार्यशाला के दौरान की चर्चा में रिंग रोड और बाईपास का निर्माण कर शहरी राष्ट्रीय राजमार्गों पर भीड़भाड़ कम करने, नवीन मूल्य ग्राही वित्तपोषण मॉडल अपनाने और शहर के मास्टर प्लान के साथ निर्बाध संरेखण सुनिश्चित करने पर विचार किया गया।

## दिनाकरन नीत एएमएमके ने तमिलनाडु में राजग से नाता तोड़ा

**कुड्डलूर (तमिलनाडु)/भाषा।** टीटीवी दिनाकरन के नेतृत्व वाली पार्टी एएमएमके ने बुधवार को विश्वासघात के विरोध में भाजपा नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) से अलग होने की घोषणा की। अम्मा मक्कल मुनेत्र कषगम (एएमएमके) राज्य में विपक्षी गठबंधन छोड़ने वाली दूसरी पार्टी है। इससे पहले अन्नाद्रमुक से निष्कासित नेता ओ पन्नीरसेल्वम ने हाल ही में अपनी पार्टी को गठबंधन से बाहर कर लिया था। जिले के कट्टुमन्नारकोइल में पत्रकारों से बातचीत करते हुए दिनाकरन ने कहा, ''यह आंदोलन (एएमएमके) कुछ लोगों के विश्वासघात के खिलाफ शुरू किया गया था। हमें विश्वास था कि वे बदल जाएंगे लेकिन कुछ नहीं हुआ... हम मूर्ख नहीं हैं कि उन्हें अपने कंधों पर ढोएं। हमने कुछ महीनों तक प्रतीक्षा की कि दिल्ली (भाजपा) में बैठे लोग कोई उचित फैसला लेंगे, लेकिन ऐसा होता नहीं दिख रहा है।'' उन्होंने कहा, ''हम राजग छोड़ रहे हैं। हम दिसंबर में अपनी अगले कदम के बारे में जानकारी देंगे।'' उन्होंने विश्वासघात के संबंध में किसी का नाम उजागर नहीं किया।

# रूस ने यूक्रेन पर दागीं 500 से अधिक ड्रोन और मिसाइलें

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**कीव/एपी।** रूस ने रात भर में यूक्रेन पर 500 से अधिक ड्रोन और दो दर्जन मिसाइलें दागीं। अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी।

दूसरी तरफ यूक्रेन के राष्ट्रपति और यूरोपीय नेता यूक्रेनी सुरक्षा को मजबूत करने और अब तक अमेरिकी नेतृत्व वाले असफल शांति प्रयासों को गति देने के उद्देश्य से बातचीत जारी रखे हुए हैं।

यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने कहा कि रूस के हमले के मुख्य लक्ष्य नागरिक बुनियादी ढांचे, विशेष रूप से ऊर्जा सुविधाएं थीं। उन्होंने कहा कि रूस ऊर्जा सुविधाओं को सर्दी से पहले निशाना बनाकर अपने पड़ोसी को परेशान करने की आक्रामक नीति पर काम कर रहा है। यूक्रेनी वायु सेना ने बताया कि हमलों में मुख्य रूप से पश्चिमी और मध्य यूक्रेन को निशाना बनाया गया और कम से कम पांच लोग घायल हो गए।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा लड़ाई रोकने के प्रयासों के बावजूद, हाल के महीनों में नागरिक क्षेत्रों पर रूसी हवाई हमले तथा 1,000 किलोमीटर की अग्रिम पंक्ति में यूक्रेनी सुरक्षा को ध्वस्त करने के रूसी सेना के प्रयासों में कमी नहीं आई है।

जेलेंस्की ने हालांकि ट्रंप के युद्ध विराम और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ आमने-सामने शांति वार्ता के प्रस्तावों को स्वीकार कर लिया है, लेकिन क्रेमलिन ने इस पर आपत्ति जताई है। हाल ही में कूटनीतिक गतिविधियों के बीच, पुतिन चीन में चीनी नेता शी चिनफिंग और उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग उन के साथ-साथ भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से भी मिले। वाशिंगटन का कहना है कि ये देश रूस के युद्ध प्रयासों का समर्थन कर रहे हैं।

# चीन का कायाकल्प 'निर्बाध जारी' है : शी चिनफिंग

## चीन ने अपनी विशाल सैन्य परेड में कई नई हथियार प्रणालियों का अनावरण किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**बीजिंग/भाषा।** चीन में बुधवार को आयोजित सैन्य परेड में हाइपरसोनिक, लेजर और लंबी दूरी की बैलिस्टिक मिसाइलों सहित कुछ अत्याधुनिक साजो सामान का पहली बार प्रदर्शन किए जाने के साथ राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने कहा कि उनके देश का कायाकल्प ''निर्बाध जारी'' रहेगा।

द्वितीय विश्व युद्ध में जापानी आक्रमण के विरुद्ध चीन की जीत की 80वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित एक भव्य परेड को संबोधित करते हुए शी ने कहा, चीन कभी भी किसी भी धौंस से नहीं डरता और हमेशा आगे बढ़ता रहता है।

उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की टैरिफ (शुल्क) धमकियों के संदर्भ में परोक्ष रूप यह बात कही। शी ने कहा, इतिहास हमें सचेत करता है कि मानवता एक साथ उठती और गिरती है। शी ने जन मुक्ति सेना (पीएलए) से राष्ट्रीय पुनरुद्धार के लिए रणनीतिक सहयोग प्रदान करने तथा विश्व शांति एवं विकास में अधिक योगदान देने का आह्वान किया।

चीनी सेना ने पहली बार परेड में अपने कुछ सबसे उन्नत सैन्य उपकरणों का प्रदर्शन किया, जो दुनिया, विशेषकर अमेरिका के समक्ष शक्ति प्रदर्शन था। पीएलए की सर्वोच्च कमान केंद्रीय सैन्य आयोग (सीएमसी) के प्रमुख शी ने चीनी सेना से खुद को विश्व स्तरीय सुरक्षा बल बनाने और राष्ट्रीय संप्रभुता, एकता एवं क्षेत्रीय अखंडता की दृढ़ता से रक्षा करने को कहा।

अमेरिका के बाद चीन दूसरा सबसे बड़ा रक्षा बजट वाला देश है। इस साल इसका वार्षिक रक्षा बजट 250 अरब अमेरिकी डॉलर का है।

## अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने कसा तंज

**बीजिंग/भाषा।** चीन ने दूसरे विश्व युद्ध में अपनी विजय की 80वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में बुधवार को यहां एक विशाल सैन्य परेड का आयोजन किया जिसमें रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और उत्तर कोरिया के शीर्ष नेता किम जोंग उन सहित 20 से अधिक विदेशी नेताओं ने शिरकत की।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने इस मौक़े पर चीन को बधाई दी और साथ ही तंज़ कसते हुए अमेरिका के ख़िलाफ़ 'साज़िश' रचने का आरोप लगाया। उन्होंने एक पोस्ट किया, बड़ा सवाल यह है कि क्या चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग उस भारी समर्थन और 'रक्त' का ज़िक्र करेंगे जो अमेरिका ने चीन को विदेशी आक्रमणकारी से आज़ादी हासिल करने में मदद करने के लिए दिया था। ट्रम्प ने पुतिन और किम की अमेरिका के खिलाफ़ कथित तौर पर साज़िश रचने के लिए भी आलोचना की। उन्होंने कहा, व्लादिमीर पुतिन और किम जोंग उन को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं, क्योंकि आप अमेरिका के खिलाफ़ साज़िश रच रहे हैं।

## सम्मान

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

विश्व कार्मिक औकुटा द्वारा बुधवार को बेंगलूरु स्काउट एंड गाइड कोंडपा बसप्पा ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत को सम्मानित करते हुए कीर्तननाथ स्वामी, गंडसी सदानंद स्वामी एवं अन्य।

# जम्मू कश्मीर में मूसलाधार बारिश, मकान ढहने से दो लोगों की मौत, प्रमुख सड़कें बंद

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**जम्मू/श्रीनगर/भाषा।** समूचे जम्मू कश्मीर में बुधवार को भारी बारिश के कारण वर्षा जनित घटना में एक महिला और उसकी बेटी की मौत हो गई, जबकि बाढ़ग्रस्त अखनूर के एक गांव में 40 लोग फंस गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

अनंतनाग जिले में पुलिस ने भारी बारिश के कारण जलस्तर बढ़ने से एक पुल के नीचे फंसे 25 बंजारा परिवारों को बचाया। उन्होंने बताया कि बारिश के कारण नदियों, नालों और छोटी नदियों में जलस्तर बढ़ गया है जो पहले से ही खतरे के निशान के करीब या उससे ऊपर बह रही हैं, जबकि उधमपुर और बनिहाल के बीच कई जगह भूस्खलन होने के कारण सभी मौसम में खुली रहने वाले श्रीनगर-जम्मू राष्ट्रीय राजमार्ग सहित प्रमुख सड़कें दूसरे दिन भी बंद रहीं। खराब मौसम के कारण घाटी और जम्मू क्षेत्र में शिक्षण संस्थान बंद रहे।

मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला के कार्यालय ने 'एक्स' पर पोस्ट किया कि मुख्यमंत्री ने स्थिति का आकलन करने के लिए एक बैठक की अध्यक्षता की। अब्दुल्ला ने प्रशासन को जमीनी कार्रवाई तेज करने, जलजमाव वाले इलाकों से लोगों को निकालने, जरूरी सेवाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने, संवेदनशील इलाकों से समय पर लोगों की निकासी और तत्काल राहत पहुंचाने के निर्देश दिए।

अधिकारियों ने बताया कि बुधवार तड़के राजौरी जिले के सुंदरबनी के कांगड़ी गांव में बारिश के कारण एक कच्चा मकान ढह जाने से मां-बेटी की मौत हो गई। दोनों के शव मलबे से निकाले गए और पोस्टमॉर्टम के लिए अस्पताल भेज दिए गए। अधिकारियों ने बताया कि चेनाब नदी में उफान के कारण अखनूर के गरखल गांव में कम से कम 40 लोग फंस गए हैं। चेनाब नदी आज सुबह निकासी स्तर 42 फुट से चार फुट ऊपर बह रही थी। उन्होंने बताया कि राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) और पुलिस की टीम लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने के लिए गांव पहुंच गई हैं। पिछले 24 घंटों से हो रही भारी बारिश के कारण पुलवामा, शोपियां और कुलगाम समेत दक्षिण कश्मीर के कई इलाकों में बाढ़ आ गई है। अनंतनाग जिला पुलिस के एक प्रवक्ता ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, अनंतनाग पुलिस ने आंग अंजवाला में तेजी से बचाव अभियान चलाया और लिद्दर नाले में अचानक जलस्तर बढ़ने के कारण फंसे 25 बंजारा परिवारों को सुरक्षित बाहर निकाला। उन्होंने कहा कि बचाए गए परिवारों को तत्काल राहत प्रदान की गई।

अधिकारियों ने बताया कि पड़ोसी कुलगाम जिले में मंगलवार रात वैशोव नाले में जलस्तर बढ़ने के बाद पुलिस ने ब्राजलू गांव से पांच बंजारा परिवारों को बचाया। दक्षिण कश्मीर के विभिन्न थाना क्षेत्रों में जलाशयों में जलस्तर काफी बढ़ने के बीच वहां आपातकालीन हेल्पलाइन स्थापित की गई हैं।

## अमरावती सबसे सुरक्षित राजधानी, कुछ लोग जानबूझकर इसकी छवि खराब कर रहे हैं : आंध्र प्रदेश के मंत्री

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**अमरावती/भाषा।** आंध्र प्रदेश के नगरपालिका मंत्री पी. नारायण ने बुधवार को कहा कि अमरावती ''सबसे सुरक्षित राजधानी'' है, लेकिन कुछ लोग कथित तौर पर जानबूझकर इसे 'बदनाम' कर रहे हैं।

नारायण ने कहा कि अमरावती आकर देखने पर ही उन्हें पता चलेगा। यहां 360 किलोमीटर लंबी मुख्य सड़कें, 1,500 किलोमीटर लंबी लेआउट सड़कें, 4,000 आवासीय इमारतें और प्रतिष्ठित संरचनाओं का निर्माण तेज़ी से किया जा रहा है।

उन्होंने एक आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा, अमरावती सबसे सुरक्षित राजधानी है। कुछ लोग जानबूझकर इसे बदनाम कर रहे हैं, झूठा प्रचार कर रहे हैं कि वहां कोई काम नहीं हो रहा है, सिर्फ़ ग्राफिक्स दिखाए जा रहे हैं, लेकिन जनता उन्हें माफ नहीं करेगी।

मंत्री ने कहा कि हरी-भरी राजधानी शहर बाढ़ से बच सके, इसके लिए डच विशेषज्ञों ने डिज़ाइन तैयार किए हैं। साथ ही जलभराव रोकने के लिए नहरें और जलाशय बनाए जा रहे हैं। नारायण के अनुसार, अमरावती में 13,000 कर्मचारी और मजदूर 2,500 मशीनों की मदद से लगातार काम कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि 27 लाख वर्ग फुट क्षेत्र में बन रहे 1,440 आवासों सहित कई परियोजनाएं अपने अंतिम चरण में पहुंच चुकी हैं।

## यमुना बाढ़: दिल्ली के निचले इलाकों में रहने वालों को सामना करना पड़ रहा है कई समस्याओं का

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**नई दिल्ली/भाषा।** राष्ट्रीय राजधानी यमुना नदी के बढ़ते जलस्तर के कारण दिल्ली के निचले इलाकों की सड़कों और बाजार में पानी भर गया जिससे इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों और दुकानदारों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

मजनू का टीला, मदनपुर खादर और बदरपुर के निवासी यमुनाजल स्तर बढ़ने के कारण अब अस्थाई आश्रय स्थलों में रह रहे हैं। यमुना का जलस्तर बुधवार को दोपहर एक बजे 207 मीटर दर्ज किया गया। प्राधिकारियों ने निचले इलाकों से लोगों को सुरक्षित स्थानों पर स्थानांतरित किया और लोहे के रेलवे पुल को यातायात के लिए बंद कर दिया। प्रभावित हुए इन परिवारों के लिए असली चुनौती तब शुरू होगी जब नदी का जलस्तर कम होना शुरू होगा क्योंकि उन्हें अपने जीवन को पटरी पर लाने के लिए नए सिरे से संघर्ष करना पड़ेगा। बाजार में पानी भरने के कारण सन्नाटा छा गया। दुकानदार अनुप थापा ने कहा, हमने दुकान से ज्यादातर सामान हटा लिया लेकिन कुछ सामान खराब हो गया। पानी निकलने के बाद दुकान की मरम्मत करनी होगी जिसकी कीमत हमें चुकानी पड़ेगी। थापा पत्नी और तीन साल की बेटी के साथ सड़क किनारे शिविर में रह रहे हैं। उन्होंने बाढ़ के पानी के ऊपर बिजली के लटकते तारों को चिन्हित करते हुए कहा, यह 2023 के बाद दूसरी बार है। मैं सरकार से सड़कों को साफ करने और क्षेत्र को ठीक कराने का आग्रह करता हूं ताकि ऐसी घटनाएं फिर न हों। मदनपुर खादर में झुग्गी में रहने वाले परिवार अब पुराने प्लास्टिक शीट के तम्बू में रह रहे हैं। एक निवासी तायरा ने कहा, हमारा ज्यादातर सामान अंदर है। हम बड़ी मुश्किल से कुछ चीजें निकाल पा रहे। महिलाएं कई समस्याओं का सामना कर रही हैं क्योंकि शौचालय नहीं हैं।

## इंदौर के सरकारी अस्पताल में चूहों के हमले के बाद दूसरी नवजात लड़की की भी मौत

**इंदौर (मध्यप्रदेश)/भाषा।** इंदौर के शासकीय महाराजा यशवंतराव चिकित्सालय (एमवायएच) में चूहों के हमले की शिकार दूसरी नवजात बच्ची ने बुधवार को दम तोड़ दिया जिसके बाद अस्पताल प्रशासन ने दावा किया कि उसकी जान सेप्टिसीमिया (रक्त विषाक्तता या रक्त संक्रमण) के कारण गई। एमवायएच के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी।

एमवायएच के उपाधीक्षक डॉ. जितेंद्र वर्मा ने संवाददाताओं को बताया कि हाल ही में चूहों के हमले के कारण एक नवजात बच्ची की इलाज के दौरान मौत हो गई। उन्होंने बताया कि महज 1.60 किलोग्राम वजन वाली यह बच्ची अलग-अलग जन्मजात विकृतियों से जूझ रही थी, जिनमें आंतों की विकृति भी शामिल थी। वर्मा ने बताया कि एमवायएच में सात दिन पहले इस बच्ची का ऑपरेशन किया गया था और 'सेप्टिसीमिया' के कारण उसकी हालत गंभीर थी। उन्होंने कहा कि बच्ची की मृत्यु 'सेप्टिसीमिया' के कारण हुई है।वर्मा ने कहा कि बच्ची के परिजनों की इच्छा के मुताबिक उसके शव का पोस्टमार्टम नहीं कराया गया है और शव उन्हें सौंप दिया गया है। उन्होंने कहा कि बच्ची को चूहों ने उसके बायें हाथ की दो अंगुलियों पर काटा था जिससे उसे 'हल्की खरोंच' आई थी। इससे पहले, एमवायएच में चूहों के हमले की शिकार एक अन्य बच्ची की मंगलवार को मौत हो गई थी। एमवायएच के अधिकारियों ने कहा कि यह बच्ची भी अलग-अलग जन्मजात विकृतियों से जूझ रही थी। एमवायएच प्रशासन का दावा है कि इस बच्ची की मौत 'निमोनिया के संक्रमण' से हुई। चूहों के हमले की शिकार दोनों बच्चियां नवजात बच्चों की सर्जरी से जुड़े विभाग की गहन चिकित्सा इकाई (आईसीयू) में भर्ती थीं। अधिकारियों ने बताया कि नवजात बच्चों के शरीर को चूहों के कुतरे जाने की घटना की शुरुआती जांच के आधार पर मंगलवार को एमवायएच के दो नर्सिंग अधिकारियों को निलंबित कर दिया गया था और अस्पताल की नर्सिंग अधीक्षक को पद से हटा दिया गया था। उन्होंने बताया कि एमवायएच की साफ-सफाई, सुरक्षा और कीट नियंत्रण के काम के ठेके से जुड़ी एक निजी फर्म को चेतावनी पत्र जारी करते हुए उस पर एक लाख रुपए का जुर्माना लगाया गया था। एमवायएच में नवजात बच्चों पर चूहों के हमले का यह कोई पहला मामला नहीं है। इससे पहले, वर्ष 2021 में इस सरकारी अस्पताल की नर्सरी (वह स्थान जहां नवजात बच्चों को देख-भाल के लिए रखा जाता है) में चूहों ने एक बच्चे की एड़ी कुतर दी थी।

## जियो ने 9वीं वर्षगांठ पर मुफ्त असीमित डेटा की पेशकश की, 50 करोड़ ग्राहकों का आंकड़ा किया पार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**नई दिल्ली/भाषा।** देश की प्रमुख दूरसंचार कंपनी रिलायंस जियो ने अपनी 9वीं वर्षगांठ के मौके पर सभी ग्राहकों के लिए फ्री असीमित डेटा पेशकश की शुरुआत की है। कंपनी ने बुधवार को बताया कि यह पेशकश मौजूदा प्लान के आधार पर अलग-अलग अवधि के लिए उपलब्ध होगी।

एक आधिकारिक बयान में कंपनी ने कहा कि 349 रुपए या उससे अधिक मूल्य वाले प्लान के ग्राहकों को पांच सितंबर से पांच अक्टूबर तक एक महीने के लिए असीमित डेटा मिलेगा। इसके साथ ही इस पेशकश में मनोरंजन और अन्य ऐप की सब्सक्रिप्शन भी शामिल होगी। वर्तमान में जियो केवल 349 रुपए या उससे अधिक कीमत वाले प्लान वाले 5जी स्मार्टफोन ग्राहकों को अनलिमिटेड 5जी डेटा प्रदान करती है। रिलायंस जियो इन्फोकॉम के चेयरमैन आकाश अंबानी ने इस अवसर पर कहा, जियो की 9वीं वर्षगांठ पर मुझे गर्व है कि 50 करोड़ से अधिक भारतीयों ने हम पर भरोसा जताया है। एक ही देश में इस पैमाने तक पहुंचना दर्शाता है कि जियो रोजमर्रा की जिंदगी का कितना गहरा हिस्सा बन चुकी है। मैं इस मील के पत्थर को संभव बनाने के लिए हर एक जियो उपयोगकर्ता का व्यक्तिगत रूप से धन्यवाद करना चाहता हूं। इसके अलावा, जियो ने उन ग्राहकों के लिए भी अच्छी खबर दी है जिन्होंने लगातार 12 महीने 349 रुपए के प्लान का रिचार्ज किया है। ऐसे ग्राहकों को 13वें महीने की सेवा मुफ्त दी जाएगी।

## सरदार सरोवर बांध का जलस्तर कुल क्षमता से 3.3 मीटर कम, जल भंडारण बढ़कर 89 प्रतिशत हुआ

**एकता नगर (गुजरात)/भाषा।** नर्मदा नदी से हाल के हफ्तों में आए जल प्रवाह के कारण गुजरात के सरदार सरोवर बांध में बुधवार को जलस्तर बढ़कर 135.38 मीटर तक पहुंच गया, जो कि इसकी पूर्ण क्षमता से 3.3 मीटर कम है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

अधिकारियों ने बताया कि नर्मदा जिले में 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' के पास स्थित बांध में जल संग्रहण इसकी कुल क्षमता का 89 प्रतिशत हो चुका है। बांध में वर्तमान में 1.18 लाख क्यूसेक (घन फीट प्रति सेकंड) पानी आ रहा है। इसका पूर्ण जलाशय स्तर 138.68 मीटर है।

एक सरकारी विज्ञप्ति में कहा गया है कि जलस्तर को नियंत्रित करने के लिए बांध के 30 में से 10 द्वारों से 95,111 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है जबकि नर्मदा नहर में 23,021 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है। विज्ञप्ति में कहा गया है कि अगले 24 घंटों में जलाशय का जल स्तर बढ़ जाएगा

## महिला एसपी पर 'अपमानजनक' टिप्पणी करने पर भाजपा विधायक के खिलाफ मामला दर्ज

**दावणगेरे।** भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के विधायक बी पी हरीश द्वारा भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) की महिला अधिकारी पर 'अपमानजनक' टिप्पणी करने के आरोप में बुधवार को प्राथमिकी दर्ज की गई। पुलिस ने यह जानकारी दी। हरीहर से विधायक ने प्रेस वार्ता में दावणगेरे पुलिस अधीक्षक (एसपी) उमा प्रशांत की तुलना गेट पर इंतजार कर रहे पालतू कुत्ते से की थी और उमा पर सरकारी बैठकों और कार्यक्रमों में उनका (विधायक) सम्मान न करने का आरोप लगाया था। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि एसपी की शिकायत के बाद विधायक के खिलाफ केटीजे नगर पुलिस थाने में भारतीय न्याय संहिता की धारा 132 (लोक सेवक को उसके कर्तव्य निर्वहन से रोकने के लिए हमला या आपराधिक बल का प्रयोग), 351 (2) (आपराधिक धमकी) और 79 (किसी महिला के शील का अपमान करने के इरादे से शब्द, इशारा या कृत्य) के तहत मामला दर्ज किया गया। प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए मंगलवार को भाजपा विधायक ने कहा, आप देखें कि एसपी कैसे व्यवहार करती हैं। एक विधायक के रूप में अगर मैं बैठक में जाता हूं, तो वह मुझे सही तरीके से स्वीकार नहीं करती, लेकिन शमनूर परिवार (वरिष्ठ कांग्रेस नेता शमनूर शिवशंकरप्पा, उनके मंत्री पुत्र एसएस मल्लिकार्जुन और बहू एवं सांसद प्रभा मल्लिकार्जुन) के लिए वह उनके घर के गेट पर एक घंटे इंतजार करती हैं, जैसे उनके घर का पालतू कुत्ता व्यवहार करता है।

## रेवंत रेड्डी ने कविता के आरोपों को खारिज किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**हैदराबाद/भाषा।** तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी ने बुधवार को भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) की नेता के. कविता द्वारा पार्टी विधायक टी. हरीश राव के साथ ''गुप्त समझौते'' के आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि उन्हें ''ऐसे गंदे लोगों के साथ शामिल होने की आवश्यकता नहीं है।

रेड्डी ने कहा कि उन्हें ''बीआरएस के पारिवारिक विवादों में नहीं घसीटा जाना चाहिए। उन्होंने अपने गृह जिले महबूबनगर में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बीआरएस (पार्टी का नाम लिए बिना) पर ''ऐसा माहौल बनाने का आरोप लगाया, जिसमें प्रतिद्वंद्वी पार्टियां टिक नहीं सकेंगी। रेवंत रेड्डी ने आरोप लगाया, विधायक बनने की आकांक्षा रखने वाले राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ झूठे मामले दर्ज किए गए।

बीआरएस के भीतर पारिवारिक विवादों पर परोक्ष रूप से टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि ये विवाद ''कथित रूप से अवैध रूप से अर्जित संपत्ति के बंटवारे को लेकर हैं। रेड्डी ने दावा किया, एक का कहना है कि हरीश राव और संतोष कुमार के पीछे रेवंत रेड्डी का हाथ है और दूसरे का कहना है कि के कविता के पीछे रेवंत रेड्डी हैं। तेलंगाना की जनता आपको पहले ही नकार चुकी है। क्या कोई आपके साथ खड़ा होगा? मैं चार करोड़ तेलंगानावासियों के पीछे हूं और उनके लिए काम कर रहा हूं। मेरे पास इतना समय नहीं है। उन्होंने कहा, जनता ने आप लोगों को पहले ही नकार दिया है। आप एक हज़ार रुपए के पुराने नोट की तरह हो। वो पार्टी वक़्त के साथ खत्म हो जाएगी।

मुख्यमंत्री ने स्थिति की तुलना अन्य राजनीतिक पार्टियों से करते हुए कहा, जनता पार्टी एक समय लोकप्रिय थी, लेकिन अब गायब हो गई है और तेलुगु देशम पार्टी (तेदेपा) एक शानदार पार्टी थी जिसने कई लोगों को अवसर दिए।

## मुलाकात

इंग्लैंड दौरे पर गए पूर्व मुख्यमंत्री एवं सांसद बसवराज बोम्मई ने लंदन में भारतीय मूल के हाउस ऑफ लॉर्ड्स के सदस्य कुलनजीत सिंह से मुलाकात की और द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा की।

## जम्मू में बीएसएफ के हेलीकॉप्टर ने बाढ़ग्रस्त गांव में फंसे 45 ग्रामीणों को बचाया

**जम्मू/भाषा।** सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने बुधवार को एक साहसिक अभियान के तहत अपने हेलीकॉप्टर की मदद से अखनूर सेक्टर के बाढ़ग्रस्त गांव में फंसे 45 नागरिकों को बाहर निकाला। इन नागरिकों में महिलाएं और बच्चे भी शामिल थे। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

अधिकारियों ने बताया कि पुलिस, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) और राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल (एसडीआरएफ) के दल चेनाब नदी के लगातार बढ़ते जलस्तर के कारण गर्खल क्षेत्र के फथू कोटली गांव की बाढ़ग्रस्त आबादी को वहां से नहीं हटा पाये, जिसके बाद बीएसएफ ने बचाव अभियान शुरू किया। उन्होंने बताया कि वरिष्ठ पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी आज सुबह सूचना मिलने पर घटनास्थल पर पहुंचे कि बाढ़ का पानी गांव में घुस गया है और 45 लोग फंस गए हैं।

## जमानत शर्तों का उल्लंघन करने वाले विदेशियों के लिए नीति बनाने पर विचार करे केंद्र : उच्चतम न्यायालय

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com



**नई दिल्ली/भाषा।** धोखाधड़ी के एक मामले में आरोपी एक विदेशी नागरिक के जमानत पर रिहा होने के बाद फरार हो जाने की जानकारी मिलने के बाद, उच्चतम न्यायालय ने यह सुनिश्चित करने के लिए एक ठोस नीति की जरूरत रेखांकित की है कि देश में अपराध करने वाले विदेशी नागरिक 'सजा से बच' न सके। शीर्ष अदालत ने पिछले साल चार दिसंबर को झारखंड उच्च न्यायालय के मई 2022 के आदेश को रद्द कर दिया था, जिसमें आरोपी एलेक्स डेविड को जमानत दी गई थी।

जब मामला 26 अगस्त को न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ के समक्ष सुनवाई के लिए आया तो पीठ ने कहा कि देश में आपराधिक कार्यवाही का सामना करने के लिए एक नाइजीरियाई नागरिक के प्रत्यर्पण पर नाइजीरिया और भारत के बीच कोई द्विपक्षीय संधि नहीं है। पीठ ने कहा, विशेष अनुमति याचिका का निस्तारण किया जाता है, जिसमें जमानत रद्द करने के आदेश की पुष्टि की जाती है, लेकिन केंद्र सरकार को उचित नीति बनाने या आवश्यक और उचित समझी जाने वाली आगे की कार्रवाई शुरू करने का अधिकार दिया जाता है, ताकि विदेशी नागरिक भारत में अपराध करने के बाद न्याय की प्रक्रिया से भाग न सकें। डेविड पर धोखाधड़ी और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम सहित कई अपराधों के लिए मामला दर्ज किया गया था।

उच्च न्यायालय द्वारा जमानत दिए जाने के बाद, आदेश को शीर्ष अदालत में चुनौती दी गई। हालांकि उच्चतम न्यायालय को बताया गया कि डेविड जमानत पर बाहर आने के बाद फरार हो गया है। इसके बाद उच्चतम न्यायालय ने केंद्र से ऐसे मामलों में प्रक्रिया और दिशा-निर्देशों के बारे में सवाल किया। केंद्र ने एक हलफनामा दायर किया, जिसमें विदेश में जांच के लिए व्यापक दिशा-निर्देशों की मौजूदगी, अनुरोध पत्र जारी करने, परस्पर कानूनी सहायता अनुरोध और आपराधिक मामलों के संबंध में सम्मन, नोटिस और न्यायिक दस्तावेजों की तामील का संकेत दिया गया। पिछले साल चार दिसंबर को, उच्चतम न्यायालय ने उच्च न्यायालय के आदेश को रद्द कर दिया था और केंद्र को उनके दिशानिर्देशों में सुझाए गए उचित उपाय करने का निर्देश दिया था।

जब 26 अगस्त को मामला सुनवाई के लिए आया, तो केंद्र की ओर से पेश वकील ने पीठ के समक्ष विदेश मंत्रालय के सलाहकार (कानूनी) द्वारा सॉलिसिटर जनरल को संबोधित एक पत्र प्रस्तुत किया। पीठ ने पत्र की विषयवस्तु दर्ज की, जिसमें लिखा था, हालांकि, यह ध्यान देने योग्य है कि भारत और नाइजीरिया के बीच द्विपक्षीय प्रत्यर्पण संधि के अभाव में, नाइजीरियाई प्राधिकारियों द्वारा अपने ही नागरिक को प्रत्यर्पित करने की संभावना नहीं है।

पत्र में कहा गया है कि प्रत्यर्पण अनुरोध नाइजीरिया के अबुजा स्थित भारतीय उच्चायोग को भेजा गया था, ताकि उसे ''आपसी सहयोग के भरोसे'' के आधार पर संबंधित नाइजीरियाई अधिकारियों को आगे भेजा जा सके।

## निलंबित बीआरएस नेता कविता ने पार्टी, एमएलसी पद छोड़ने की घोषणा की

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**हैदराबाद/भाषा।** के. चंद्रशेखर राव (केसीआर) के नेतृत्व वाली भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) से निलंबन के एक दिन बाद वरिष्ठ नेता के. कविता ने बुधवार को पार्टी से इस्तीफा देने की घोषणा की और अपने चचेरे भाई एवं पूर्व मंत्री टी. हरीश राव पर निशाना साधा।

पार्टी संस्थापक और तेलंगाना के पूर्व मुख्यमंत्री केसीआर की बेटी कविता ने विधान परिषद की सदस्यता से भी इस्तीफा देने की घोषणा की और संकेत दिया कि उनके पिता केसीआर पर उनके खिलाफ कार्रवाई करने का 'दबाव' था। उन्होंने हरीश राव पर केसीआर परिवार के खिलाफ साजिश रचने का आरोप लगाया।

अपने समर्थकों के साथ यहां संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए 47 वर्षीय पूर्व सांसद ने हरीश राव पर मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी के साथ मौन सहमति रखने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा, मैंने कभी किसी पद की आकांक्षा नहीं रखी। मैं (विधान परिषद) अध्यक्ष को अपना त्यागपत्र भेज रही हूं... मैं केसीआर को बीआरएस की प्राथमिक सदस्यता से भी इस्तीफा भेज रही हूं। कविता ने कहा कि उनके भाई और बीआरएस के

कार्यकारी अध्यक्ष के. टी. रामाराव को हरीश राव की कथित साजिशों से ''सावधान'' रहना चाहिए। उन्होंने दावा किया कि जब उनके खिलाफ ''दुर्भावनापूर्ण अभियान'' चलाया गया, तो उनके भाई ने उनका साथ नहीं दिया।

कविता ने आरोप लगाया कि 2018 के विधानसभा चुनाव में हरीश राव ने पार्टी द्वारा किए गए वित्तपोषण के अलावा 20-25 विधायकों को अतिरिक्त पैसा दिया था। उन्होंने कहा, हरीश राव को इतना पैसा कैसे मिला? 100 प्रतिशत, यह पैसा कालेश्वरम परियोजना में हुए भ्रष्टाचार से आया था। उनका विचार था कि अगर नतीजे स्पष्ट नहीं हुए तो उन्हें अपने विधायकों को बुलाना चाहिए। लोकप्रिय फिल्म 'बाहुबली' का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि हरीश राव खुद को 'कटप्पा' जैसा बताते हैं और केसीआर के प्रति वफादारी जताते हैं लेकिन फिर वह विधायकों को अलग से वित्तपोषण क्यों दे रहे हैं? उन्होंने आरोप लगाया कि हरीश राव ने 2009 के विधानसभा चुनाव में सिरसिला निर्वाचन क्षेत्र में के. टी. रामा राव को हराने के लिए पैसे भेजे थे।

कविता ने कहा, (इरादे) केसीआर, केटीआर को हराने और मेरे निजामाबाद संसदीय क्षेत्र (जहां से वह लोकसभा चुनाव हार गई थीं) के सभी विधायकों को अपने नियंत्रण में करने का है। (इरादा) केसीआर परिवार में सभी को हराने और सभी को बांटने का है। केसीआर और केटीआर से मेरा सवाल है कि क्या पार्टी अच्छी स्थिति में होगी यदि आपके साथ ऐसे लोग हों? लेकिन मुझे बाहर भेजो जो सच बोलता है।

# कांग्रेस सांसद शशिकांत सेंथिल ने अनिश्चितकालीन अनशन समाप्त किया

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**चेन्नई।** कांग्रेस नेता शशिकांत सेंथिल ने वरिष्ठ नेताओं की अपील पर चार दिन बाद अपना अनिश्चितकालीन अनशन अस्थायी रूप से समाप्त कर दिया है। तिरुवल्लूर के सांसद ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी सहित कई नेताओं की अपील के बाद अनशन खत्म करने का फैसला किया। इन नेताओं ने उनके स्वास्थ्य को चिंता का विषय बताया था। 'विपक्षी इंडिया' गठबंधन और अन्य दलों के नेताओं ने भी उनसे अनशन समाप्त करने का आग्रह किया।

सेंथिल ने 29 अगस्त को अपना अनशन शुरू किया था और मांग की थी कि 'केंद्र समग्र शिक्षा अभियान' योजना के तहत धनराशि जारी करे। उन्होंने दावा किया कि यह धनराशि दो साल से अधिक समय से लंबित है। विरोध प्रदर्शन के दूसरे दिन सेंथिल की तबीयत बिगड़ने पर उन्हें तिरुवल्लूर सरकारी अस्पताल से चेन्नई के राजीव गांधी सरकारी जनरल अस्पताल में रेफर कर दिया गया। उन्होंने कहा, ''मैंने अपने नेताओं की अपील को स्वीकार करते हुए अस्थायी रूप से अपनी भूख हड़ताल वापस लेने का निर्णय लिया है, जो मैंने गरीब और साधारण पृष्ठभूमि के छात्रों के शैक्षिक अधिकारों की रक्षा के लिए की थी।'' अनशन समाप्त करने के उनके निर्णय के बाद, तमिलनाडु कांग्रेस समिति के अध्यक्ष सेल्वापेरुंथगई ने पार्टी के वरिष्ठ सहयोगियों की उपस्थिति में अस्पताल में उन्हें जूस पिलाकर आधिकारिक रूप से अनशन समाप्त कराया।

कांग्रेस नेता ने एक प्रेस विज्ञप्ति में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की केंद्र सरकार पर तमिलनाडु के छात्रों के शैक्षिक अधिकारों और ''सपनों को नष्ट'' करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि उनका अनशन ''अन्याय को उजागर'' करने के लिए है। उन्होंने कहा कि उनका संघर्ष सार्वजनिक चर्चा का विषय बन गया है और इसे व्यापक समर्थन मिला है। सेंथिल ने कहा, ''यह बेहद निराशाजनक है कि केंद्र सरकार तमिलनाडु के लोगों की जायज मांगों को सुनने से इनकार कर रही है।'' उन्होंने तमिलनाडु के लोगों से अपने अधिकारों की रक्षा के लिए भाजपा का विरोध करने और उससे ''लड़ने'' का आह्वान किया।

## अमेरिकी शुल्क : द्रमुक का सवाल

# तमिलनाडु के पश्चिमी क्षेत्र के लिए क्या करेंगे प्रधानमंत्री मोदी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**चेन्नई।** तमिलनाडु के तिरुपुर सहित पश्चिमी क्षेत्र में कपड़ा उद्योग पर अमेरिकी शुल्क के प्रभाव को रेखांकित करते हुए राज्य में सत्तारूढ़ द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम (द्रमुक) ने बुधवार को सवाल किया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार पश्चिमी क्षेत्र में उद्योगों की रक्षा के लिए क्या कदम उठाने जा रही है। अमेरिका को भारत की ओर से किये जाने वाले वस्त्र सहित विभिन्न उत्पादों के निर्यात को सूचीबद्ध करते हुए द्रमुक के आधिकारिक 'मुखपत्र मुरासोली' में कहा गया है कि वस्त्र और संबंधित निर्यात में कोयंबटूर और तिरुपुर सहित तमिलनाडु के पश्चिमी क्षेत्र की हिस्सेदारी अधिक है।

तमिल दैनिक में तीन सितंबर, 2025 के संपादकीय में, तिरुपुर से अमेरिका को लगभग 12,000 करोड़ रुपये के वार्षिक वस्त्र निर्यात के आंकड़े का हवाला दिया गया है और कहा गया है कि अमेरिकी शुल्क के कारण, अकेले तिरुपुर क्षेत्र में, पांच लाख श्रमिकों की नौकरियां जा सकती हैं और 3,000 औद्योगिक इकाइयां बंद हो सकती हैं। इसमें कहा गया है कि ''अमेरिकी शुल्क के मद्देनजर भाजपा-नीत केंद्र सरकार तिरुपुर और कोयम्बटूर (के हितों) की रक्षा के लिए क्या करने जा रही है?''

इसमें सवाल किया गया है, ''प्रधानमंत्री (नरेन्द्र) मोदी पश्चिमी क्षेत्र की सुरक्षा के लिए क्या करने जा रहे हैं? भाजपा एक ऐसी पार्टी है, जो हमेशा पश्चिमी क्षेत्र को लक्ष्य बनाकर काम करती है। भाजपा पश्चिमी क्षेत्र के लोगों के वोट को लक्षित करती है; वह पश्चिमी क्षेत्र के उद्योगों की सुरक्षा के लिए क्या करने जा रही है?'' संपादकीय में आरोप लगाया गया है कि प्रधानमंत्री मोदी उद्योगपति अदाणी और अंबानी के लिए सब कुछ करते हैं। इसमें कहा गया है कि एक सवाल सामने आया है कि मोदी ने तिरुपुर और कोयम्बटूर के कपड़ा और संबद्ध उद्योगों के संरक्षण के लिए क्या किया है।

मुरासोली में तिरुपुर होजरी मजदूर संघों की उस मांग का भी उल्लेख किया गया है, जिसमें उद्योग और श्रमिकों की सुरक्षा के लिए युद्धस्तर पर कदम उठाने की मांग की गई थी। इसमें कहा गया है कि तिरुपुर के निर्यातकों ने अब अमेरिकी खेप पर छूट देना शुरू कर दिया है और कुछ निर्यातक जो केवल अमेरिकी बाजारों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, उन्होंने उत्पादन बंद कर दिया है और मुख्यमंत्री एम. के. स्टालिन ने पहले ही ऐसे परिणामों की चेतावनी दी थी। इसमें आरोप लगाया गया है कि केवल गुजरात स्थित आभूषण निर्यातकों के लिए शुल्क वापसी बढ़ा दी गई है और तमिलनाडु स्थित उद्योगों पर विचार नहीं किया गया है। इसमें कहा गया है कि अमेरिकी शुल्क से प्रभावित तिरुपुर उद्योगों की सुरक्षा के लिए, प्रधानमंत्री मोदी को तुरंत राहत प्रदान करने के लिए एक विशेष कोष पैकेज की घोषणा करनी चाहिए। इसमें सवाल किया गया है, क्या प्रधानमंत्री ऐसा करेंगे? गौरतलब है कि राज्य का पश्चिमी क्षेत्र दशकों से अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कषगम (अन्नाद्रमुक) का गढ़ रहा है और भाजपा का भी इसी पश्चिमी क्षेत्र में कई प्रभाव क्षेत्र हैं। कुछ दिन पहले, स्टालिन ने कहा था कि तमिलनाडु का 31 प्रतिशत निर्यात अमेरिका को जाता है, जिससे राज्य राष्ट्रीय औसत से अधिक असुरक्षित हो गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा था कि राज्य सरकार ने सब्सिडी, योजनाएं और सहायता शुरू की है, लेकिन इसकी क्षमता सीमित है और केंद्र सरकार को राहत उपायों, जीएसटी सुधार, ऋण सहायता और नये एफटीए के साथ आगे आना चाहिए। स्टालिन ने 28 अगस्त को कहा था कि 50 प्रतिशत अमेरिकी शुल्क ने तमिलनाडु के निर्यात, विशेष रूप से तिरुपुर के कपड़ा केंद्र को बुरी तरह प्रभावित किया है।

उन्होंने कहा था कि इससे लगभग 3,000 करोड़ रुपये का व्यापार प्रभावित हुआ है और हजारों नौकरियां खतरे में पड़ गई हैं। उन्होंने केंद्र से उद्योगों और श्रमिकों की सुरक्षा के लिए तत्काल राहत और संरचनात्मक सुधार लागू करने का आग्रह किया था।

# टीटीडी द्वारा श्रीवारी सेवा का नया मॉड्यूल शुरू होगा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**तिरुमला।** तिरुपति तिरुमला देवस्थान ट्रस्ट (टीटीडी) के चेयरमैन बी.आर. नायडू ने श्रीवारी सेवा में महत्वपूर्ण सुधार की घोषणा की। उन्होंने टीटीडी वेबसाइट पर श्रीवारी सेवा से संबंधित एक नया मॉड्यूल शुरू किया। ट्रेनर एवं ग्रुप सुपरवाइज़र मॉड्यूल के माध्यम से अब वालंटियर ऑनलाइन पंजीकरण कर प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। चेयरमैन ने बताया कि ये सुधार मुख्यमंत्री नारा चंद्रबाबू नायडू के निर्देशों पर लागू किए जा रहे हैं।

श्रीवारी सेवा योजना वर्ष 2000 में कांची कामकोटी पीठाधिपति श्रीश्रीश्री जयेन्द्र सरस्वती द्वारा तिरुमला में प्रारंभ की गई थी, जो अब 25 वर्ष पूरे करने जा रही है। इस अवधि में लगभग 17 लाख सेवक तिरुमला और तिरुपति में भक्तों की निस्वार्थ सेवा में शामिल हुए। चेयरमैन ने बताया कि वर्तमान में प्रतिदिन औसतन 3,500 सेवक सेवा कर रहे हैं। उन्हें दर्शन, लड्डू प्रसाद, आवास और भोजन की सुविधाएँ प्रदान की जा रही हैं। आईआईटी अहमदाबाद और राज्य सरकार के योजना विभाग के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम होगा। श्रीवारी सेवा के लिए केवल हिंदू ही आवेदन कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क किया जा सकता है। प्रशिक्षण के दौरान श्रीवारी वैभव, तिरुमला का महत्व, सेवा का दर्शन आदि विषयों पर जानकारी दी जाएगी। चेयरमैन ने कहा, मुख्यमंत्री के निर्देशों के अनुसार, टीटीडी के अस्पतालों जैसे एसवीआईएमएस, बीआईआरआरडी, आयुर्वेद, बाल चिकित्सालय और अश्विनी अस्पताल में श्रीवारी सेवा के माध्यम से रोगियों को निःशुल्क सेवाएँ प्रदान करने की योजना बनाई जा रही है।

इसी प्रकार, प्रवासी भारतीय (एनआरआई) विशेषज्ञों और विभिन्न व्यवसायों के पेशेवरों को भी सेवा में भाग लेने का अवसर दिया जाएगा।

# चेन्नई की कंपनी ने टीटीडी को 1.3 करोड़ रुपये की इलेक्ट्रिक बस दान की

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**चेन्नई/तिरुपति।** चेन्नई स्थित एक ऑटोमोबाइल कंपनी मेसर्स स्विचमोबिलिटी ऑटोमोटिव लिमिटेड ने बुधवार को यहां श्री वेंकटेश्वर मंदिर के संरक्षक तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) को 1.3 करोड़ रुपये की एक इलेक्ट्रिक बस दान की। चेन्नई स्थित कंपनी के गणेश मणि और वेंकटरमन ने श्रीवारी मंदिर के सामने अतिरिक्त कार्यकारी अधिकारी वेंकैया चौधरी को बस की चाबी सौंपी। टीटीडी ने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा, चेन्नई स्थित ऑटोमोबाइल कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) गणेश मणि और मुख्य वाणिज्यिक अधिकारी वेंकटरमन ने बुधवार को टीटीडी को 1.33 करोड़ रुपये की एक इलेक्ट्रिक बस दान की। वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पुजारियों की उपस्थिति में दान स्वीकार किया गया।

# यूडीएफ ने अयप्पा संगमम से पहले परंपरा के 'उल्लंघन' पर वाम सरकार से जवाब मांगा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**तिरुवनंतपुरम/भाषा।** केरल विधानसभा में विपक्ष के नेता वी डी सतीशन ने बुधवार को यहां कहा कि कांग्रेस नीत यूडीएफ सबरीमला में वैश्विक अयप्पा संगमम में भाग लेने पर तभी निर्णय लेगा, जब वाम सरकार प्रमुख सवालों का जवाब देगी, जिसमें सात साल पहले सदियों पुरानी परंपरा के ''उल्लंघन'' में उसकी भूमिका भी शामिल है। वैश्विक अयप्पा संगमम का आयोजन त्रावणकोर देवस्वोम बोर्ड द्वारा उसकी 75वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में केरल सरकार के सहयोग से 20 सितंबर को पम्पा में किया जा रहा है।

सतीशन ने मंगलवार शाम को संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) के नेताओं की एक ऑनलाइन बैठक में लिये गए निर्णयों की जानकारी देने के लिए आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा, ''हम इस कार्यक्रम का बहिष्कार नहीं कर रहे हैं'' लेकिन उन्होंने मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के नेतृत्व वाली वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) सरकार पर इस प्राचीन मंदिर में लंबे समय से चली आ रही परंपराओं को तोड़ने वाली कार्रवाइयों का समर्थन करके सबरीमाला में ''अशांति पैदा करने'' का आरोप लगाया। सतीशन ने उच्चतम न्यायालय के एक आदेश के बाद 2018 में सबरीमला में रजस्वला आयु वर्ग की महिलाओं के प्रवेश का जिक्र करते हुए कहा, ''यह एलडीएफ सरकार थी जिसने उच्चतम न्यायालय में यूडीएफ सरकार द्वारा प्रस्तुत हलफनामे को बदल दिया था, जिससे यह परंपरा के उल्लंघन का समर्थन करने वाला बन गया।''

उन्होंने यह भी जानना चाहा कि मंदिर में परंपरा के उल्लंघन की अनुमति देने के वाम सरकार के फैसले के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करने वाले श्रद्धालुओं के खिलाफ दर्ज मामले वापस क्यों नहीं लिए गए। उन्होंने आरोप लगाया कि अनुबंध के तहत मंदिर को दी जाने वाली वार्षिक राशि पिछले तीन वर्षों से लंबित है। उच्चतम न्यायालय ने 2018 में सबरीमला मंदिर में रजस्वला आयु वर्ग वाली महिलाओं के प्रवेश पर लगे प्रतिबंध को ''असंवैधानिक'' करार देते हुए उसे हटा दिया था। इस फैसले के बाद व्यापक विरोध प्रदर्शन हुए और यह अब भी एक बड़ी पीठ के समक्ष विचाराधीन है। सबरीमला में भगवान अयप्पा मंदिर में रजस्वला आयु वर्ग की दो महिलाओं के प्रवेश की अनुमति देने के लिए माकपा और एलडीएफ सरकार को अयप्पा श्रद्धालुओं के एक वर्ग, कांग्रेस नीत गठबंधन और संघ परिवार की ओर से कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ा था।

# जक्कुर हवाई अड्डे के विस्तार और भूमि उपयोग पर विचार : सिद्दरामय्या

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। मुख्यमंत्री सिद्दरामय्या ने कहा कि जक्कुर हवाई अड्डे के रनवे के विस्तार पर विचार किया जा रहा है और सरकार इस भूमि का सार्वजनिक उपयोग के लिए पूर्ण उपयोग सुनिश्चित करने के लिए क्या कर सकती है। उन्होंने बुधवार को जक्कुर सरकारी उड़ान प्रशिक्षण विद्यालय और हवाई अड्डे के विकास पर एक बैठक के बाद मीडिया से बात की।

इस संबंध में सरकार के समक्ष दो परियोजनाएँ हैं। यहाँ बन रहे फ्लाईओवर से कुछ असुविधा हो रही है। हमें पहले इस फ्लाईओवर के निर्माण की जानकारी नहीं थी। यहाँ 200 एकड़ से ज़्यादा ज़मीन है और जक्कुर उड़ान प्रशिक्षण विद्यालय चल रहा है।

सरकार ने इस पर विचार किया है और रनवे विस्तार के आस-पास की ज़मीन का अधिग्रहण करना है। इसके लिए तीन एकड़ से ज़्यादा ज़मीन की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि मालिक का कहना है कि ज़मीन नहीं दी जाएगी और क़ीमत भी ज़्यादा है। उपलब्ध ज़मीन का उपयोग कैसे किया जाए, इस पर भी विचार किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि विमानन प्रशिक्षण स्कूल चलाने के लिए अदालत का आदेश है और सरकार इस पर विचार कर रही है कि वह और क्या कर सकती है।

# चेन्नई एयरपोर्ट पर एनसीबी ने 60 करोड़ रुपए की 5.618 किग्रा कोकीन जब्त की

दो गिरफ्तार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**चेन्नई।** नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) ने चेन्नई अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट पर 60 करोड़ रुपए कीमत की 5.618 किलोग्राम कोकीन जब्त कर बड़ी सफलता हासिल की है। यह कार्रवाई प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'नशा मुक्त भारत' दृष्टिकोण और केंद्रीय गृह मंत्री के निर्देशों के तहत की गई।

एक सितंबर को एनसीबी चेन्नई और एयर इंटेलिजेंस यूनिट, चेन्नई कस्टम्स ने संयुक्त अभियान चलाकर इथियोपियन एयरलाइंस की उड़ान से अदीस अबाबा से चेन्नई आए दो भारतीय नागरिकों को गिरफ्तार किया। इनमें एक उत्तराखंड के बागेश्वर का 25 वर्षीय बीए स्नातक और दूसरा हिमाचल प्रदेश के चंबा का 26 वर्षीय आईटीआई पास है। जब्त की गई कोकीन उच्च गुणवत्ता की है, जिसकी कीमत खुदरा बाजार में 8,000 से 12,000 रुपये प्रति ग्राम है। जांच में पता चला कि ये व्यक्ति पिछले कुछ वर्षों से अदीस अबाबा से भारत के विभिन्न एयरपोर्ट तक कोकीन तस्करी में शामिल थे। यह एक बड़े अंतरराष्ट्रीय ड्रग सिंडिकेट का हिस्सा है, जिसका संचालन दिल्ली से एक नाइजीरियाई नागरिक करता है। एनसीबी ने इस नाइजीरियाई नागरिक को दिल्ली से हिरासत में लिया, जो 2023 से मेडिकल वीजा पर भारत में था, लेकिन 2024 में वीजा समाप्त होने के बाद भी रह रहा था। इसके अलावा, चंबा के एक 26 वर्षीय स्नातक को भी मुंबई से हिरासत में लिया गया।

प्रारंभिक जांच से पता चला कि नाइजीरियाई नागरिक चेन्नई के ग्लेनीगल्स हेल्थसिटी में इलाज के लिए आया था, लेकिन ड्रग तस्करी में शामिल हो गया। वह दिल्ली से कोकीन वितरण नेटवर्क चला रहा था। एनसीबी अब सिंडिकेट के अन्य सदस्यों की पहचान, वित्तीय लेन-देन और तस्करी के रास्तों की जांच कर रही है। एनसीबी ने अवैध ड्रग तस्करी में विदेशी नागरिकों, खासकर अफ्रीकी मूल के लोगों की संलिप्तता पर चिंता जताई और वीजा अवधि से अधिक समय तक रहने वालों के खिलाफ कार्रवाई के लिए राज्यों के साथ डेटा साझा किया है। यह जब्ती 'नशा मुक्त भारत' के लक्ष्य को मजबूत करती है। एनसीबी ने नागरिकों से मादक पदार्थों की तस्करी की गोपनीय जानकारी टोल-फ्री नंबर 1933 पर साझा करने की अपील की, जिसमें सूचना देने वाले की पहचान गुप्त रखी जाएगी।

# केरल सरकार ने भारत में पहला वरिष्ठ नागरिक आयोग बनाया

**तिरुवनंतपुरम/भाषा।** केरल सरकार ने बुजुर्गों के अधिकारों की रक्षा और उपेक्षा एवं दुर्व्यवहार जैसे मुद्दों के समाधान के लिए देश का पहला वरिष्ठ नागरिक आयोग बनाया है। राज्य की उच्च शिक्षा एवं सामाजिक न्याय मंत्री आर. बिंदु ने बुधवार को एक फेसबुक पोस्ट में कहा कि के. सोमप्रसाद को तिरुवनंतपुरम स्थित केरल राज्य वरिष्ठ नागरिक आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। अमरविला रामकृष्णन, ई एम राधा, के एन के नंबूथिरी और लोप्स मैथ्यू को आयोग के सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया है।

मंत्री ने कहा कि आयोग बुजुर्गों द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाइयों, जिनमें उपेक्षा, शोषण आदि शामिल है, के बारे में बढ़ती चिंताओं का समाधान करेगा। केरल राज्य वरिष्ठ नागरिक आयोग का गठन केरल वरिष्ठ नागरिक आयोग अधिनियम, 2025 के तहत किया, जिसे मार्च में राज्य विधानमंडल द्वारा पारित किया गया था। आयोग बुजुर्गों के कल्याण और संरक्षण के लिए काम करेगा और उनके पुनर्वास के लिए दिशानिर्देश और सहायता प्रदान करेगा। सचिवालय दरबार हॉल में आयोजित एक समारोह में मंत्री ने सदस्यों को सम्मानित किया।

# 'सरकार को बाढ़ से हुए 'नुकसान' के बाद किसानों का कर्ज माफ करना चाहिए'

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

बेंगलूरु। जनता दल(एस) के नेता निखिल कुमारस्वामी ने कर्नाटक की कांग्रेस सरकार से राज्य में भारी बारिश और बाढ़ के कारण फसलों को हुई व्यापक क्षति के बाद किसानों के ऋण माफ करने का बुधवार को आग्रह किया। उन्होंने आरोप लगाया कि किसी भी मंत्री ने प्रभावित क्षेत्रों का दौरा नहीं किया है। निखिल ने कहा कि नुकसान का आकलन करने और किसानों की चिंताओं को दूर करने को लेकर सरकार को एक रिपोर्ट सौंपने के उद्देश्य से जद (एस) की एक टीम अगले सप्ताह विभिन्न क्षेत्रों का दौरा करेगी।उन्होंने कहा, सत्तर प्रतिशत नुकसान उत्तरी कर्नाटक में हुआ है, जहां कपास और दालें उगाई जाती हैं... सरकार को जिम्मेदारी दिखाते हुए किसानों का कर्ज माफ करना चाहिए। निखिल ने, किसानों ने भारी कर्ज लिया हुआ है और उनके कंधों पर बोझ है। सरकार को हस्तक्षेप करना चाहिए। हम इस संबंध में सरकार पर दबाव डालेंगे। दौरे के बाद, हम स्थिति स्पष्ट कर देंगे।

# जीबीए क्षेत्र में नए निगम कार्यालयों के निर्माण का भूमिपूजन समारोह 1 नवंबर को : डीके शिवकुमार

5 निगमों को 300 करोड़ रु. आवंटित

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

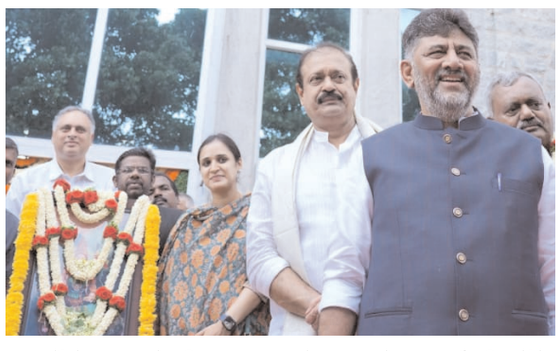

**बेंगलूरु/दक्षिण भारत।** ग्रेटर बेंगलूरु अथॉरिटी कार्यालय की नेमप्लेट का अनावरण करने के बाद, उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने बुधवार को मीडिया को संबोधित करते हुए कहा, पाँच निगमों के नए कार्यालयों का भूमिपूजन समारोह 1 नवंबर को होगा।

सभी निगमों के सीमावर्ती क्षेत्रों में बॉर्डर टावर बनाए जाएँगे। ग्रेटर बेंगलूरु अथॉरिटी कार्यालय की नेमप्लेट का अनावरण करने के बाद, शिवकुमार ने बुधवार को मीडिया को कहा, प्रत्येक निगम क्षेत्र में सड़कों और प्रशासनिक पहलुओं के सुधार के लिए 500 इंजीनियरों को मंजूरी दी गई है। पहले 198 वार्ड थे। अब 500 वार्ड बनाने की अनुमति के लिए सरकार को प्रस्ताव भेजा गया है। निगमों के प्रशासनिक खर्च, वेतन और पेंशन के लिए बीबीएमपी से लगभग 300 करोड़ रुपये जारी किए जाएँगे। उन्होंने कहा, नागरिक और वास्तुकार सुझाव दे सकते हैं कि नगर निगम कार्यालयों की डिज़ाइन कैसी होनी चाहिए। वे डिज़ाइन भी प्रदान कर सकते हैं। सर्वश्रेष्ठ तीन या पाँच डिज़ाइनों का चयन किया जाएगा। इसके लिए 5 लाख रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा। प्रत्येक नगर निगम में दो आईएएस अधिकारी, एक केएएस, दो मुख्य अभियंता और आवश्यक कार्यालय कर्मचारी काम करेंगे। नगर निगम बेंगलूरु शहर में सुशासन सुनिश्चित करने और सरकार को लोगों के द्वार तक पहुँचाने के लिए निर्णय लेकर काम करेंगे। नगर निगम अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाली सड़कों और सीवरों सहित अन्य चीज़ों की पहचान करेंगे।

# अंजनाद्री पहाड़ी का विकास में पर्यटन, पौराणिक एवं आध्यात्मिक महत्व झलके : मुख्यमंत्री

**बेंगलूरु।** बुधवार को मुख्यमंत्री सिद्दरामय्या की अध्यक्षता में बुधवार को कावेरी निवास पर अंजनाद्री क्षेत्र के विकास के संबंध में आयोजित बैठक हुई। बैठक में कई निर्णल लिए गए। बुजुर्गों को पहाड़ी की चोटी तक पहुँचने के लिए आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करना और इसके लिए परिक्रमा मार्ग के निर्माण आदि पर चर्चा की गई।

हनुमान जयंती के दौरान लाखों लोग इस पहाड़ी पर आते हैं। उत्तर भारत से भी बड़ी संख्या में पर्यटक इस क्षेत्र में आते हैं। तीर्थयात्रियों के ठहरने के लिए शयनगृह की सुविधा, वरिष्ठ श्रद्धालुओं के लिए पहाड़ी पर चढ़ने हेतु सीढ़ियाँ, एक सामुदायिक भवन का निर्माण और अन्य पर्यटन सुविधाओं का विकास क्षेत्र में किया जाना चाहिए। उक्त क्षेत्र के लिए चरण-1 और चरण-2 में 200 करोड़ रुपये के कार्य स्वीकृत किए गए हैं, और विभाग द्वारा अब तक उक्त कार्यों के लिए 10 करोड़ रुपये जारी किए जा चुके हैं, तथा शेष अनुदान जारी करने के लिए वित्त विभाग द्वारा अतिरिक्त अनुदान प्रदान किया जाना है। स्वीकृत कार्यों के लिए सरकारी भूमि की कमी के कारण, अनुदान के अभाव में आवंटित 77.28 एकड़ निजी भूमि का अधिग्रहण संभव नहीं हो पाया है। अतः वित्त विभाग को अतिरिक्त भूमि सहित कुल 101.30 एकड़ निजी भूमि के अधिग्रहण हेतु आवश्यक धनराशि उपलब्ध करानी चाहिए। चूँकि अधिकांश स्वीकृत कार्य वन विभाग के अधिकार क्षेत्र में आने वाली भूमि पर किए जाने हैं, इसलिए यह सुझाव दिया गया कि वन विभाग इन सभी कार्यों के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) जारी करे और आवश्यक कदम उठाए।

## बहरोड़ में मांढण आईटीआई के लिए भूमि का आवंटन तथा बर्डोद आईटीआई के लिए भूमि का चिह्निकरण पूरा : राठौड़

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान के कौशल नियोजन एवं उद्यमिता मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने बुधवार को विधानसभा में कहा कि विधानसभा क्षेत्र बहरोड़ में बर्डोद एवं मांढण औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान खोलने के लिए बजट घोषणा के तहत मांढण आईटीआई की स्थापना के लिए भूमि आवंटित कर दी गई है तथा बर्डोद आईटीआई के लिए भूमि का चिह्निकरण कर प्रस्ताव भेजे जा चुके हैं। कर्नल राठौड़ प्रश्नकाल में विधायक डा जसवंत सिंह यादव के इस सम्बन्ध में पूछे गए पूरक प्रश्नों का जवाब दे रहे थे।

उन्होंने कहा कि गत सरकार के समय बहरोड़ में केवल एक आईटीआई खोलने के लिए बजट वर्ष 2022-23 में घोषणा की गयी थी, लेकिन भूमि का चिह्निकरण नहीं किया गया। वर्तमान सरकार ने बहुत कम समय में ही चिह्निकरण कर आईटीआई खोलने की कार्यवाही शुरू कर दी है। उन्होंने सदन को आश्वस्त किया कि जल्द ही बर्डोद में भी भूमि आवंटन का कार्य पूरा हो जायेगा। डा यादव ने पूछा कि यह काम कब तक कर दिया जायेगा।

इस पर राठौड़ ने कहा कि सरकार आते ही मांढण आईआईटी के लिए डेढ़ वर्ष कई स्थान देखे और छह जगह जमीन को अस्वीकार करते हुए सातवीं जगह उचित जगह का चयन किया गया और बर्डोद के लिए भी शीघ्र आवंटन का काम किया जायेगा।

इससे पहले विधायक डॉ. जसवंत सिंह यादव के मूल प्रश्न के लिखित जवाब में कौशल नियोजन एवं उद्यमिता मंत्री ने बताया कि राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बर्डोद- कोटपुतली बहरोड बजट घोषणा 2025-26 में स्वीकृत है और राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान मांढण- बहरोड बजट घोषणा 2022-23 में स्वीकृत है। उन्होंने बताया कि राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बर्डोद के लिए भूमि का चिह्निकरण ग्राम बर्डोद के नजदीक ग्राम कारोड़ा में किया गया है। उपखण्ड अधिकारी बहरोड़ के द्वारा ग्राम बर्डोद के नजदीक ग्राम कारोड़ा के आराजी खसरा नम्बर 677 रकबा 1.40 है। किस्म चारागाह में से भूमि आंवटन के नवीन प्रस्ताव जिला कलक्टर कोटपूतली-बहरोड़ को प्रेषित किये हैं।

उन्होंने बताया कि विधान सभा क्षेत्र बहरोड़ में राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, मांढण में प्रवेश सत्र 2022-23 से एवं राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बर्डोद में प्रवेश सत्र 2025-26 से संचालित है।उन्होंने यहाँ संचालित व्यवसाय की सूची सदन के पटल पर रखी।

## राजस्थान में शीघ्र आएगी मोटर व्हीकल एग्रीगेटर पॉलिसी : बैरवा

जयपुर/दक्षिण भारत। राजस्थान के उपमुख्यमंत्री डा प्रेम चन्द बैरवा ने बुधवार को विधानसभा में कहा कि राज्य में शीघ्र ही एग्रीगेटर पॉलिसी लाई जाएगी। डा बैरवा प्रश्नकाल में विधायक कालीचरण सराफ के इस संबंध में पूछे गए पूरक प्रश्नों का जवाब दे रहे थे। उन्होंने बताया कि सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा हाल ही जारी की गई मोटर व्हीकल एग्रीगेटर गाइडलाइन- 2025 का अध्ययन कर राज्य में एग्रीगेटर पॉलिसी-2025 लाए जाने की कार्रवाई प्रक्रियाधीन है। उन्होंने कहा कि एग्रीगेटर पॉलिसी जारी होने के पश्चात एग्रीगेटर कैब कम्पनी के वाहनों के लिए पृथक से किराया जारी किया जा सकेगा। उन्होंने बताया कि एग्रीगेटर कैब कम्पनी लाइसेंस प्राप्त करने के लिए कम्पनियों को न्यूनतम 50 मोटर कैब अथवा अन्य वाहनों की स्थिति में न्यूनतम 25 वाहन आवश्यक हैं। रेंट ए कैब स्कीम में न्यूनतम 50 मोटर कैब आवश्यक हैं, जिनमें से 50 प्रतिशत वातानुकूलित वाहन होने चाहिये।

## स्मार्ट मीटर और झालावाड़ स्कूल हादसे को लेकर विधानसभा में हंगामा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान की सोलहवीं विधानसभा के चतुर्थ सत्र के दूसरे दिन बुधवार को भी सदन में हंगामा हुआ और विपक्ष के सदस्यों ने प्रदेश में बिजली के स्मार्ट मीटर के विरोध में सदन से बहिर्गमन किया। प्रश्नकाल में विधायक रोहित बोहरा के स्मार्ट मीटर को लेकर पूछे गये प्रश्न के बाद जब पूरक प्रश्नों का ऊर्जा मंत्री हीरा लाल नागर जवाब दे रहे थे तब उनके जवाब से विपक्ष के सदस्य संतुष्ट नहीं हुए और प्रश्नकाल के आखिरी कुछ मिनट बचने के दौरान सदन से बहिर्गमन कर गए। इससे पहले बोहरा ने अपने पूरक प्रश्न में पूछा कि गत 22 अगस्त को सरकार ने प्रदेश में लगाये जा रहे बिजली के स्मार्ट मीटर की अनिवार्यता समाप्त कर दी लेकिन क्या यह निकाय एवं पंचायत चुनाव के मद्देनजर ऐसा किया हैं या यह स्थाई रुप से किया गया हैं।

इस पर नागर ने बताया कि सरकार प्रदेश में लोगों को समय पर नये कनेक्शन देने की नियत के साथ काम करते हुए स्मार्ट मीटर लगाने में देरी होने के कारण उन्हें स्मार्ट मीटर की जगह सामान्य मीटर लगाने की व्यवस्था के तहत यह किया गया हैं जो स्थाई नहीं हैं बाद में स्मार्ट मीटर उपलब्ध होने पर सामान्य मीटरों की जगह स्मार्ट मीटर लगाये जायेंगे। नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने पूछा कि गोवा सरकार द्वारा जिस कंपनी को ब्लैक लिस्ट कर दिया गया उसे यहां स्मार्ट मीटर लगाने की अनुमति दी गई है जो गलत हैं। इस पर नागर ने पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार द्वारा लिए गए निर्णयों का हवाला देते हुए कहा कि प्रदेश में स्मार्ट मीटर लगाने की स्वीकृति तत्कालीन सरकार ने दी थी और अब वर्तमान सरकार इसे आगे बढ़ा रही है। उन्होंने कहा कि ब्लैक लिस्ट कंपनी राजस्थान में ब्लैकलिस्ट नहीं हैं। विपक्ष के सदस्य मंत्री के जवाब से संतुष्ट नहीं हुए और सदन में नारेबाजी करने लगे जिससे सदन में हंगामा हुआ।

करीब आठ-दस मिनट तक हंगामा जारी रहने के बाद लगभग 11 बजकर 53 मिनट पर विपक्ष के सदस्यों ने सदन से बहिर्गमन कर गए। बहिर्गमन करने पर संसदीय कार्यमंत्री जोगाराम पटेल ने विपक्ष के इस व्यवहार की निंदा करते हुए कहा कि विपक्ष के सदस्य मंत्री का जवाब नहीं सुनना चाहते और अपने दोष को छिपाने के लिए सदन से बहिर्गमन कर रहे हैं।

इस पर बहिर्गमन के बाद जूली ने कहा कि सदन से बाहर जाने के बाद पीछे से बोलते हो हिम्मत है तो सामने जवाब देना चाहिए। इस पर एक बार सदन में फिर शोरगुल और हंगामा हुआ। सत्ता पक्ष की तरफ से मंत्री अविनाश गहलोत, राज्यवर्धन सिंह राठौड़ एवं जोराराम कुमावत आदि खड़े होकर बोलने लगे। सदन में दोनों पक्षों की तरफ से सदस्यों के बोलने पर सदन में जोरदार हंगामा हुआ। इस दौरान प्रश्नकाल समाप्त हो गया और स्थगन प्रस्ताव एवं नियम 295 के तहत पूछे जाने वाले प्रश्न और सदन की कार्यवाही हंगामे के बीच चली।राजस्थान में कांग्रेस विधायकों ने झालवाड़ जिले के मनोहरथाना क्षेत्र में एक सरकारी स्कूल की छत गिरने से हुए हादसे के सात मृतक बच्चों को विधानसभा में श्रद्धांजलि नहीं देने को लेकर बुधवार को तख्तियां लगाकर एवं काली पट्टी बांधकर विधानसभा परिसर में विरोध प्रदर्शन किया।

इस दौरान नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली, पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट, कांग्रेस के वरिष्ठ विधायक हरिमोहन शर्मा सहित कांग्रेस विधायकों ने विधानसभा की कार्यवाही शुरु होने से पहले यह विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान कांग्रेस विधायको ने इन बच्चों के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि भी अर्पित की। इस अवसर पर पायलट ने कहा कि राज्य विधानसभा में अन्य राज्यों में हुई अतिवृष्टि एवं हादसों पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई जबकि राज्य के झालावाड़ जिले में गत दिनों हुए हादसे में सात बच्चों की जान जाने के बाद भी इन बच्चों को विधानसभा में श्रद्धांजलि नसीब नहीं हुई।

## कांग्रेस को अपने गिरबान में झांकना चाहिए : बेढम

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। राजस्थान के गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढम ने नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली के कानून व्यवस्था को लेकर राज्य सरकार पर आरोप लगाये गये आरोप पर पलटवार करते हुए कहा है कि कांग्रेस को अपने गिरेबान में झांकना चाहिए। बेढ़म ने अपने बयान में कहा कि टीकाराम जूली प्रदेश में कानून व्यवस्था को लेकर चिंता जता रहे हैं, मगर वह यह भूल गए की उनकी पार्टी के शासन काल में राजस्थान अपराधों का गढ़ बन गया था। महिला अत्याचार में तो देश के अग्रणी प्रदेशों में राजस्थान की गिनती होती थी।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेता स्मार्ट मीटर को लेकर दोगला व्यवहार कर रहे हैं। उनकी सरकार के कार्यकाल में ही प्रदेश में डेढ़ करोड़ स्मार्ट मीटर लगाने का टेण्डर जारी किया गया था तथा लगभग साढ़े पांच लाख स्मार्ट मीटर लगा भी दिए गए थे।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस तो चारा चोर की दोस्त बनी हुई हैं। कांग्रेस की चिंता जायज है, क्योंकि प्रदेश में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार ने विकास कार्यों की झड़ी लगा दी हैं और उसके नेताओं के पास मुद्दों की भारी कमी हो गई है। इसलिए कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा विधानसभा से भाग रहे हैं, उन्हें रुककर सदन की कार्यवाही में हिस्सा लेना चाहिए।

जूली को वो समय याद करना चाहिए, जब नेता प्रतिपक्ष के रूप में उन्हें बोलने से उन्हीं की पार्टी के लोगों ने रोका था। कांग्रेस गुटों में बंटी हुई है, जबकि भारतीय जनता पार्टी पूरी तरह एकजुट है।

## भारी बारिश से जनजीवन अस्त-व्यस्त, सड़क व रेल यातायात बाधित

जयपुर। लगातार मूसलाधार बारिश से राजस्थान के कई हिस्सों में रेल और सड़क यातायात बाधित हो गया और जयपुर व कोटा जिलों के कई इलाके जलमग्न हो गए। कोटा रेलवे डिवीजन के प्रवक्ता ने बताया कि दरा रेलवे स्टेशन के पास भूस्खलन के बाद कोटा-मुंबई मार्ग पर नौ ट्रेनें रोक दी गईं। दरा नदी में जलभराव के कारण कोटा और झालावाड़ को जोड़ने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग-52 पर यातायात रोकना पड़ा। जयपुर, दौसा और सीकर में बुधवार सुबह हुई बारिश ने जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया। दौसा में, भारी बारिश के बीच जयपुर-आगरा राजमार्ग पर पुलिस वैन एक ट्रक से टकरा गई, जिसमें दो पुलिसकर्मी घायल हो गए।

राजधानी जयपुर शहर की सड़कों और निचले इलाकों में भारी जलभराव के कारण यातायात बाधित हुआ और टोंक रोड, परकोटे वाले इलाके, जवाहर नगर, राजा पार्क, मोती डूंगरी रोड, गोपालपुरा, टोंक फाटक और अजमेर रोड पर चार से पांच फुट पानी भर जाने से जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया। राज्य के प्रमुख सरकारी सवाई मानसिंह (एसएमएस) अस्पताल में भी पानी आ गया, जिससे मरीजों और उनके परिजनों को परेशानी हुई। काला हनुमान जी मंदिर में भी पानी घुस गया। भारी बारिश के कारण कई इलाकों से बिजली गुल होने की खबर है। जयपुर मौसम विज्ञान केंद्र के निदेशक राधेश्याम शर्मा ने बताया कि बंगाल की खाड़ी में बना कम दबाव का क्षेत्र आज तीव्र होकर 'वेल मार्क लो प्रेशर' (डब्ल्यूएमएलपी) बन गया है। इसके आगामी 24 घंटों में उड़ीसा, मध्य प्रदेश की ओर आगे बढ़ने की संभावना है। इसके असर से आज से ही बारिश की गतिविधियों में बढ़ोतरी होने की प्रबल संभावना है। आगामी 3-4 दिन पूर्वी व दक्षिण-पूर्वी भागों के कोटा, उदयपुर, भरतपुर, अजमेर, जयपुर संभाग के कुछ भागों में मध्यम से भारी व कहीं-कहीं अति भारी बारिश होने का अनुमान है।

## स्कूलों में छात्रों की उपस्थिति सुनिश्चित करने सहित सुचारू संचालन के दिए निर्देश

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के निदेशक एवं संयुक्त शासन सचिव आशीष मोदी ने कहा कि देवनारायण गुरुकुल योजना का उद्देश्य अति पिछड़ा वर्ग के गरीब बच्चों को गुणात्मक शिक्षा सुनिश्चित करना है। उन्होंने कहा कि इसमें किसी भी तरह की लापरवाही या अनियमितता स्वीकार्य नहीं होगी। निदेशक ने अंबेडकर भवन में आयोजित बैठक में देवनारायण गुरुकुल योजना के अंतर्गत प्रदेश की चयनित निजी आवासीय विद्यालयों के संस्था प्रधानों और प्रतिनिधियों से योजना से जुड़ी समस्या या सुझावों के लिए खुले संवाद (ओपन डिस्कशन) के दौरान यह बात कही। उन्होंने आवासीय विद्यालयों के संचालन में आ रही व्यावहारिक समस्याओं के निस्तारण और सुझावों को अमल में लाने के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया।

मोदी ने कहा कि देवनारायण गुरुकुल योजना के तहत आवासीय विद्यालयों का सुचारू संचालन योजना के सफल होने का आधार है। उन्होंने विद्यालयों में छात्रों की उपस्थिति सुनिश्चित करने, उचित खानपान और साफ सफाई रखने के भी निर्देश दिए।

इस दौरान देवनारायण गुरुकुल योजनान्तर्गत परीक्षा परिणाम, छात्रावास सुविधा, नियमित बायोमैट्रिक उपस्थिति, देय सुविधाएं, मेन्यू अनुसार भोजन व्यवस्था सहित अन्य सुविधाओं के संबंध में विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में निदेशक, माध्यमिक शिक्षा विभाग सीताराम जाट, अतिरिक्त निदेशक, देवनारायण योजना सुंडाराम मीना सहित आवासीय विद्यालयों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

## सुरक्षित सड़क मार्ग अभियान : अभियान को जीवन का हिस्सा बनाकर समाज में बदलाव ला सकते हैं : दीया कुमारी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

जयपुर। सार्वजनिक निर्माण विभाग एवं उच्च शिक्षा विभाग, राजस्थान के सहयोग से चलाए जा रहे सुरक्षित सड़क मार्ग (सुसमा) अभियान के अंतर्गत अब तक विभिन्न सरकारी एवं निजी स्कूलों तथा कॉलेजों के लगभग 2 लाख 51 हजार से अधिक युवाओं को सड़क सुरक्षा का प्रशिक्षण प्रदान किया जा चुका है। बुधवार को महारानी कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स की ओर से 'सबसे बड़ा युवा नेतृत्वित सड़क सुरक्षा अभियान एवं सुरक्षित सड़क कॉरिडोर विकास' शीर्षक से स्थापित रिकॉर्ड की घोषणा की गई।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं सार्वजनिक निर्माण विभाग मंत्री, उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी को प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी ने अभियान की सराहना करते हुए कहा कि सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता के लिए विभाग द्वारा चलाया जा रहा यह अभियान जीवन का हिस्सा बनना चाहिए, ताकि समाज में सकारात्मक बदलाव लाया जा सके। उन्होंने कहा कि हेलमेट लगाना, सीट बेल्ट पहनना, लाल बत्ती पर रुकना और वाहन चलाते समय मोबाइल पर बात न करना जैसे सड़क सुरक्षा नियमों को अपनाना आवश्यक है। तभी समाज में वास्तविक परिवर्तन आएगा। उन्होंने मुख्य अभियंता (गुणवत्ता नियंत्रण) जसवंत खत्री, विभाग की टीम एवं अन्य सहयोगियों को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि बारिश समाप्त होते ही लगभग 1500 करोड़ रुपये की लागत से सड़कों के स्थायी पुनर्निर्माण के कार्य कराए जाएंगे। उन्होंने कहा कि नई सड़कें बनाने के साथ-साथ मौजूदा सड़कों को दुरुस्त रखना सरकार की प्राथमिकता है और इन कार्यों को शीघ्र पूरा कराया जाएगा। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि आमजन को सक्रिय नागरिक की तरह ध्यान रखना चाहिए कि उनके क्षेत्र में बनने वाली सड़कें निर्धारित मानकों के अनुरूप हों और उनमें प्रयुक्त सामग्री सही गुणवत्ता की हो।

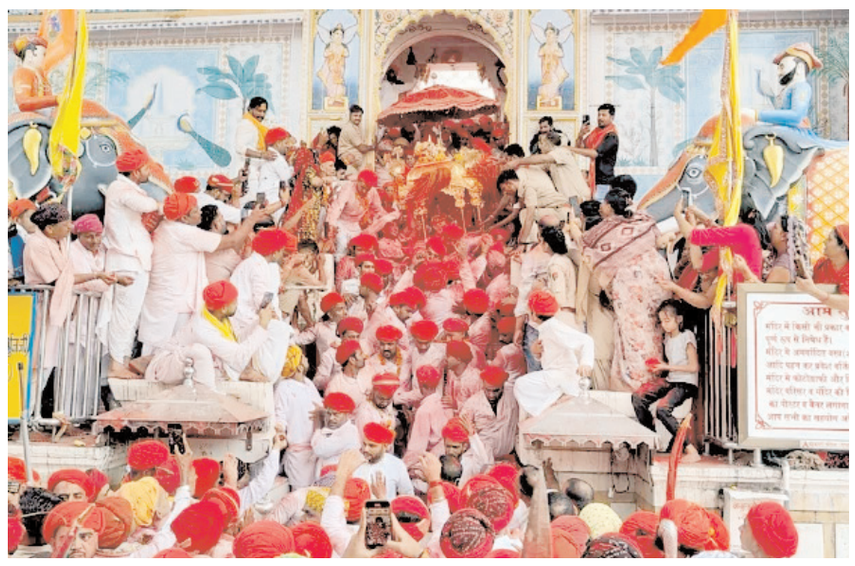

## जलझूलनी एकादशी : अस्त्र शस्त्र आयुध के साथ नगर भ्रमण को निकले प्रभु चारभुजा नाथ

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

राजसमन्द। मेवाड़ के चारधाम में शामिल राजसमंद जिले के श्रीचारभुजानाथ मंदिर में भाद्रपद शुक्ल पक्ष एकादशी पर बुधवार को जलझुलनी एकादशी के मेले में आस्था का सैलाब उमड़ा। प्रदेश के सबसे बड़े भगवान चारभुजानाथ के जलझुलनी एकादशी पर लगने वाले तीन दिवसीय लक्खी मेले के अंतिम दिन आज प्रभु के बाल स्वरूप को सोने की पालकी में बिराजित कर दुधतलाई तक लाया गया, जहां पर हजारों सेवकों और श्रद्धालुओं की उपस्थिति में शाही स्नान करवाया गया। हजारो श्रद्धालुओं ने प्रभु के विगृह स्नान के अलोकिक दृश्य को अपलक निगाहों से निहारा। प्रभु की मंदिर में आरती के बाद भगवान की बाल प्रतिमा को गर्भगृह से सोने की पालकी मे बिराजमान किया। करीब 11.30 बजे सोने की पालकी निज मंदिर से स्वर्ग सी आभा में मृंदग, शहनाई, बैंण्ड बाजों की मधुर ध्वनि के साथ चारभुजा नाथ के जयकारों के साथ मंदिर प्रांगण में आई। यहां से प्रभु की शोभायात्रा रवाना हुई। शोभायात्रा के साथ मेवाड़ी वेशभूषा में मेवाड़ी पाग, धोती कुर्ते पहने चल रहे पुजारियों के हाथ में ढाल, तलवार, गोटे बंदूक सहित नाना प्रकार के स्वर्ण, रजत जडित धातु से निर्मित अस्त्र शस्त्र और आयुध सहित मोर पंखी लिए नृत्य किए चल रहे थे।

प्रभु की एक झलक पाने के लिए मंदिर चौक, छतें और पाण्डाल लोगों से खचा खच भरा हुआ था। जिधर देखो उधर ही श्रद्धालु नजर आ रहे थे। इस दौरान भक्तजनो और श्रृद्धालुओं ने खूब अबीर गुलाल उडाई। साथ में श्रृद्धालुओं ने जगह-जगह प्रभु के बेवाण पर पुष्प वर्षा कर स्वागत किया।

शोभायात्रा में नंगारखाना का संचालन और घोड़े नाचते हुए चल रहे थे। प्रभु के निशान, सूरज-चांद के प्रतीक और चांदी की पालकी पीछे-पीछे चल रही थी। दूध तलाई पर प्रभु चारभुजा नाथ के बाल स्वरूप को पवित्र स्नान करवाया गया वहीं श्रद्धालुओं ने अपने हाथों से पानी उछलकर और टैंकर से पानी की बौछार फेंक कर प्रभु को स्नान करवाया। प्रभु के अलौकिक दर्शन करने के लिए देशभर से श्रद्धालु यहां पहुंचे। स्नान के बाद प्रभु को शोभा यात्रा के रूप में फिर से निज मंदिर लाया गया।

## राजस्थान हम सबका परिवार है, सभी मजहब-जातियां मिलकर रहेंगी तभी प्रदेश में खुशहाली आएगी : राजे

जोधपुर। भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने जोधपुर प्रवास के दौरान मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि ईश्वर में आस्था और विश्वास रखने से मनोकामनाएं अवश्य पूर्ण होती हैं, भले ही इसमें समय लगे। राजे ने अपने जोधपुर दौरे की शुरुआत अजीत भवन में मीडिया संवाद से की। इस अवसर पर उन्होंने बाबा रामदेव की दशम वीर तेजाजी जयंती एवं खेजड़ली मेले पर प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं दीं और प्रार्थना की कि राजस्थान एक मजबूत, समृद्ध और सुखी प्रदेश बने।

उन्होंने बताया कि उनकी राजनीतिक यात्रा की शुरुआत बाबा रामसा पीर के दर्शन से हुई थी। उन्होंने कहा कि रामसा पीर सभी के देवता हैं, और राजस्थान हम सबका परिवार है।

### विद्यार्थियों ने देखी विधानसभा की कार्यवाही

राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी की पहल पर अलवर के चिनार पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने बुधवार को राजस्थान विधानसभा की कार्यवाही को देखा। विद्यार्थियों ने देवनानी से विधानसभा की कार्यप्रणाली व संसदीय परंपराओं को समझा। उन्होंने व्द्यिार्थियों को लोकतांत्रिक मूल्यों, संविधान की गरिमा और जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा दी। व्द्यिार्थियों ने पीतल वाले ऐतिहासिक गेट पर विधानसभा अध्यक्ष देवनानी और वनमंत्री संजय शर्मा के साथ सामूहिक चित्र लिया। विद्यालय प्रबंधन ने इस अवसर के लिए विधानसभा अध्यक्ष का आभार व्यक्त किया।

## श्रीरामचरित मानस का अपमान करने के आरोप में पूर्व मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्य के खिलाफ मुकदमा दर्ज

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**वाराणसी (उप्र)/भाषा।** श्रीरामचरित मानस के प्रति आपत्तिजनक टिप्पणी करने के आरोप में उत्तर प्रदेश के पूर्व मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्य के खिलाफ अदालत के आदेश पर वाराणसी के कैंट थाने में मुकदमा दर्ज किया गया है।

कैंट थानाध्यक्ष शिवाकांत मिश्रा ने बताया कि अदालत के आदेश पर मौर्य के खिलाफ भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 295 (किसी वर्ग के धर्म का अपमान करने के इरादे से किसी पूजा स्थल या पवित्र वस्तु को नुकसान पहुंचाना, किसी की धार्मिक भावनाओं को जानबूझकर ठेस पहुंचाना), 504 (जानबूझकर अपमान करना और उकसाना), 505(2) (धर्म, जाति, या समुदाय जैसे विभिन्न आधारों पर विभिन्न वर्गों के बीच शत्रुता, घृणा या दुर्भावना उत्पन्न करना) और 153(ए) (धर्म, जाति, भाषा, जन्मस्थान, या निवास के आधार पर विभिन्न समूहों के बीच शत्रुता, घृणा, या वैमनस्य को बढ़ावा देना) के तहत मंगलवार की शाम मुकदमा दर्ज कर लिया गया।

याचिकाकर्ता अधिवक्ता अशोक कुमार ने बताया कि मौर्य ने 22 जनवरी 2023 को एक न्यूज चैनल को दिए गए इंटरव्यू में गोस्वामी तुलसीदास और रामचरित मानस को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणी की थी।

# कांग्रेस नेता पवन खेड़ा की पत्नी के पास भी दो मतदाता पहचान पत्रः भाजपा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**नई दिल्ली/भाषा।** भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने बुधवार को आरोप लगाया कि कांग्रेस नेता पवन खेड़ा की पत्नी के पास भी दो मतदाता पहचान पत्र हैं और पार्टी नेता राहुल गांधी 'अपने ही नेताओं के बीच इस तरह के आपराधिक कृत्यों से खुद को अलग नहीं कर सकते'। इससे पहले सत्तारूढ़ भाजपा ने मंगलवार को आरोप लगाया था कि खेड़ा के पास दो मतदाता पहचान पत्र हैं और राहुल गांधी अपनी पार्टी की वोटों की चोरी को 'बचाने और छिपाने' के लिए बिहार में मतदाता सूची पुनरीक्षण के खिलाफ अभियान चला रहे हैं।

भाजपा के इस आरोप पर कांग्रेस, खेड़ा या उनकी पत्नी कोटा नीलिमा, जो तेलंगाना में पार्टी की नेता भी हैं, की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। भाजपा के आईटी प्रकोष्ठ के प्रमुख अमित मालवीय ने 'एक्स' पर लिखा, तेलंगाना के खैरताबाद (60) विधानसभा क्षेत्र से उम्मीदवार और पवन खेड़ा की पत्नी तथा कांग्रेस नेता कोटा नीलिमा के पास भी दो सक्रिय ईपीआईसी (मतदाता फोटो पहचान पत्र) हैं। एक खैरताबाद (तेलंगाना का विधानसभा क्षेत्र) में पंजीकृत है और दूसरा नई दिल्ली में। उन्होंने कहा, अब यह बिल्कुल स्पष्ट है कि कांग्रेस नेताओं के पास कई ईपीआईसी नंबर हैं और वे एक से ज्यादा जगहों पर पंजीकृत मतदाता हैं। यह कोई संयोग नहीं है।

मालवीय ने आरोप लगाया, 'वोट चोरी' में लिप्त लोग ही आम नागरिकों को उनके लोकतांत्रिक अधिकारों का प्रयोग करने के लिए बदनाम कर रहे हैं और हमारी संस्थाओं को कमजोर कर रहे हैं। भाजपा नेता ने कहा कि राहुल गांधी अपने ही खेमे के भीतर 'इन आपराधिक कृत्यों' से खुद को 'मुक्त' नहीं कर सकते, खासकर सार्वजनिक पद पाने के इच्छुक लोगों और उनके 'आंतरिक गुट' के सदस्यों से जुड़े मामलों से। उन्होंने लोकसभा में विपक्ष के नेता गांधी से इस पर जवाब देने की मांग की। मालवीय ने यह भी मांग की कि निर्वाचन आयोग इस मामले की जांच शुरू करे। खेड़ा और उनकी पत्नी के मामले को लेकर राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए भाजपा की राष्ट्रीय प्रवक्ता शाजिया इल्मी ने कहा कि खुद को 'मोहब्बत की दुकान' कहने वाली कांग्रेस दरअसल 'फर्जीवाड़ा और फरेब का बाजार' चला रही है। इल्मी ने भाजपा मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा, कांग्रेस के सीडब्ल्यूसी सदस्य और मीडिया प्रमुख पवन खेड़ा के पास दो ईपीआईसी हैं, वहीं पता चला है कि उनकी पत्नी कोटा नीलिमा, जो 2023 के राज्य चुनावों में तेलंगाना की खैरताबाद विधानसभा सीट से पार्टी की उम्मीदवार थीं, के पास भी दो ईपीआईसी हैं। उन्होंने इस मुद्दे पर राहुल गांधी पर 'चुप्पी' साधने का आरोप लगाते हुए कहा कि कांग्रेस ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि उसे लोकतंत्र से कोई लेनादेना नहीं है। इल्मी ने कांग्रेस के 'वोट चोरी' के आरोपों पर कहा, पूरा देश जानता है कि ईवीएम आने से पहले कश्मीर और बिहार में वोटों की डकैती कैसे होती थी। 1980 में सोनिया गांधी ने अपना नाम मतदाता सूची में जुड़वा लिया था, जबकि उस समय वह इतालवी नागरिक थीं।

### बिहार बंद पर तेजस्वी का तंज, कहा

## सत्ता में रहकर भी राजग कर रहा 'गैर जिम्मेदाराना राजनीति'

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**पटना/भाषा।** राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता और बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव ने बुधवार को कहा कि भाजपा नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) कांग्रेस की ''मतदाता अधिकार यात्रा'' के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की दिवंगत मां के बारे में की गई कथित अभद्र टिप्पणी के विरोध में बिहार बंद का आह्वान करके ''गैर जिम्मेदाराना राजनीति'' कर रहा है।

दो सप्ताह तक चली यात्रा के दौरान कांग्रेस नेता राहुल गांधी के साथ रहे पूर्व उपमुख्यमंत्री यादव ने बुधवार को पत्रकारों से कहा, वे (राजग) सत्ता में हैं और फिर भी बंद का आह्वान कर रहे हैं। दरअसल, भाजपा 25 जिलों की 1,300 किलोमीटर से ज्यादा दूरी की हमारी यात्रा की सफलता से घबरा गई है।

नेता प्रतिपक्ष ने कहा, बंद के आह्वान से केवल एक दिन के लिए स्कूल बंद होंगे। वैसे भी जब प्रधानमंत्री बिहार आते हैं तो स्कूल बंद रहते हैं। इसलिए राजग को इससे कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। उन्होंने प्रधानमंत्री के हालिया बयान पर कटाक्ष करते हुए कहा कि दरभंगा की उस घटना पर भावुक होना ''कपटी राजनीति'' का उदाहरण है। यादव ने कहा, उस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के बाद प्रधानमंत्री विदेश चले गए थे और वहां विदेशी नेताओं के साथ उनकी हंसी-मजाक वाली तस्वीरें सामने आईं। लेकिन जैसे ही वे लौटे तो भावुक हो गए। उन्होंने कहा, 50 करोड़ की गर्लफ्रेंड'' जैसे अभद्र कटाक्ष करते समय प्रधानमंत्री की संवेदनाएं कहां थीं? मोदी जी ने सोनिया गांधी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के डीएनए पर भी आपत्तिजनक टिप्पणी की थी। उनकी पार्टी के विधायक विधानसभा में हमें भद्दी गालियां देते रहे हैं। तेजस्वी ने कहा कि किसी की मां का अपमान कोई बर्दाश्त नहीं करता, लेकिन ''सार्वजनिक जीवन में अभद्र आचरण पर भाजपा को भी जवाब देना होगा।

उल्लेखनीय है कि दरभंगा में कांग्रेस के मंच पर लाउडस्पीकर से अपशब्द कहने वाले 25 वर्षीय आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया था। हालांकि कांग्रेस के नेतृत्व वाले 'इंडिया' गठबंधन ने स्पष्ट किया है कि आरोपी व्यक्ति का उससे कोई संबंध नहीं है।

## त्रिपुरा के विधायक को 'धमकी' दिए जाने पर भाजपा ने कहा : कानून अपना काम करेगा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**अगरतला/भाषा।** तेलंगाना के राज्यपाल जिष्णु देव वर्मा के बेटे पथिक द्वारा अगरतला स्थित एमएलए हॉस्टल में टिपरा मोथा पार्टी के विधायक फिलिप कुमार रियांग को कथित तौर पर धमकी दिए जाने के संबंध में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने बुधवार को कहा कि कानून अपना काम करेगा।

पथिक सहित चार युवकों ने सोमवार रात रियांग को कथित तौर पर धमकी दी थी। मंगलवार रात न्यू कैपिटल कॉम्प्लेक्स थाने में आत्मसमर्पण किए जाने के बाद सभी को जमानत मिल गई थी।

भाजपा की राज्य इकाई के अध्यक्ष राजीब भट्टाचार्य ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा, घटना के तुरंत बाद, आवश्यक कदम उठाए गए। पुलिस महानिदेशक अनुराग धनखड़, पश्चिम त्रिपुरा के पुलिस अधीक्षक नमित पाठक और विधानसभा के उपाध्यक्ष रामप्रसाद पॉल ने एमएलए हॉस्टल का दौरा किया और विधायक से बात की। उन्होंने कहा कि पुलिस कानून-व्यवस्था की स्थिति को बिगाड़ने की कोशिश करने वालों के खिलाफ उचित कार्रवाई करेगी। भट्टाचार्य ने कहा कि भाजपा ऐसे कृत्यों को बढ़ावा या समर्थन नहीं देती है। उन्होंने कहा, इस घटना में न्याय सुनिश्चित करने के लिए कानून अपना काम करेगा क्योंकि सरकार किसी भी प्रकार के अपराध को कतई बर्दाश्त नहीं करेगी।

पुलिस को दी गई अपनी शिकायत में रियांग ने दावा किया कि वह अपने परिवार के साथ बातचीत कर रहे थे, तभी पथिक देव वर्मा सहित कुछ लोगों ने हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया।

विधायक ने आरोप लगाया कि जब उन्होंने उन्हें (पथिक देव वर्मा और अन्य लोगों को) वहां से चले जाने के लिए कहा तो ''वे और अधिक आक्रामक हो गए और हिंसक, अपमानजनक शब्द बोलने लगे तथा मेरा गला काटने की धमकी देने लगे। उन्होंने कहा, वे मुझे और मेरे परिवार के सदस्यों को मारने के लिए 400 से 500 भाजपा कार्यकर्ताओं को लाएंगे।

## साल 2027 के बाद भी भाजपा के साथ चट्टान की तरह खड़े रहेंगेः संजय निषाद

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**बलिया (उत्तर प्रदेश)/भाषा।** निषाद पार्टी के प्रमुख और उत्तर प्रदेश के मंत्री संजय निषाद ने बुधवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) से असंतोष की खबरों को खारिज करते हुए कहा कि उनकी पार्टी भाजपा के साथ मजबूती से जुड़ी हुई है और भविष्य में भी उसका समर्थन करती रहेगी।

बांसडीह तहसील के चांदपुर गांव में बाढ़ प्रभावित परिवारों को राहत सामग्री वितरित करने के बाद पत्रकारों से बात करते हुए निर्दल इंडियन शोषित हमारा आम दल (निषाद पार्टी) के अध्यक्ष निषाद ने कहा, विपक्ष के पास उठाने के लिए कोई मुद्दा नहीं है। वे अनाप-शनाप बयान देते हैं। उन्होंने कहा, हम कल भी भाजपा के साथ थे, आज भी हैं और 2027 और उसके बाद भी उनके साथ रहेंगे। हम विचारधारा से जुड़े लोग हैं और चट्टान की तरह भाजपा के साथ खड़े हैं।

भाजपा का साथ छोड़ने की अटकलों पर प्रतिक्रिया देते हुए उत्तर प्रदेश के मत्स्य पालन मंत्री ने आरोप लगाया कि समाजवादी पार्टी (सपा), बहुजन समाज पार्टी (बसपा) और कांग्रेस से भाजपा में आए कुछ नेता भ्रम पैदा कर रहे हैं। उन्होंने कहा, भाजपा के कुछ बाहरी नेता पार्टी को अंदर से नुकसान पहुंचा रहे हैं। उन्हें बताना चाहिए कि वे किसके साथ खड़े हैं।

## लोगों की आकांक्षाएं राज्यपालों की ''मनमर्जी'' के अधीन नहीं हो सकतीं: बंगाल सरकार ने न्यायालय से कहा

**नई दिल्ली/भाषा।** पश्चिम बंगाल सरकार ने बुधवार को उच्चतम न्यायालय से कहा कि विधेयक के रूप में जनता की आकांक्षाओं को राज्यपालों और राष्ट्रपति की ''मनमर्जी और इच्छाओं'' के अधीन नहीं किया जा सकता, क्योंकि कार्यपालिका को विधायी प्रक्रिया में हस्तक्षेप करने से रोका गया है। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) शासित राज्य सरकार ने प्रधान न्यायाधीश बी आर गवई की अध्यक्षता वाली पांच न्यायाधीशों की संविधान पीठ से कहा कि राज्यपाल संप्रभु की इच्छा पर सवाल नहीं उठा सकते हैं और विधानसभा द्वारा पारित विधेयक की विधायी क्षमता की जांच करने के लिए आगे नहीं बढ़ सकते हैं, जो न्यायपालिका के अधिकार क्षेत्र में आता है।

इस बारे में राष्ट्रपति संदर्भ (प्रेसीडेंशियल रेफरेंस) पर सातवें दिन सुनवाई हुई कि क्या न्यायालय राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयकों पर राज्यपालों और राष्ट्रपति के विचार करने के लिए समय-सीमा निर्धारित कर सकता है। पीठ में न्यायमूर्ति सूर्यकांत, न्यायमूर्ति विक्रम नाथ, न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा और न्यायमूर्ति एएस चंदुरकर भी शामिल हैं। पश्चिम बंगाल सरकार की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने कहा, जनता की आकांक्षा कार्यपालिका (राज्यपाल और राष्ट्रपति) की मनमर्जी और इच्छाओं के अधीन नहीं हो सकती। कार्यपालिका को कानून बनाने की प्रक्रिया में हस्तक्षेप करने से प्रतिबंधित किया गया है। संप्रभु की इच्छा सर्वोच्च है। पीठ ने हालांकि पूछा, आपकी दलीलों के संदर्भ में, क्या आपका यह कहना है कि विधेयकों को मंजूरी देनी होगी, भले ही वे विधायी क्षेत्राधिकार के अनुरूप न हों और उनकी वैधता का परीक्षण अदालतों में किया जा सकता है?''

## जलवायु परिवर्तन के कारण भारत में सर्पदंश के मामले बढ़ने की आशंकाः शोध

**नई दिल्ली/भाषा।** जलवायु परिवर्तन के कारण जहरीले सांपों के लिए भारत के उत्तर और पूर्वोत्तर भाग की ओर जाने और फैलने के लिए परिस्थितियां अनुकूल बन सकती हैं, जिससे अब तक सांपों के लिए अनुपयुक्त माने जाने वाले इन क्षेत्रों में सर्पदंश के मामले बढ़ने की आशंका है। एक शोध में यह बात सामने आई है। भारतीय उपमहाद्वीप में 'बिग फोर' के नाम से जाने जाने वाले चार जहरीले सांपों- कॉमन क्रेट, रसल्स वाइपर, एकिस कैरिनेटस और इंडियन कोबरा, सर्पदंश के अधिकतर मामलों के लिए जिम्मेदार हैं।

डिब्रू-सैखोवा संरक्षण सोसाइटी, असम कृषि विश्वविद्यालय और दक्षिण कोरिया के पुकयोंग राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने आशंका जताई है कि बढ़ती गर्मी और आर्द्रता समेत जलवायु परिवर्तन से जुड़े कुछ कारकों की वजह से हरियाणा, राजस्थान और असम में 'बिग फोर' सांपों के लिए उपयुक्त ठिकाने बढ़ सकते हैं। शोधकर्ताओं की टीम ने कहा कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में मानव-सांपों के बीच आमना-सामना बढ़ने से सार्वजनिक स्वास्थ्य और चिकित्सा प्रबंधन के लिए नई चुनौतियां पेश हो सकती हैं। 'पीएलओएस नेग्लेक्टेड ट्रॉपिकल डिजीजेज' पत्रिका में प्रकाशित निष्कर्षों में कहा गया है कि इसके अलावा तापमान में निरंतर वृद्धि के कारण, मणिपुर, मेघालय, नगालैंड और अरुणाचल प्रदेश जैसे पूर्वोत्तर राज्यों में सर्पदंश के मामलों में 100 प्रतिशत से अधिक की उल्लेखनीय वृद्धि देखी जा सकती है, जहां वर्तमान में सांपों के लिए अनुकूल ठिकाने नहीं हैं।

## उद्योगपति पवन कुमार गोयनका मारवाड़ी समुदाय से जुड़ी संस्था के अध्यक्ष का कार्यभार संभालेंगे

**नई दिल्ली/भाषा।** उद्योगपति पवन कुमार गोयनका छह सितंबर को यहां 'अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन' के निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष का पदभार ग्रहण करेंगे। एक बयान में बुधवार को यह जानकारी दी गई।

बयान के मुताबिक, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का 28वां राष्ट्रीय अधिवेशन यहां राष्ट्रीय राजधानी में छह और सात सितंबर को आयोजित किया जाएगा और कार्यक्रम के पहले दिन उद्योगपति गोयनका संगठन के निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष का पदभार ग्रहण करेंगे। इसमें बताया गया है कि गोयनका कोलकाता में आयोजित चुनावों में वर्ष 2025 से 2027 सत्र के लिए निर्विरोध अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष चुने गए हैं। बयान के अनुसार, मारवाड़ी समुदाय की संस्था का 28वां राष्ट्रीय अधिवेशन अध्यात्म साधना केंद्र, छतरपुर में आयोजित किया जायेगा जिसमें समुदाय के उद्योगपति एवं सामाजिक क्षेत्रों में विशेष उपलब्धि हासिल करने बाले लोग हिस्सा लेंगे। इसमें 25 राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों की 400 शाखाओं से लगभग 600 प्रतिनिधि हिस्सा लेंगे।

## अगर हिंदू बहुसंख्यक रहे तो धर्मनिरपेक्षता व साम्यवाद बचे रहेंगे : केंद्रीय मंत्री सुकांत मजूमदार

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**कोलकाता/भाषा।** केंद्र सरकार द्वारा संशोधित नागरिकता अधिनियम (सीएए) की वैधता को 10 साल के लिए बढ़ाए जाने के बाद, केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री सुकांत मजूमदार ने कहा कि भारत में धर्मनिरपेक्षता और साम्यवाद तभी तक जीवित रहेंगे जब तक हिंदू बहुसंख्यक रहेंगे।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) द्वारा यहां आयोजित एक कार्यक्रम में मजूमदार ने सीएए लाने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को धन्यवाद दिया। दशकों तक पूर्वी बंगाल से आए दलित शरणार्थियों के बारे में किसी ने नहीं सोचा। यह पहली बार है कि नरेन्द्र मोदी ने उनकी दुर्दशा पर विचार किया है। विभाजन काल के इतिहास का हवाला देते हुए उन्होंने पाकिस्तान के पहले कानून मंत्री जोगेंद्र नाथ मंडल का उल्लेख किया, जिन्हें अपने उच्च पद के बावजूद अपनी गरिमा बचाने के लिए अपनी पत्नी और बेटी के साथ भारत भागना पड़ा था। मजूमदार ने कहा कि दलित समुदाय, जिसने पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) में ही रहने के मंडल के आह्वान पर भरोसा किया था, को उसके बाद लगातार उत्पीड़न का सामना करना पड़ा, जिसके कारण शरणार्थियों की कई पीढ़ियां भारत में पलायन करने को मजबूर हुईं। जनसंख्या संबंधी अपने पूर्ववर्ती बयान को दोहराते हुए भाजपा नेता ने कहा, भारत में धर्मनिरपेक्षता और साम्यवाद तब तक ही टिके रह सकते हैं जब तक हिंदू बहुसंख्यक हैं। अन्यथा, ये विचारधाराएं जीवित नहीं रह पाएंगी, क्योंकि हिंदू ही एकमात्र समुदाय है जो समावेशिता में विश्वास करता है। मजूमदार ने इस बात पर जोर दिया कि धार्मिक अल्पसंख्यकों, विशेषकर दलितों को बांग्लादेश में अत्याचारों का सामना करना पड़ रहा है। ये शरणार्थी 1947 से भारत आ रहे हैं। खासकर महिलाओं को लगातार प्रताड़ित किया गया है। सालों तक किसी ने उनकी आवाज नहीं उठाई। पहली बार नरेन्द्र मोदी ने उनके भविष्य के बारे में सोचा और सीएए पारित करवाया।

## अन्याय को मिटाने के लिए भाजपा को सत्ता से हटाना आवश्यक है: अखिलेश

**लखनऊ/भाषा।** समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बुधवार को कहा कि उत्तर प्रदेश में सामाजिक न्याय की स्थापना करने और अन्याय को मिटाने के लिए भाजपा को सत्ता से हटाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार में निर्दोषों को झूठे मुकदमे में फंसाया जाता है, संविधान के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है और महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार चरम पर हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने शिक्षा, और स्वास्थ्य व्यवस्था बर्बाद कर दिया, अस्पतालों में दवाएं नहीं हैं, इलाज नहीं मिल पा रहा है और एम्बुलेंस सेवाएं ठप है। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, जनता को समाजवादी पार्टी की नीतियों और कार्यक्रमों पर भरोसा है। समाजवादी पार्टी ने उत्तर प्रदेश में विकास के लिए तमाम कार्य किए हैं। किसानों, नौजवानों समेत सभी वर्गों के हित में फैसले लिए। जनता समाजवादी पार्टी की तरफ उम्मीद भरी नज़रों से देख रही है। समाजवादी पार्टी की सरकार में सामाजिक न्याय का राज स्थापित करेगी। उन्होंने कहा कि 2027 के विधानसभा चुनाव में भाजपा सरकार को कोई नहीं बचा पायेगा।

## कौशांबी में हिंदू लड़की से सामूहिक दुष्कर्म करने और धर्मांतरण कराने के आरोप में मामला दर्ज

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**कौशांबी (उप्र)/भाषा।** उत्तर प्रदेश के कौशांबी जिले में एक हिंदू लड़की से कथित तौर पर सामूहिक दुष्कर्म किए जाने और जबरन धर्मांतरण कराने का मामला सामने आया है, जिसके बाद सात लोगों को खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पुलिस ने यह जानकारी दी।

जिले के एक गांव की निवासी एक महिला ने पुलिस अधीक्षक को दी शिकायत में बताया कि 31 अगस्त को रात आठ बजे उसकी 19 वर्षीय बेटी को गांव की ही निवासी नेहा बानो नामक महिला ने धोखे से अपने घर बुलाया और वहां पहुंचने पर नेहा के भाई सैफ खान (24) और अनुज अहमद (25) ने बेटी से दुष्कर्म किया। तहरीर के मुताबिक आरोपियों ने लड़की से दुर्व्यवहार करके जबरन विवाह का दबाव बनाया और जान से मारने की धमकी दी।

आरोप है कि उसी दौरान गांव की मस्जिद के मौलाना ने शिकायतकर्ता महिला और उसकी बेटी को गलत तरीके से जबरन कलमा पढ़वा कर उनका धर्म परिवर्तन कराया जबकि इस दौरान गांव के छोटू खान, अतीक अहमद और इसरार अहमद भी वहां मौजूद रहे और इस कृत्य में सक्रिय रूप से शामिल रहे।

तहरीर में कहा गया है कि अगली सुबह महिला और उसकी बेटी ने घर पहुंचकर परिवार वालों को इस घटना की जानकारी दी।

शिकायत में कहा गया है कि परिजन ने आरोपियों का विरोध किया तो महिला के बेटे की सार्वजनिक रूप से पिटाई की गई और पूरे परिवार को जान से मारने की धमकी दी गई।

## अंडमान में म्यांमा के 22 शिकारी गिरफ्तार, कई समुद्री खीरे जब्त

**पोर्ट ब्लेयर/भाषा।** अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में म्यांमा के 22 संदिग्ध शिकारियों को गिरफ्तार किया गया है और उनके पास से 550 किलोग्राम सी कुकुम्बर जब्त किए गए हैं। पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि नप्पी घोपे के घने जंगलों से इन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। उत्तर और मध्य अंडमान जिले की पुलिस अधीक्षक श्वेता के सुगाथन ने कहा, हमें 24 अगस्त को अंडमान सागर में मछली पकड़ने वाली नौकाओं की संदिग्ध गतिविधियों के बारे में सूचना मिली। हमने तुरंत 40 से ज़्यादा पुलिसकर्मियों की एक टीम बनाई। उन्होंने कहा, संवेदनशील वन क्षेत्रों और संवेदनशील तटीय क्षेत्रों में गहन तलाशी अभियान चलाने के लिए सभी संसाधनों को जुटाया गया। टीम ने मंगलवार रात म्यांमा के 14 शिकारियों और बुधवार सुबह आठ शिकारियों को गिरफ्तार करके एक महत्वपूर्ण सफलता हासिल की।

## ओडिशा का देबरीगढ़ बनेगा भारत का सबसे नया बाघ अभयारण्य

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**संबलपुर/भाषा।** ओडिशा का देबरीगढ़ वन्यजीव अभयारण्य भारत की सबसे उल्लेखनीय संरक्षण सफलता की कहानियों में से एक लिख रहा है क्योंकि यह देश का सबसे नया बाघ अभयारण्य बनने की तैयारी कर रहा है। इन्ही घने जंगलों में कभी स्वतंत्रता सेनानी वीर सुरेंद्र साईं ने ब्रिटिश सेना को चकमा दिया था।

804 वर्ग किलोमीटर में फैले इस अभयारण्य को जुलाई 2025 में राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (एनटीसीए) की मंजूरी मिली थी। यह अब मानव निवास वाले संघर्ष-ग्रस्त क्षेत्र से एक संपन्न पारिस्थितिकी तंत्र में तब्दील हो गया है। अभयारण्य की बदौलत पर्यटन गतिविधियों से पांच करोड़ रुपए का राजस्व पैदा हुआ और इस साल 85,000 से ज्यादा सैलानी आए। मंडल वन अधिकारी अंशु प्रज्ञा दास ने बताया, यहां गौर, सांभर, चित्तीदार हिरण, जंगली सूअर और जंगली कुत्तों की संख्या में वृद्धि हुई है। तेंदुओं की संख्या भी अच्छी है। इस परिवर्तन को असाधारण बनाने वाली बात है आंकड़े: सभी पशु झुंडों में अब 40% शावक हैं, जबकि भारतीय गौर की आबादी मात्र छह महीनों में 670 से बढ़कर 700 से अधिक हो गई है, जो एक संपन्न पारिस्थितिकी तंत्र का संकेत है। अभयारण्य की सफलता अभूतपूर्व सामुदायिक सहभागिता दृष्टिकोण का परिणाम है। 400 से ज़्यादा परिवारों को एक व्यापक पैकेज के तहत मुख्य क्षेत्र से स्वेच्छा से स्थानांतरित किया गया, जिसमें 15 लाख रु. का मुआवज़ा, कृषि भूमि, पक्के मकान और कौशल विकास प्रशिक्षण शामिल था।

## कुत्ते को अपने पास रखने का विवाद : अदालत ने महुआ मोइत्रा, देहद्राई से आपस में विवाद सुलझाने को कहा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**नई दिल्ली/भाषा।** दिल्ली उच्च न्यायालय ने मंगलवार को तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा से अधिवक्ता जय अनंत देहाद्राई द्वारा दायर याचिका पर जवाब मांगा। यह याचिका उस आदेश के खिलाफ दाखिल की गई है, जिसमें उन्हें एक पालतू कुत्ते को अपने पास रखने को लेकर जारी विवाद को सार्वजनिक करने से रोका गया है।

न्यायमूर्ति मनोज जैन ने अपील पर मोइत्रा को नोटिस जारी किया और पक्षकारों से पूछा कि वे एक साथ बैठकर अदालत के बाहर इस मुद्दे को क्यों नहीं सुलझा लेते। दोनों के बीच कथित तौर पर करीबी संबंध थे लेकिन बाद में वे अलग हो गए। अदालत को बताया गया कि मोइत्रा द्वारा निचली अदालत में दायर मुकदमे में अनुरोध किया गया था की ऐसी व्यवस्था की जाए कि पालतू रॉटवीलर 'हेनरी' दोनों के पास रह सके। देहाद्राई ने अधीनस्थ अदालत के एकपक्षीय आदेश को चुनौती दी थी, जिसमें यह निर्देश दिया गया था कि यह सुनिश्चित किया जाए कि वर्तमान कार्यवाही को किसी भी तरह से प्रचारित नहीं किया जाएगा। उन्होंने इसे व्यापक प्रतिबंध आदेश बताया और कहा कि उन्हें मोइत्रा के मुकदमे के बारे में सार्वजनिक रूप से किसी को भी बताने से रोका गया है।

## सुविचार

**धैर्य वह कला है जो आपको आपकी मंजिल तक पहुंचाती है।**

## दक्षिण भारत राष्ट्रमत

# उद्यमिता : उम्मीद की रोशनी

पंजाब सरकार ने अपने स्कूलों की 11वीं कक्षा में उद्यमिता को एक मुख्य विषय के तौर पर पढ़ाने का फैसला कर अच्छी पहल की है। अन्य राज्य सरकारों को भी इस दिशा में कदम बढ़ाना चाहिए। भारत में बेरोजगारी की जो स्थिति है, उसमें उद्यमिता कई युवाओं के लिए उम्मीद की रोशनी लेकर आ सकती है। देश में 140 करोड़ से ज्यादा लोग होने का सीधा-सा मतलब है- 'बहुत बड़ा बाजार'। यहां फिर भी बेरोजगारी है तो इसका मतलब है- 'व्यवस्था में ही खामियां मौजूद हैं'। देश में बेरोजगारी इसलिए है, क्योंकि यहां सरकारी नौकरी को एकमात्र रोजगार समझ लिया गया है। उद्यमिता को तो अंतिम विकल्प माना जाता है। युवाओं के मन में यह बात बैठा दी गई है कि 'आपको नौकरी ही करनी है; वह भी ऐसी, जिसमें वेतन ज्यादा और मेहनत कम हो।' ऐसी नौकरियां कितनी हैं और भविष्य में उनका स्वरूप कैसा रहेगा? आज कई परिवारों में सफलता का एकमात्र पैमाना ऐसी नौकरी को माना जाता है, जिसमें पैसा भरपूर मिले, काम कम से कम करना पड़े। क्या हम भारत को इस तरह आर्थिक महाशक्ति बना सकेंगे? अगर यही सोच अमेरिका, चीन, जर्मनी, जापान जैसे देशों में होती तो क्या वे इतनी उन्नति कर पाते? भारत में नौकरियों, उनमें भी सरकारी नौकरियों के प्रति इतना आकर्षण इसलिए पैदा हुआ है, क्योंकि युवाओं को उद्यमिता की जानकारी नहीं दी गई। जब उन्हें कोई हुनर नहीं सिखाया गया तो वे क्या करेंगे? नौकरी ढूंढ़ना उनकी मजबूरी है।

देश में रोजगार बढ़े, घरों में खुशहाली आए, इसके लिए उद्यमिता को बढ़ावा देना होगा। इसे एक मुख्य विषय के तौर पर भले ही 11वीं कक्षा से पढ़ाया जाए, लेकिन प्रारंभिक जानकारी छठी कक्षा से देनी चाहिए। पाठ्यक्रम में 'अर्थतंत्र क्या है, बाजार कैसे चलता है, मांग क्या है, पूर्ति क्या है, कारोबारी प्रतिष्ठानों में काम कैसे होता है, अपनी रुचि को कैसे पहचानें' - जैसे सवालों को शामिल किया जाए। बच्चों को समय-समय पर बाजारों, प्रतिष्ठानों का भ्रमण कराया जाए। डिजिटल मार्केटिंग सबको सिखाई जाए। उदाहरण के लिए, अगर किसी कक्षा के बच्चों को केक खाना बहुत पसंद है तो उन्हें नजदीकी बेकरी का भ्रमण कराया जाए। उन्हें बताया जाए कि आपको स्वादिष्ट लगने वाले केक कैसे बनाए जाते हैं, कैसे सजाए जाते हैं, कैसे पैक किए जाते हैं, कैसे घरों तक पहुंचाए जाते हैं ... और कैसे सोशल मीडिया पर इनके आकर्षक वीडियो पोस्ट किए जाते हैं! कभी बेकरी के मालिक या कर्मचारियों को स्कूल में आमंत्रित किया जाए। इसी तरह, अन्य प्रतिष्ठानों का भ्रमण कराया जाए। उनके कामकाज के तरीकों के बारे में समझाया जाए। इससे बच्चों के मन में जिज्ञासा पैदा होगी और जब वे 10वीं कक्षा पास कर लेंगे, उनके मन में अपने भविष्य को लेकर स्पष्ट छवि होगी। आज स्थिति यह है कि कॉलेज की पढ़ाई के बाद भी कई युवाओं को मालूम नहीं कि वे क्या बनना चाहते हैं! इसमें उनका दोष नहीं है। जब व्यवस्था ही ऐसी चली आ रही है तो वे उद्यमी कैसे बनेंगे? हर व्यक्ति उद्यमी बन भी नहीं सकता। जिसकी रुचि हो, वही बने, लेकिन ऐसी व्यवस्था का निर्माण होना चाहिए, जो उद्यमिता को लेकर रुचि पैदा कर सके। जो युवा शिक्षक, डॉक्टर, वैज्ञानिक, बैंकर आदि बनकर देश की सेवा करना चाहते हैं, उन्हें अपनी पसंद के क्षेत्र में जरूर जाना चाहिए। देश में रोजगार के बहुत सारे विकल्प होने चाहिएं, ताकि बेरोजगारी जैसी कोई समस्या ही न रहे। यह उसी स्थिति में संभव है, जब उद्यमिता को बढ़ावा मिले।

## ट्वीटर टॉक

देश को नक्सलमुक्त बनाना मोदी सरकार का संकल्प है। जब तक सारे नक्सली या तो आत्मसमर्पण न कर दें, पकड़े न जाएँ या समाप्त न हो जाएँ, तब तक हम चैन से नहीं बैठेंगे। इस संकल्प को पूरा करने में हमारे सुरक्षाबलों के त्याग और समर्पण पर पूरे देश को गर्व है।

**-अमित शाह**

त्रिपुरा में तैनात बीएसएफ के जवान एवं बायतू के ग्राम चिमनजी निवासी श्री उगराराम पोटलिया की शहादत का समाचार अत्यंत दुःखद है। ईश्वर वीर शहीद की पुण्य आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें और शोकाकुल परिजनों को यह असीम दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

**-दीया कुमारी**

मोदी जी, पंजाब में बाढ़ ने भयंकर तबाही मचाई है। जम्मू-कश्मीर, हिमाचल और उत्तराखंड में भी स्थिति बेहद चिंताजनक है। ऐसे मुश्किल समय में आपका ध्यान और केंद्र सरकार की सक्रिय मदद अत्यंत आवश्यक है। हज़ारों परिवार अपने घर को बचाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

**-राहुल गांधी**

## प्रेरक प्रसंग

# मां की सीख

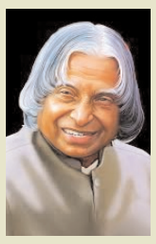

मिसाइल मैन कलाम का बचपन अपनी माता की उदारता तथा पिता के अनुशासन को देखते हुए बीता। बालक कलाम की अम्मी गमले में फूलों के पौधे लगाती थी। फूल उग जाते थे तो आसमान की तरफ देखकर अल्लाह की कुदरत और मेहर का शुकराना अदा करती थी। यह देखकर बालक कलाम हैरान हो जाते। एक बार वह पूछ बैठे कि अम्मी एक सवाल है जेहन में। आप ही निराई और गुड़ाई करती हो और मैंने पाठशाला में यह सीखा है कि बीज से ही पौधा बनता है। फिर आप रोजाना सींचती हो तो इसमें फूल खिलते हैं। तब भी आप आसमान की तरफ दुआ में हाथ उठा देती हो। यह मुझे समझ में नहीं आता है। वो इसलिए कलाम कि मुझमें कहीं गुरूर न पैदा हो। मैं इतराने न लगूं। इसलिए मैं उस परवरदिगार का शुकराना अदा करती हूं। कलाम ने अपनी आखिरी सांस तक अम्मी की यह सीख दिल में सहेज कर रखी। इसीलिए वह जीवन में इतने ऊंचे उठे।

## सामयिक

# डिजिटल युग में शिक्षक की भूमिका हुई अधिक महत्वपूर्ण

संदीप सृजन

मोबाइल : 9406649733

डिजिटल युग ने शिक्षा के परिदृश्य को पूर्णतः परिवर्तित कर दिया है। पहले शिक्षक कक्षा में ब्लैकबोर्ड और पुस्तकों के माध्यम से ज्ञान प्रदान करते थे, किन्तु आज वे डिजिटल उपकरणों, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और ऑनलाइन मंचों के साथ मिलकर छात्रों को भविष्य के लिए तैयार कर रहे हैं। आज जब हम डिजिटल परिवर्तन के शिखर पर हैं, शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान वितरक से बदलकर मार्गदर्शक, परामर्शदाता और नवप्रवर्तक की हो गई है। आज शिक्षक डिजिटल उपकरणों का उपयोग कर शिक्षा को अधिक समावेशी, व्यक्तिगत और प्रभावशाली बना रहे हैं। डिजिटल युग की शुरुआत इंटरनेट और कंप्यूटर के प्रसार से हुई, परन्तु 2020 की कोविड-19 महामारी ने इसे तीव्र गति प्रदान की। ऑनलाइन कक्षाएँ, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म्स ने शिक्षा को घर-घर तक पहुँचाया। युनेस्को की सन 2025 की रिपोर्ट के अनुसार, विश्व भर में 80% से अधिक छात्र डिजिटल उपकरणों से जुड़े हैं। इस परिवर्तन में शिक्षक की भूमिका केंद्रीय है। वे अब केवल लेक्चर देने वाले नहीं, अपितु डिजिटल सामग्री निर्माता (कंटेंट क्रिएटर) हैं, जो वीडियो,इंटरएक्टिव क्विज और वर्चुअल रियलिटी के माध्यम से शिक्षा प्रदान करते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से, शिक्षा हमेशा तकनीकी प्रगति से प्रभावित रही है। प्राचीन काल में गुरुकुल प्रणाली मौखिक थी, मध्ययुग में पुस्तकों का आगमन हुआ और अब डिजिटल युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीन शिक्षण ने क्रांति ला दी है। ओईसीडी की हाल की रिपोर्ट में उल्लेख है कि शिक्षकों को डिजिटल शिक्षा के लिए प्रशिक्षित करना आवश्यक है, ताकि वे छात्रों को जोखिमों से बचाते हुए लाभ प्रदान कर सकें।

डिजिटल युग में शिक्षक की प्राथमिक भूमिका मार्गदर्शक की है। वे छात्रों को ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित और निर्देशित करते हैं, न कि केवल सूचना प्रदान करते हैं। आज फ्लिप्ड क्लासरूम में छात्र घर पर वीडियो देखते हैं और कक्षा में विचार-विमर्श करते हैं। शिक्षक यहाँ मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं, जो छात्रों की जिज्ञासा को सही दिशा देते हैं। दूसरी भूमिका परामर्शदाता की है। डिजिटल युग में सूचनाओं की प्रचुरता के बावजूद, छात्रों को सही दिशा की आवश्यकता होती है। शिक्षक व्यक्तिगत शिक्षण पथ तैयार करते हैं, जहाँ एआई के माध्यम से छात्र की कमजोरियों का विश्लेषण होता है और शिक्षक व्यक्तिगत फीडबैक प्रदान करते हैं। तीसरी भूमिका नवप्रवर्तक की है। शिक्षक डिजिटल उपकरणों का उपयोग कर नवीन शिक्षण विधियाँ विकसित करते हैं। उदाहरण के लिए, वर्चुअल रियलिटी के माध्यम से इतिहास की घटनाओं को जीवंत करना या खेल- आधारित शिक्षण द्वारा गणित सिखाना। एक अध्ययन के अनुसार, डिजिटल मंच शिक्षकों के ज्ञान साझाकरण को बढ़ावा देते हैं, जिससे वे वैश्विक स्तर पर सहयोग कर पाते हैं।

डिजिटल युग में शिक्षकों के समक्ष कई चुनौतियाँ हैं। सबसे बड़ी चुनौती है डिजिटल डिवाइड। ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और उपकरणों की कमी के कारण छात्र पिछड़ जाते हैं। युनेस्को के अनुसार, सन 2025 में भी विकासशील देशों में 40 प्रतिशत शिक्षक डिजिटल उपकरणों से अपरिचित हैं। शिक्षकों को प्रशिक्षण की आवश्यकता है, किन्तु कई देशों में यह अपर्याप्त है। ओईसीडी की रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि डिजिटल शिक्षा के लिए शिक्षकों को सक्षम बनाने पर ध्यान देना चाहिए। दूसरी चुनौती साइबर सुरक्षा और गोपनीयता की है। ऑनलाइन कक्षाओं में डेटा लीक का खतरा रहता है। शिक्षकों को छात्रों को साइबर धमकी से बचाने की आवश्यकता है। साथ ही, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से साहित्यिक चोरी बढ़ सकती है, जिसके लिए शिक्षकों को मूल्यांकन विधियों में परिवर्तन करना पड़ता है। अनिच्छुक शिक्षकों को प्रौद्योगिकी अपनाने में सहायता की आवश्यकता है।

मानसिक स्वास्थ्य भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। डिजिटल कक्षाएँ शिक्षकों पर अतिरिक्त दबाव डालती हैं, जैसे 24 घण्टे उपलब्धता। एक अध्ययन के अनुसार, कई शिक्षक कार्यभार के कारण तनावग्रस्त हो रहे हैं। चुनौतियों के बावजूद, डिजिटल युग शिक्षकों के लिए अवसरों से परिपूर्ण है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षकों को नियमित कार्यों, जैसे ग्रेडिंग या लेसन प्लानिंग से मुक्त करती है, जिससे वे रचनात्मकता पर ध्यान दे सकें। कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग (सीओएल) की सन 2025 की रिपोर्ट में उल्लेख है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षकों को सशक्त बनाती है। उदाहरण के लिए एआई टूल्स छात्रों की प्रगति का अनुसरण करते हैं और शिक्षकों को अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। वर्चुअल रियलिटी और ऑगमेंटेड रियलिटी शिक्षा को गहन बनाते हैं। शिक्षक वर्चुअल टूर्स आयोजित करते हैं, जैसे मंगल ग्रह की सैर या ऐतिहासिक घटनाओं का अनुभव। अमेरिकन एसपीसीसी के अनुसार, डिजिटल युग में शिक्षा का विकास हो रहा है, जहाँ शिक्षक मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं।

व्यक्तिगत शिक्षण एक बड़ा अवसर है। डिजिटल उपकरण छात्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप सामग्री अनुकूलित करते हैं। शिक्षक डेटा एनालिटिक्स का उपयोग कर छात्रों की सहायता करते हैं। लिंक्डइन के एक लेख में सन 2025 में एआई-पावर्ड क्लासरूम्स की चर्चा है, जहाँ शिक्षक एआई को सहायक के रूप में उपयोग करते हैं। वैश्विक स्तर पर, नाइजीरिया जैसे देशों में टीआरसीएन डिजिटल पोर्टल शुरू कर शिक्षकों को आधुनिक बना रहा है। भारत में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 डिजिटल शिक्षा पर बल देती है। शिक्षक दिक्षा और स्वयं जैसे मंचों का उपयोग करते हैं। किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में कनेक्टिविटी की कमी जैसी चुनौतियाँ हैं। सन 2025 में, भारतीय शिक्षक कृत्रिम बुद्धिमत्ता को एकीकृत कर रहे हैं, परन्तु प्रशिक्षण की कमी एक बाधा है।

कुछ समय में शिक्षक की भूमिका और अधिक विकसित होगी। मेटावर्स में आभासी कक्षाएँ (वर्चुअल क्लासरूम्स) होंगी, जहाँ छात्र अवतार के रूप में भाग लेंगे। शिक्षक कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ सहयोग करेंगे, किन्तु मानवीय संपर्क का महत्व बना रहेगा। एनसी स्टेट यूनिवर्सिटी की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता युग में शिक्षकों का मानवीय संबंध अधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षकों को निरंतर प्रशिक्षण की आवश्यकता है। सरकारों को निवेश करना चाहिए, जैसे ग्लोबल पार्टनरशिप फॉर एजुकेशन (जीपीई) जो प्रौद्योगिकी सहायता प्रदान करता है। भविष्य में, शिक्षक सृजन अर्थव्यवस्था (क्रिएटर इकोनॉमी) का हिस्सा बनेंगे, जैसे सेजटूलर्न मंच पर पाठ्यक्रम बनाकर आय अर्जित करेंगे।

डिजिटल युग में शिक्षक की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। वे सृजनकर्ता हैं, जो डिजिटल उपकरणों के माध्यम से शिक्षा को सशक्त बनाते हैं। चुनौतियाँ हैं, परन्तु अवसर अधिक हैं। समाज को शिक्षकों का समर्थन करना चाहिए, ताकि वे छात्रों को भविष्य के लिए तैयार कर सकें। जैसा कि हायर एजुकेशन रिव्यू में उल्लेखित है, शिक्षक शिक्षण के मार्गदर्शक, सहयोगी और आजीवन शिक्षार्थी हैं। अंततः, डिजिटल युग शिक्षक को एक सुपरहीरो बनाता है, जो प्रौद्योगिकी और मानवता के बीच संतुलन स्थापित करता है।

## नजरिया

# विरल व्यक्तित्व अध्यात्म योगी आचार्य भिक्षु

मुनि चैतन्य कुमार अमन

संसार में विरले ही लोग होते है जिन्हें फूलों की सुवास का अहसास होता है जिस व्यक्ति को संसार की नश्वरता का बोध हो जाता है। वे अपने जीवन में मोहमयी जगत रचना से ऊपर उठकर आत्म कल्याण के मार्ग पर प्रस्थान कर देते हैं। चाहे मार्ग में कितने नुकीले कांटे भी क्यों न हो। वे उन कांटों भरी राह में अपने पथ का निर्धारण कर लेते है। सत्य की राह पर चलना किसी नुकीले कांटों पर चलने से कम नहीं होता। आचार्य श्री भिक्षु उन्हीं नुकीले कांटो पर चलना स्वीकार किया। उन्हें यह ज्ञात था कि मैंने जिस राह को चुना है वह सत्य की राह कठिनाईयों से भरी है। पग-पग पर अवरोध होंगे पर मुझे डरना नही होगा। हर कष्ट का सामना वीरता के साथ करना होगा। मंजिल ऐसे ही थोड़े मिल जाती है। मंजिल पाने के लिए विश्वास जरूरी है। आत्मविश्वास का मधुमास ही मंजिल को पास लाने वाला होता है। रण में लड़ने वाला योद्धा ही विजयश्री हासिल कर सकता है। उसी प्रकार जीवन में साधना के संग्राम में उतरकर ही सत्य का साक्षात्कार कर सकता है।

आचार्य भिक्षु का व्यक्तित्व बेजोड़ था। ऐसे व्यक्ति विरले ही होते है जिनका अवतरण शताब्दियों सहसब्दियों में कभी-कभार ही होता है। उनका वो श्यामवर्ण, दीर्घ व लम्बा कद, चमकता पल-पलाट करता भाल, दीप्तिमान हंसमुख चेहरा, ओज और तेज से परिपूर्ण था। ओजस्वी वाणी में माधुर्य व चुम्बकीय शक्ति थी जो एक बार सम्पर्क में आने वाले को अपना बना लेती थी। कहा जाता है जब प्रवचन करते तब श्रोताओं को आषाढ़ मास की मेघ गर्जना व सिंहनाद की अनुभूति होती थी। आचार्य भिक्षु का सम्पूर्ण जीवन की अध्यात्म यात्रा आत्माराधना व वीतराग साधना में बीता। तत्कालीन साधु समुदाय में व्याप्त सिद्धान्त विपर्यास के कारण उन्होंने गुरु के मोह को त्याग कर अभिनिष्क्रिमण किया। उनमें न तो कोई पद के प्रति लालसा थी न ही कोई शिष्यों का मोह, लोकेषणा और महत्वकांक्षा का भाव था। उनकी अन्तर भेदी वाणी से श्रावक समाज को एक नया युगबोध मिला। गुरु के मोह को त्यागकर सत्य

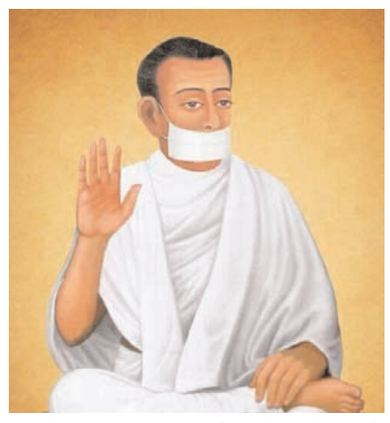

के मार्ग पर बढ़ते हुए उनके जीवन में घोर विरोध भी हुआ अनेक कष्टों का सामना हुआ। यहां तक कि जीवन यापन की अनिवार्य आवश्यकताएं भोजन-पानी तथा रहने के लिए स्थान भी उपलब्ध नहीं होता था। ऐसी विषम परिस्थिति में भी उनका मनोबल अडिग रहा। धैर्य अडोल रहा अपने आत्मधर्म व सत्यमार्ग पर निर्भीकता के साथ बढ़ते रहे। उनके आत्मबल को दुनियां की कोई ताकत हिला नहीं सकी उसी का परिणाम उन्हें विजयश्री हासिल हुई। उनका धार्मिक क्षेत्र में यह कदम तेरापंथ का उद्भव हुआ। सुदृढ़ मर्यादाएं, एक आचार एक विचार, एक आचार्य केन्द्रित यह धर्मसंघ जैन धर्म में सिरमोर बना हुआ है। अढ़ाई सौ से चलते हुए इस धर्मसंघ को आचार्य भिक्षु ऐसा वरदहस्त प्राप्त है कि अनेक अनेक जटिल परिस्थितियों में भी अपनी आन-बान-शान के साथ विश्व मानस के लिए मार्गदर्शक बना हुआ काल के परिपाक के साथ स्वर्णिम आभा लिए हुए अपना वर्चस्व स्थापित किए हुए है। यह देने है आचार्य भिक्षु की शौर्य वीरता का जिनका तेरापंथ जन-जन के लिए मेरापंथ बना हुआ है वीर-महावीर का पंथ बना हुआ है। ऐसे सत्यनिष्ठ सत्यावतार आचार्य भिक्षु को कोटि-कोटि नमन। उनका समाधि स्थल सिरियारी जन-जन का आस्था केन्द्र है, जहां पर प्रतिवर्ष हजारों लाखों लोग जैन-अजैन की छतीस कौम पहुंचकर श्रद्धा नमन करता हुआ अपने आपमें धन्यता की अनुभूति करता है और करता रहेगा।

## मुद्दा

# ऑनलाइन मनी गेमिंग पर सरकार ने कसा शिकंजा

## सख्त कानून रोकेगा धन की बर्बादी

ज्ञानचंद जैन

जुए और सट्टे की लत लोगों को बर्बाद कर देती है। जुए के कारण पांडव अपना राज्य और पत्नी द्रोपदी तक को हार गए थे। जुआ बहुत बड़ी बुराई है। जिसे इसकी लत लग जाती है, वह अपना धन, जायदाद सबकुछ लुटा बैठता है। वह दांव पर दांव लगाता जाता है कि कभी तो जीतेगा। यही लालच उसे कंगाल कर देता है। अपनी हार से व्यथित होकर कुछ लोग आत्महत्या तक कर लेते हैं।

जुए के अनेक रूप होते हैं। इनमें ताश, चौपड़, सट्टा मुख्य हैं। आजकल जुआ ऑनलाइन गेमिंग का रूप ले चुका है। मोबाइल पर कई तरह के गेमिंग ऐप हैं, जो लोगों को लालच देकर अपने जाल में फंसाते हैं। लोग इस लालच में ऐसे फंसते हैं कि हजारों-लाखों रुपए गंवा बैठते हैं। चूंकि यह ऑनलाइन गेम है, तो इसमें उनका खाता भी खाली हो सकता है। अपने इस नुकसान को पूरा करने के लिए कुछ लोग चोरी तक करते हैं। कुछ लोग कर्ज लेकर नुकसान की भरपाई करने की सोचते हैं। इस तरह वे जुए के दलदल में बुरी तरह फंसते चले जाते हैं।

### कई परिवार पीड़ित

देश में काफी दिनों से ऑनलाइन मनी गेमिंग पर रोक लगाने की मांग की जा रही थी, क्योंकि इसके कारण कई परिवार बर्बाद हो चुके हैं। सरकार ने इस मांग को गंभीरता से लिया है। पिछले दिनों 'ऑनलाइन गेमिंग विधेयक 2025' लोकसभा और राज्यसभा से पारित कर

दिया गया। राष्ट्रपति की मंजूरी मिलने के बाद यह कानून भी बन गया। इसका उद्देश्य रियल मनी गेमिंग यानी पैसे लगाकर खेले जाने वाले गेम्स पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाना है। सरकार इस कानून के जरिए ई-स्पोर्ट्स जैसे ऑनलाइन खेलों को बढ़ावा देगी, जिसमें कोई पैसा नहीं लगाना पड़ेगा। इससे देश में प्रतिस्पर्द्धी खेल के रूप में ई-स्पोर्ट्स को बढ़ावा मिल सकेगा। यह कानून न केवल भारत में काम करने वाली कंपनियों पर, बल्कि विदेश से ऑपरेट होने वाले ऑनलाइन मनी गेमिंग ऐप्स और वेबसाइटों पर भी लागू होगा। कानून का उल्लंघन करने वालों के लिए कड़ी सजा का प्रावधान रखा गया है। रियल मनी गेमिंग करने पर तीन साल तक की जेल या एक करोड़ रुपए तक का जुर्माना, या दोनों हो सकते हैं। कानून में इससे संबंधित विज्ञापनों पर भी रोक का प्रावधान है। आजकल फिल्म व खेल जगत से जुड़े मशहूर लोग ऑनलाइन गेमिंग का विज्ञापन कर रहे हैं। ये सोचते भी नहीं कि इस तरह के विज्ञापनों से नई पीढ़ी पर क्या प्रभाव पड़ेगा! अब इस तरह के विज्ञापन करने पर दो साल तक की जेल या 50 लाख रुपए तक का जुर्माना, या दोनों हो सकते हैं।

गेमिंग प्लेटफॉर्म के विज्ञापनों पर रोक लगाने के साथ ही बैंक और दूसरे वित्तीय संस्थानों को उन्हें मनी ट्रांजेक्शन रोकने का प्रावधान किया गया है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव का कहना है कि मनी गेमिंग के जाल में फंसकर कई लोग अपनी जिंदगीभर की जमा-पूंजी से हाथ धो बैठते हैं। सरकार इस तरह के जोखिम कम करने के लिए कानून लाई है। सरकार का कहना है कि वह लोगों को बर्बादी के रास्ते पर जाने से रोकेगी। उनके जीवन से खिलवाड़ नहीं होने देगी। सरकार का मानना है कि मनी गेमिंग की आड़ में कई कंपनियां मनी लांड्रिंग, आतंकवाद के लिए फंडिंग और आतंकवादी संगठनों द्वारा संदेश भिजवाने का काम भी कर रही हैं, जिससे देश की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। अनुमान है कि देश के करीब 45 करोड़ लोग ऑनलाइन गेमिंग के चंगुल में फंसे हुए हैं। इसके चक्कर में लोग सालाना 20 हजार करोड़ रुपए का नुकसान उठाते हैं। उक्त कानून लागू होने से लोग ऑनलाइन मनी गेम नहीं खेल पाएंगे। उनके 20 हजार करोड़ रुपए भी बचेंगे।

### सरकार का सराहनीय कदम

भारत सरकार की सराहना करनी पड़ेगी कि ऑनलाइन गेमिंग कंपनियों के व्यापक विरोध के बावजूद वह इस पर प्रतिबंध लगाने के लिए विधेयक लाई और कानून बनाकर उसे लागू कर दिया। सरकार ने स्पष्ट किया है कि इसका अनुपालन कराने की जिम्मेदारी राज्य सरकारों पर होगी। उन्होंने भी इससे संबंधित तमाम प्रक्रियाएं शुरू कर दी हैं, ताकि कानून को सख्ती से लागू किया जा सके। कोई संदेह नहीं कि सरकार ने इस संबंध में बहुत सख्त कानून बनाया है। यह जरूरी था, क्योंकि मनी गेमिंग की लत लगने से लोग अपना पैसा तो गंवा ही रहे थे, कई युवाओं ने जान भी गंवा दी थी। समाज को सुधारने की दिशा में यह बहुत बड़ा कदम है। सरकार ने तो अपनी जिम्मेदारी पूरी कर दी। अब राज्य सरकारों पर निर्भर है कि वे इसे प्रभावी ढंग से लागू करें। साथ ही, जनता की भी जिम्मेदारी है कि वह राज्य सरकारों का साथ दे। किसी बुराई को छोड़ने के लिए कानून की जरूरत ही नहीं होनी चाहिए, लेकिन कोई बुराई जब नासूर बन जाए तो उसे फैलने से रोकने के लिए कानून बनाना पड़ता है। उम्मीद है कि ऑनलाइन गेमिंग बंद होने से लोग खुशहाल जिंदगी की ओर बढ़ सकेंगे।

महत्त्वपूर्ण

Published by Bhupendra Kumar on behalf of New Media Company, Arihant Plaza, 2nd Floor, 84-85, Wall Tax Road, Chennai-600 003 and printed by R. Kannan Adityan at Deviyin Kanmani Achagam, 246, Anna Salai, Thousand Lights, Chennai-600 006. Editor : Bhupendra Kumar (Responsible for selection of news under PRB Act.). Group Editor - Shreekant Parashar. Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any suchmanner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law.**Regn No.RNI No. : TNHIN / 2013 / 52520**

पाठकों से अनुरोध है कि इस प्रकाशन में प्रकाशित किए जाने वाले किसी भी तरह के विज्ञापन (वैवाहिक, वर्गीकृत, टेंड़र एवं सजावटी इत्यादि) पर कोई भी कार्यवाही, प्रतिबद्धता या धनराशि का व्यय करने से पूर्व इन विज्ञापनों के बारे में समस्त जानकारी वह स्वयं प्राप्त कर लें। दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह उत्पादों की गुणवत्ता तथा सेवाओं के लिए विज्ञापनदाताओं द्वारा किए जा रहे किसी प्रकार के दावों के लिए जिम्मेदार नहीं है। अगर विज्ञापनदाता विज्ञापन में किया जा रहा दावा पूरा नहीं करता है तो दक्षिण भारत राष्ट्रमत समूह के संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक या मालिकान को पाठक किसी भी रूप में उत्तरदाई नहीं बना सकता।- **दक्षिण भारत राष्ट्रमत**

# विनाशकारी सैलाब के बीच भी सिखों की जीवटता और मेहमाननवाजी कायम

चंडीगढ़/भाषा। पंजाब में चारों ओर सैलाब ही सैलाब है, लोगों के घर, फसलें और मवेशी डूब गए हैं। लेकिन परीक्षा की ऐसी कठिन घड़ी में भी पंजाब के लोगों की जीवटता, उनकी मजबूती, दृढ़ इरादों और सबसे बढ़कर उनकी मेहमाननवाजी की तारीफें हो रही हैं। सिख संगठनों और गैर सरकारी संगठनों के स्वयंसेवक जब राहत सामग्री बांटने पहुंचे तो स्थानीय लोगों ने मेहमानों की तरह उनका स्वागत किया और उनके लिए चाय पानी का इंतजाम किया।

पंजाब इस समय हालिया इतिहास की सबसे भयावह बाढ़ का सामना कर रहा है। सतलुज, व्यास और रावी में उफनते सैलाब के साथ ही हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर के जलभराव वाले क्षेत्रों में भारी बारिश होने से छोटी नदियां भी तटबंधों को तोड़कर बह रही हैं जिससे बाढ़ की स्थिति और खराब हो रही है।

अधिकारियों के अनुसार, अब तक 30 लोगों की मौत हो चुकी है और 3.50 लाख से अधिक लोग प्रभावित हुए हैं। करीब 1.48 लाख हेक्टेयर भूमि से अधिक फसल बाढ़ में नष्ट हो गई।

गुरदासपुर, पठानकोट, फाजिल्का, कपूरथला, तरनतारन, फरीदकोट, होशियारपुर और अमृतसर जिले सबसे अधिक प्रभावित हैं।

एनजीओ और सिख संगठनों ने सरकारी प्रयासों के साथ मिलकर राहत और बचाव कार्य जारी रखा है। स्वयंसेवकों ने बताया कि कई जगहों पर खेत 8-10 फुट पानी में डूब गए हैं और गांवों तक पहुंचने के लिए नावों का सहारा लेना पड़ रहा है।

कुछ ग्रामीणों ने संकटग्रस्त हालात के बावजूद राहतकर्मियों को चाय या दूध परोसकर उनका आतिथ्य सत्कार किया।

बाबा दीप सिंह सेवा दल के स्वयंसेवक जसविंदर सिंह ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया, कुछ लोग हमें चाय भी परोसते हैं।

गुरदासपुर के दिनानगर में भी नाव से राशन वितरित करते स्वयंसेवकों को एक परिवार ने चाय पिलाई जो खुद बाढ़ के पानी में डूबे अपने घर की छत पर रातें गुजार रहा है।

एक और इलाके में एक गांववाला थर्मस में चाय भरकर स्टील के गिलास हाथों में लिए दो .तीन फुट पानी में चलते हुए राहत सामग्री बांट रहे स्वयंसेवकों तक पहुंचा।

एनजीओ और संगठनों द्वारा चावल, दाल, सरसों का तेल, बिस्कुट, गेहूं का आटा, दवाइयां और पशु चारा वितरित किया जा रहा है।

**समारोह**

चीन की राजधानी बीजिंग में एक सैन्य परेड में मिलिशिया दस्ता शामिल हुआ। चीन ने बुधवार को जापानी आक्रमण के विरुद्ध चीनी जन प्रतिरोध युद्ध और विश्व फासीवाद-विरोधी युद्ध में विजय की 80वीं वर्षगांठ मनाने के लिए एक भव्य समारोह का आयोजन किया।

# धोनी की तरह 'कैप्टन कूल' बनना चाहती हैं पाकिस्तानी कप्तान फातिमा सना

नई दिल्ली/भाषा। आगामी आईसीसी वनडे विश्व कप में पाकिस्तान की कप्तानी करने जा रही फातिमा सना भारत के विश्व कप विजेता कप्तान महेंद्र सिंह धोनी से प्रेरणा लेती हैं और उन्हीं की तरह 'कैप्टन कूल' बनने की ख्वाहिश भी रखती हैं। अप्रैल में हुए क्वालीफायर्स में अपराजेय रहने वाली पाकिस्तानी टीम भारत और श्रीलंका में 30 सितंबर से दो नवंबर तक होने वाले वनडे विश्व कप में अपने अभियान का आगाज दो अक्टूबर को कोलंबो में बांग्लादेश के खिलाफ करेगी।

तेईस वर्ष की फातिमा ने लाहौर से भाषा को दिए इंटरव्यू में कहा, विश्व कप जैसे बड़े टूर्नामेंट में कप्तानी करने पर शुरू में थोड़ा नर्वस होना लाजमी है लेकिन मैं बतौर कप्तान महेंद्र सिंह धोनी से प्रेरणा लेती हूं। उन्होंने कहा, मैंने उनके भारत के कप्तान के तौर पर और आईपीएल मैच देखे हैं। वह जिस तरह मैदान पर फैसले लेते हैं, शांत रहते हैं और अपने खिलाड़ियों का समर्थन करते हैं, उससे काफी कुछ सीखने को मिलता है। जब मुझे कप्तानी मिली थी तभी मैंने सोचा था कि धोनी की तरह बनना है। उनके इंटरव्यू भी देखे तो काफी कुछ सीखने को मिला। धोनी ने 15 अगस्त 2020 को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से विदा ली जबकि फातिमा ने छह मई 2019 को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण किया था।महिला वनडे विश्व कप में पाकिस्तान पांच बार (1997, 2009, 2013, 2017 और 2022 में) खेला है लेकिन 1997, 2013 और 2017 में एक भी मैच नहीं जीत सकी। पिछली बार 2022 में एकमात्र जीत हैमिल्टन में वेस्टइंडीज के खिलाफ मिली लेकिन बाकी सारे मैच हारकर टीम आखिरी स्थान पर रही थी।

पाकिस्तान के लिए 34 वनडे में 397 रन बनाने और 45 विकेट लेने वाली हरफनमौला फातिमा को यकीन है कि इस बार यह मिथक टूटेगा क्योंकि युवा खिलाड़ियों को पता है कि उनके प्रदर्शन से देश में महिला क्रिकेट का मुस्तकबिल तय होगा। उन्होंने कहा, इस बार यकीनन यह मिथक टूटेगा क्योंकि युवा खिलाड़ियों को पता है कि पाकिस्तान महिला क्रिकेट के लिए यह टूर्नामेंट कितना अहम है।

# दुलकर सलमान के प्रोडक्शन हाउस ने आलोचना के बाद 'लोका' का संवाद बदलने की बात कही

नई दिल्ली/भाषा। मलयालम फिल्म 'लोका चैप्टर 1: चंद्रा' के निर्माताओं ने खेद प्रकट किया है और वादा किया है कि वे उस संवाद को हटा देंगे जिससे 'कर्नाटक के लोगों की भावनाओं को अनजाने में ठेस पहुंची है'। कल्याणी प्रियदर्शन, सैंडी और नसलेन अभिनीत इस फिल्म का निर्देशन डोमिनिक अरुण ने किया है और यह 28 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज हुई। दुलकर सलमान ने अपने प्रोडक्शन बैनर वेफेयरर फिल्म्स के तहत इसका निर्माण किया है।

इस फिल्म के एक दृश्य की आलोचना हो रही है जिसमें सैंडी का निभाया किरदार इंस्पेक्टर नचियप्पा गौड़ा बेंगलूरु की लड़कियों को अपमानजनक तरीके से संबोधित करता है। सलमान के बैनर ने मंगलवार शाम अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम हैंडल पर माफी मांगते हुए कहा कि टीम संवाद में बदलाव करेगी। उसने कहा, हमारे संज्ञान में आया है कि हमारी फिल्म 'लोका: चैप्टर वन' के एक किरदार द्वारा बोले गए संवाद ने अनजाने में कर्नाटक के लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचाई है। वेफेयरर फिल्म्स में, हम लोगों को हर चीज से ऊपर रखते हैं। बयान में कहा गया है, हमें इस चूक पर गहरा खेद है और हम आपको विश्वास दिलाना चाहते हैं कि किसी भी तरह की ठेस पहुंचाने का इरादा नहीं था।

# गायक राहुल देशपांडे ने पत्नी नेहा से अलग होने की जानकारी दी

नई दिल्ली/भाषा। राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता गायक राहुल देशपांडे ने बताया कि वह और उनकी पत्नी नेहा ने 17 साल के वैवाहिक जीवन के बाद अलग होने का फैसला किया है।

देशपांडे ने मंगलवार को इंस्टाग्राम पर एक विस्तृत पोस्ट साझा कर बताया कि दोनों का कानूनी रूप से अलगाव सितंबर 2024 में हुआ। उन्होंने लिखा, प्रिय मित्रों, आप सभी अपने-अपने तरीके से मेरी यात्रा का एक सार्थक हिस्सा रहे हैं और इसलिए मैं आपके साथ एक निजी और महत्वपूर्ण जानकारी साझा करना चाहता हूं। मैंने आपमें से कुछ लोगों के साथ यह जानकारी पहले ही साझा की है। शादी के 17 साल और अनगिनत यादगार लम्हों के बाद नेहा और मैंने आपसी सहमति से अलग होने का निर्णय लिया है। हमारा कानूनी अलगाव आपसी सहमति से सितंबर 2024 में हुआ।गायक ने बताया कि वह और उनकी पत्नी अपनी बेटी रेनुका देशपांडे की परवरिश साथ मिलकर करेंगे। उन्होंने कहा, मैंने यह जानकारी साझा करने से पहले कुछ समय लिया ताकि इस बदलाव को निजी रूप से समझ सकूं और यह सुनिश्चित कर सकूं कि हर चीज सोच-समझकर संभाली जाए, खासकर हमारी बेटी रेनुका के हित को ध्यान में रखा जाए। रेनुका मेरी प्राथमिकता है और मैं नेहा के साथ मिलकर उसे प्यार, आपसी सहयोग से पालने के लिए प्रतिबद्ध हूं।

देशपांडे ने प्रशंसकों और परिचितों से इस निर्णय को समझने और उनकी निजता का सम्मान करने का अनुरोध किया।

राहुल देशपांडे को वर्ष 2022 में फिल्म 'मी वसंतराव' के लिए सर्वश्रेष्ठ पार्श्वगायक का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था। वह 'दिल की तपिश, अपने ही रंग में' और 'हा रंग चढ़ू दे' जैसे गीतों के लिए भी जाने जाते हैं।

# कृति सेनन बनीं यूएनएफपीए की ब्रांड एंबेसडर

**मुंबई/एजेन्सी**

बॉलीवुड अभिनेत्री कृति सेनन के नाम एक और उपलब्धि जुड़ गई है। वो संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) की ब्रांड एंबेसडर बनाई गई हैं। यह संयुक्त राष्ट्र संघ की एक संस्था है जिसका कार्य महिला, पुरुष और बच्चों के अधिकार, स्वास्थ्य और समान अवसर के साथ सुखी जीवन को बढ़ावा देना है। ब्रांड एंबेसडर बनने के बाद उन्होंने अपनी भूमिका के बारे में बात की और बताया कि कैसे अपने करियर की शुरुआत में उन्हें लैंगिक असमानता का सामना करना पड़ा। कृति सेनन ने बॉलीवुड में वेतन असमानता के बारे में भी बात की। सेनन ने आईएएनएस से कहा, मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। ये बहुत बड़ा सम्मान है और उतनी ही बड़ी जिम्मेदारी भी। मैं इसके लिए बहुत उत्सुक हूं, क्योंकि मुझे हमेशा से ये लगता था कि मैं कुछ ऐसा बदलाव ला सकूं जो मेरे दिल के करीब हो। मेरा मानना है कि लैंगिक असमानता बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है। ये बहुत बड़ा मुद्दा है, फिर चाहे बात जेंडर बेस्ड वायलेंस की हो या गर्ल चाइल्ड एजुकेशन की हो। मुझे खुशी है कि मैं यूएनएफपीए के साथ मिलकर ऐसे लोगों के लिए अब कुछ कर पाऊंगी, उनका साथ दे पाऊंगी। यह मेरे लिए बहुत मायने रखता है। मैं अपने देश का वैश्विक स्तर पर प्रतिनिधित्व करना चाहती थी, अपनी आवाज के जरिए ऐसे मुद्दों को उठाना चाहती थी, जिससे लोगों के जीवन खुशहाल बन सकें। अगर अपने आप पर काम करेंगे तो वो भी सफलता पा सकते हैं।

उन्होंने लैंगिक असमानता के बारे में भी बात की और कहा, छोटे-छोटे लेवल पर हम सभी इनसे दो-चार होते हैं। जैसे हमारी आवाज उतनी नहीं सुनी जाती जितनी मेल एक्टर्स की बात सुनी जाती है। जब कोई लड़की सवाल करती है तो उन्हें कम सुना जाता है, जबकि कोई मेल एक्टर ऐसा करता है तो उसे कहा जाता है कि देखो ये कितना जानकार है। ये बदलना चाहिए। साथ ही फिल्म इंडस्ट्री में वेतन असमानता भी एक मुद्दा है। उन्होंने यूथ को संदेश देते हुए कहा, आप अपना मूल्य पहचानो। सभी लड़के-लड़कियों को अपने लिए खड़ा होना चाहिए। आपके साथ कोई दोयम दर्जे का व्यवहार न करे, इस बात का ध्यान रखें। अगर अपने आप पर काम करेंगे तो वो भी सफलता पा सकते हैं।

# दिशा पाटनी की हॉलीवुड फिल्म 'हॉलीगार्ड्स' का टीजर वेनिस फिल्म फेस्टिवल में हुआ लॉन्च

**मुंबई/एजेन्सी**

अभिनेत्री दिशा पाटनी की हॉलीवुड फिल्म 'हॉलीगार्ड्स' का टीजर रिलीज हो गया है। खास बात यह है कि इसे वेनिस फिल्म फेस्टिवल में लॉन्च किया गया। इस फिल्म से वे हॉलीवुड में डेब्यू करने जा रही हैं। 'हॉलीगार्ड्स' के टीजर में वे एक अलग दुनिया में योद्धाओं की तरह लड़ती दिखाई दे रही हैं। इसे देखकर ऐसा लगता है कि वे इस फिल्म में जबरदस्त एक्शन करती दिखाई देंगी। फिल्म में दो कबीले मानव के भविष्य को बचाने के लिए लड़ते दिखाई देंगे। इसे ऑस्कर विजेता फिल्म निर्माता केविन स्पेसी ने डायरेक्ट किया है। फिल्म में डॉल्फ लुंडग्रेन, टायरेस गिब्सन और ब्रायना हिल्डब्रैंड जैसे कलाकार भी हैं। इंस्टाग्राम पर दिशा पाटनी ने कुछ समय पहले इस हॉलीवुड फिल्म में होने की बात कही थी। तब उन्होंने इसके सेट से एक तस्वीर भी फैंस के लिए साझा की थी।

रविवार को दिशा पटानी अपनी बेस्ट फ्रेंड मौनी रॉय के साथ घूमते हुए देखी गई थीं। दोनों अक्सर हैंगआउट करती रहती हैं। जब भी उन्हें समय मिलता है तो वे साथ में वक्त बिताती हैं। इसकी तस्वीरें भी वे सोशल मीडिया पर शेयर करती हैं। दिशा पटानी ने मौनी के साथ एक फोटो शेयर करते हुए लिखा था, बेस्ट फ्रेंड के साथ संडे को घूमना तो बनता है। इस फिल्म के अलावा दिशा के पास 'वेलकम 3' भी है, जिसमें बहुत सारे स्टार्स होंगे। इसके साथ ही वे प्रभास की फिल्म 'कल्कि' के पार्ट 2 में भी दिखाई देंगी। वहीं कुछ समय पहले पता चला था कि दिशा पटानी, विशाल भारद्वाज की आने वाली फिल्म में शाहिद कपूर के साथ स्क्रीन शेयर करती दिखाई देंगी।

कहा जा रहा है कि फिल्म में दिशा का स्पेशल कैमियो होगा। यह पहली बार होगा जब दिशा पाटनी और शाहिद कपूर पहली बार साथ दिखाई देंगे। इस जोड़ी को साथ देखने के लिए फैंस पहले से ही उत्साहित हैं। शाहिद कपूर ने एक लंबी पोस्ट में इस फिल्म की शूटिंग खत्म होने की जानकारी दी थी। इसके लिए उन्होंने पूरी कास्ट को धन्यवाद कहा था। साथ ही, एक्टर ने विशाल भारद्वाज को भी फिल्म में कास्ट करने के लिए आभार व्यक्त किया था।

**घोषणा**

भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) की विधान परिषद सदस्य के. कविता ने पार्टी से निलंबित होने के एक दिन बाद बुधवार को हैदराबाद में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान पार्टी की प्राथमिक सदस्यता और विधान परिषद सदस्य पद से अपने इस्तीफे की घोषणा की।

# फिल्म 'मन्नू क्या करेगा'? के चार्टबस्टर गीत 'हमनवा' पर 8000 छात्रों ने साथ में डांस कर बनाया वर्ल्ड रिकॉर्ड

**मुंबई/एजेन्सी**

नवोदित कलाकारों व्योम और साची बिंद्रा से सजी क्यूरियस आईज़ सिनेमा की बहुप्रतीक्षित फिल्म मन्नू क्या करेगा?, को लेकर उत्साह लगातार बढ़ता जा रहा है। विशेष रूप से फिल्म के ट्रेलर को न सिर्फ दर्शकों से जबरदस्त प्यार मिला है, बल्कि इसके म्यूज़िक एल्बम ने भी अपना जादू बिखेर दिया है। इनमें 'हमनवा', 'सैयां', 'फ़ना हुआ', 'तेरी यादें', 'गुलफ़ाम' और 'हल्की हल्की बारिश', इन सभी गीतों ने श्रोताओं के दिलों में अपनी ख़ास जगह बना ली है। हाल ही में यह उत्साह एक नए शिखर पर पहुँच गया, जब 8000 कॉलेज छात्रों ने फिल्म के लोकप्रिय गाने 'हमनवा' पर थिरकते हुए फिल्म को अपना प्यार और समर्थन दिया। मजे की बात यह है कि छात्रों की इस विशाल भीड़ ने मिलकर डांस करते हुए एक वर्ल्ड रिकॉर्ड बना लिया है, जो किसी भी फिल्म के लिए अब तक सबसे ज़्यादा छात्रों द्वारा एक साथ किया गया परफॉर्मंस है। यह असाधारण उपलब्धि इस बात को रेखांकित करती है कि फिल्म दर्शकों के बीच कितना गहरा जुड़ाव और अपार लोकप्रियता हासिल कर चुकी है।

इस अवसर पर दिग्गज संगीतकार ललित पंडित ने कहा, 8000 कॉलेज छात्रों को 'हमनवा' पर एक साथ थिरकते हुए देखना वाकई अविश्वसनीय है। संगीत की कोई सीमाएँ नहीं होतीं और यह पल साबित करता है कि हमारी धुनें युवाओं से कितनी गहराई से जुड़ गई हैं। यह हमारे लिए गर्व और भावनात्मक पल है, और हमें खुशी है कि हमारा संगीत वह जादू रच रहा है जिसकी हमने हमेशा चाहत की थी। फिल्म के निर्माता शरद मेहरा ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा, यह प्रतिक्रिया वाकई ऐतिहासिक है। 8000 छात्रों का इस तरह एकत्र होकर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाना फिल्म की पहुँच और लोकप्रियता का प्रमाण है। हमें बेहद खुशी है कि मन्नू क्या करेगा? युवाओं के दिलों को छू रही है और इसका संगीत दर्शकों के बीच सही तार छेड़ रहा है। फिल्म में व्योम और साची बिंद्रा के अलावा विनय पाठक, कुमुद मिश्रा, राजेश कुमार और चारू शंकर भी अहम भूमिकाओं में नज़र आएंगे। यह फिल्म 2025 में भारत के रोमांटिक म्यूज़िकल जॉनर को एक नई परिभाषा देने जा रही है। ताज़े चेहरों, दिल को छू लेने वाली भावनाओं और संगीत को अपनी आत्मा मानकर बनी यह फिल्म 2025 की सबसे संगीतमय और भावनात्मक सिनेमाई अनुभवों में से एक साबित होने वाली है।फिल्म का जादू बड़े पर्दे पर देखने के लिए तैयार हो जाइए, जब मन्नू क्या करेगा? 12 सितंबर 2025 को पूरे भारत में रिलीज़ होगी।

# उत्तर भारत में बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए करीना कपूर ने लोगों से की अपील

**मुंबई/एजेन्सी**

उत्तर भारत में नदियां उफान पर हैं और बाढ़ ने खूब तबाही मचा रखी है। इस बीच बॉलीवुड अभिनेत्री करीना कपूर खान ने उत्तर भारत के बाढ़ पीड़ितों के लिए चिंता व्यक्त की है। साथ ही लोगों से उनकी मदद करने का अनुरोध किया है। मंगलवार को करीना कपूर ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज पर दो पोस्ट साझा की हैं। इसमें अभिनेत्री ने लिखा, मेरी प्रार्थनाएं उत्तर भारत में बाढ़ से प्रभावित सभी लोगों के साथ हैं। ईश्वर आपको जल्द से जल्द राहत और शक्ति प्रदान करें। बाढ़ ने कई लोगों की जान ले ली है, घर उजड़ गए हैं और आजीविका छिन गई है। इसलिए मैं सक्षम लोगों से अपील करती हूं कि राहत कोष में जितना हो सके दान करें और हो सके तो जो लोग कर सकते हैं, कृपया विश्वसनीय राहत कोषों का समर्थन करें और मदद करने में जुटे स्थानीय लोगों का हाथ बटाएं।

'सिंघम अगेन' एक्ट्रेस ने अगली पोस्ट में हेल्पलाइन नंबर्स की एक लिस्ट भी शेयर की है। गौरतलब है कि पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, और हिमाचल प्रदेश में बाढ़ ने अपना कहर बरपा रखा है। इसके चलते हजारों लोग विस्थापित हो गए हैं।

इससे पहले सोमवार को बॉलीवुड स्टार सोनू सूद भी मदद के लिए हाथ आगे बढ़ाए। एक्टर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर लिखा, मैं पंजाब के साथ हूं। इस विनाशकारी बाढ़ से प्रभावित कोई भी व्यक्ति अकेला नहीं है। हम सब मिलकर हर एक व्यक्ति को फिर से अपने पैरों पर खड़ा होने में मदद करेंगे। अगर आपको किसी भी तरह की मदद की जरूरत है तो कृपया बेझिझक संदेश भेजें। हम आपकी हरसंभव मदद करने की पूरी कोशिश करेंगे। उन्होंने कहा कि पंजाब मेरी आत्मा है। चाहे सब कुछ चला जाए, मैं पीछे नहीं हटूंगा। हम पंजाबी हैं और हम हार नहीं मानते। बता दें कि पंजाब में बाढ़ का सबसे ज्यादा कहर देखने को मिल रहा है। अमृतसर में 35 हजार से ज्यादा लोग प्रभावित हुए हैं। वहीं, फिरोजपुर में 24 हजार से ज्यादा लोग बाढ़ की चपेट में हैं। फाजिल्का, होशियारपुर, पठानकोट, गुरदासपुर, कपूरथला, जालंधर, बरनाला और मोगा में भी बाढ़ का प्रभाव देखने को मिला है। राज्य से अब तक करीब 15 हजार लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है।

# किरण राव, बीजू टोप्पो बने अरण्य सहाय की 'ह्यूमन्स इन द लूप' के कार्यकारी निर्माता

नई दिल्ली/भाषा। फिल्म निर्देशक किरण राव और बीजू टोप्पो ने निर्देशक अरण्य सहाय की पुरस्कार विजेता फिल्म 'ह्यूमन्स इन द लूप' के कार्यकारी निर्माता की जिम्मेदारी संभाल ली है। यह सहाय की पहली फीचर फिल्म है, जो एक आदिवासी महिला की कहानी है। यह महिला कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के लिए 'डेटा लेबलिंग' के रूप में काम करती है। राव ने एक बयान में कहा, मुझे 'ह्यूमन्स इन द लूप' पहली बार देखने से ही बहुत पसंद आ गई। यह बेहद मार्मिक और सोचने पर मजबूर कर देने वाली फिल्म है। इस फिल्म का समर्थन करना जरूरी लगा।

राव की फिल्म 'लापता लेडीज़' 2024 के अकादमी पुरस्कारों में भारत की आधिकारिक प्रविष्टि रही थी। आदिवासी सिनेमा के प्रणेता टोप्पो ने स्वदेशी समुदायों के संघर्षों और संकटों से जूझने की उनकी जीजिविषा को दर्शाने के लिए अपने दशकों के अनुभव का इस्तेमाल किया है। उन्होंने कहा कि 'ह्यूमन्स इन द लूप' सीधे तौर पर उन लोगों के जीवन को दर्शाती है जिन्हें वह व्यक्तिगत रूप से 'जानते और देखते' आए हैं।

टोप्पो ने कहा, बहुत लंबे समय से आदिवासियों का जीवन न सिर्फ इतिहास में बल्कि भविष्य की हमारी कल्पनाओं में भी अदृश्य रहा है। 'ह्यूमन्स इन द लूप' हमारे दृष्टिकोण को साहसपूर्वक व्यक्त करती है। इस फ़िल्म को शुरू से देखने के बाद, मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि यह एक क्षेत्रीय और एक वैश्विक दोनों तरह की फिल्म है। स्टोरीकल्चर इंपैक्ट फैलोशिप और एसएयूवी फिल्म्स के साथ मिलकर मथिवानन राजेंद्रन, साराभी रविचंद्रन, शिल्पा कुमार और सहाय द्वारा निर्मित यह फिल्म झारखंड पर केंद्रित है और नेहमा नामक एक ओरांव आदिवासी महिला की कहानी है।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
www.dakshinbharat.com
epaper.dakshinbharat.com
चेन्नई | गुरुवार | 04-09-2025 /dakshinbharat /dakshinbharat DAKSHIN BHARAT RASHTRAMAT HINDI DAILY
RNI No. : TNHIN/2013/52520
Regn No. : TN/CCN/613/2014-2016
posted at Patrika Channel,
Egmore RMS, Chennai-8

जब तक इंसान छद्मस्थ है तब तक उसके जीवन में भूल होने की पूरी संभावना है वीतरागता की भूमिका में पहुंचने के बाद ही जीवन निर्दोष होता है। गत वर्ष में किसी के प्रति हुए अप्रिय व्यवहार के लिए क्षमा याचना करने से आत्मा हल्कापन महसूस करती है इसलिए क्षमा याचना हृदय पूर्वक की जानी चाहिए। बगैर सरलता और स्पष्टता के केवल रिवाज और रूढ़ि के तौर पर क्षमापना करना नाटक के सिवाय और कुछ भी नहीं है क्षमा का आदान प्रदान हार्दिकता से करना चाहिए।

# गूंजे रामदेव बाबा के जयकारे, शोभायात्रा में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**चेन्नई।** अवतारी बाबा रामदेव के 62 वे वार्षिक महोत्सव के उपलक्ष्य में मंगलवार को सायंकाल साहूकारपेट स्थित मंदिर से बाबा की भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। इस शोभायात्रा में विभिन्न समाजों की अनेक झांकियां निकाली गई जिसमें विभिन्न इष्टदेवों की प्रतिमूर्तियां आकर्षक सजावट के साथ लोगों का मन मोह रही थी।

रामदेव भवन ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी रेखाराम पटेल एवं रामदेव मंडल ट्रस्ट के अध्यक्ष मंगल सिंह एस पुरोहित ने बताया कि बाबा का वरघोड़ा साहूकारपेट की गलियों मिंट स्ट्रीट आदिअप्पा स्ट्रीट, नाइन अप्पा नायकेन स्ट्रीट, गोविंदप्पा स्ट्रीट आदि से गुजरते हुए पुनः मंदिर पहुंची। उन्होंने बताया कि बाबा के वरघोड़े को देखने के लिए भक्तों की भारी भीड़ रही गलियां, चौराहे जय बाबा री के गगनभेदी नारों से गुंजायमान हो रही थी, क्षेत्र के भक्तों ने रास्तों में शोभायात्रा में चल रहे भक्तों के लिए जलपान की भी व्यवस्था की थी। अध्यक्ष मंगल सिंह पुरोहित ने बताया कि इस शोभायात्रा को संपन्न करवाने में स्थानीय प्रशासन के साथ-साथ स्थानीय पार्षद राजेश रंगीला एवं समाज सेवी शांतिलाल पुरोहित की अग्रणी भूमिका रही।

श्री रामदेव भवन ट्रस्ट एवं श्री रामदेव मंडल के अनेक पदाधिकारियों ने भी दिन रात एक कर के कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना अमूल्य योगदान दिया है।

# 'प्रकृति की रक्षा और विकास के बीच संतुलन जरूरी'

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। यहां साहुकारपेट के जैन भवन में राष्ट्रसंत कमल मुनि जी कमलेश ने 3 सितम्बर को अपने प्रवचन में कहा कि अतिवृष्टि, अनवृष्टि, भूकंप आदि प्राकृतिक प्रकोप आने पर, नादान मानव देवी प्रकोप अथवा भगवान के प्रकोप के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। इससे बड़ा अज्ञान और को कुछ नहीं हो सकता। अपनी गलतियों को, कमजोरी को, नादानी के दोष छुपाने के लिए, दूसरों को आरोपी बनाना सरासर अन्याय है। उन्होंने कहा कि मानव ने विलासिता और स्वार्थ में डूब कर प्रकृति पर जो कहर ढाया है। इसका दुष्परिणाम हमारी आंखों के सामने आ रहा है। इसकी नैतिक जिम्मेदारी इंसान को अपने ऊपर लेनी चाहिए। नियंत्रण और सुधार का प्रयास करना चाहिए प्रकृति का कोई विकल्प नहीं है। पर्यावरण कानून क्रूर मजाक का शिकार बन रहा है। जंगल राज छाया हुआ है कानून नाम की कोई चीज नहीं है। प्रशासन और माफिया गिरोह की मिली भगत से जंगल साफ हो रहे हैं, जंगली जानवर शहर में जाकर लोगों को अपना शिकार बना रहे हैं इसका दोषी कौन है?

उन्होंने कहा कि धरती मां कि छाती को छलनी-छलनी किया जा रहा है, विकास के नाम पर वृक्षों का संहार किया जा रहा है। जहरीली गैसों और पानी को जहरीला बनाने वाली फैक्ट्रियां को परमिशन मिल रही है। शान से चल रही है धरती का टेंपरेचर बढ़ रहा है, ग्लेशियर पिघल रहा है, ग्लोबल वार्मिंग हो रहा है, मानो अपने हाथों से अपने विनाश को खुला निमंत्रण दे रहे हैं। पर्यावरण कानून में हरे वृक्ष की डाली अपराध है, फिर दूसरे प्राणियों पर खंजर चलाने की इजाजत कैसे, किसी भी प्राणी की हत्या पर्यावरण कानून की हत्या करने के समान है प्रकृति से छेड़छाड़ करना अपने हाथों से अपने पांव पर कुल्हाड़ी मरने के समान है। प्रकृति रक्षा और विकास के बीच संतुलन होना अत्यंत जरूरी है इंसान को छोड़कर सभी प्राणी प्रकृति संतुलन में योगदान दे रहे हैं प्रकृति की रक्षा करना धर्म और भगवान की रक्षा करने के समान माना गया है। कार्यक्रम का संचालन मंत्री डॉ संजय पिंचा ने किया।

## गोपालपुरम में आचार्य श्री जयमल जन्म जयन्ती समारोह कल

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**चेन्नई।** यहाँ गोपालपुरम स्थित छाजेड भवन में चातुर्मासार्थ विराजित क्रांतिकारी संत श्री कपिल मुनि जी म.सा. के सानिध्य व श्री जैन संघ,गोपालपुरम-चेन्नई के तत्वावधान में शुक्रवार को भीष्म प्रतिज्ञाधारी एकभवावतारी आचार्य सम्राट श्री जयमल जी म.सा. का 318 वां जन्मोत्सव एवम श्रमण संघ के प्रथम पट्टधर आचार्य श्री आत्माराम जी म.सा. का 145 वाँ जन्मोत्सव जन्म जयंती समारोह जप तप की आराधना और सामुहिक सामायिक साधना के द्वारा मनाया जाएगा। इस मौके पर श्रद्धालु श्रावक श्राविकाओं के द्वारा बड़ी संख्या में एकासन, आयम्बिल, उपवास आदि तप की आराधना की जायेगी।

बुधवार को कपिल मुनिजी म.सा. ने श्रद्धालुओं को आह्वान किया कि जैन धर्म के महा प्रभावक दो जैनाचार्यों के जन्म जयन्ती के प्रसंग पर अधिक से अधिक धर्म आराधना और जीवदया, शिक्षा, चिकित्सा के क्षेत्र में कार्य करने की प्रेरणा करते हुए कहा कि इन महापुरुषों का का समग्र जीवन आत्म कल्याण के साथ मानवता की सेवा के लिए समर्पित रहा है।

अत: उन महापुरुष की जन्म जयन्ति को परोपकारी कार्यो के सम्पादन के द्वारा मनाएं।

## सम्मान

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

श्रमण संघीय साध्वीश्री चारित्र प्रभाजी की शिष्या डॉ प्रतिभाश्री जी म.सा. के सान्निध्य में नगर के सेवा भावी युवा उमेश सुराणा ने बुधवार को मासखमन के प्रत्याख्यान लिए। श्री कोयंबटूर स्थानकवासी जैन संघ के अध्यक्ष राजेश कुमार बोहरा ने आगंतुकों का स्वागत किया। इस मौके पर संघ ने अभिनंदन पत्र प्रदान कर तपस्वी उमेश सुराणा का सम्मान किया गया। संघ के कोषाध्यक्ष धनराज चोरड़िया के साथ ही कार्यकारिणी सदस्य राजेश कुमार गादिया, रॉबिन बाबेल, दिनेश कवाड़ आदि ने अभिनंदन पत्र प्रदान किया।

# ज़िंदगी दूसरों के भरोसे चलने के कारण दुखी होती हैं : डॉ. समकित मुनि

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। यहां पुरुषवाक्कम स्थित एएमकेएम जैन मेमोरियल ट्रस्ट में विराजमान डॉ. समकित मुनिजी म.सा. के सानिध्य में बुधवार को आगम विधान का तीसरा दिवस मनाया गया। आगे प्रवचन के दौरान डॉ. समकित मुनिजी ने परदेशी राजा की कहानी को आगे बढ़ाते हुए बताया कि चित सारथी राजा को घोड़ा घुमाने के बहाने ले गया और फिर पेड़ के नीचे जब दोनों आराम करने लगे, तब केसी श्रमण की वाणी वहाँ गूंज रही थी। इस पर राजा चित से कहने लगा कि हमारे ही बागीचे में, हमारी ही नगरी में यह कौन है जो इतनी उँची आवाज़ में बोल रहा है और जहाँ हमारा है वहाँ पर भी हमें शांति नहीं मिल रही है। मुनिजी ने यहाँ भी समझाया कि 90 प्रतिशत हमारी ज़िंदगी दूसरों के भरोसे पर चलती है। वे जब रुलाएँ तब रोना और जब हँसाएँ तब हँसना। क्या हम खुद अपनी ज़िंदगी नहीं जी सकते? हमारी खुशी भी दूसरों पर निर्भर होती है और हमारे दुख भी। उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि मधुमक्खी शहद को बचाने के लिए अपनी जान लगा देती है, मगर किसी को देती नहीं। मर जाने के बाद वह शहद किसी के काम नहीं आता। इसलिए हमें मधुमक्खी जैसा नहीं बनना है। हमारे पास जो है उससे मदद करनी है। यदि मना कर दिया तो मधुमक्खी जैसे ही होंगे - न खुद के लिए और न ही दूसरों के लिए। जब परदेशी राजा ने चित सारथी से पूछा कि यह कौन है जो हमारे बागीचे में इतनी उँची आवाज़ में बोल रहा है, तब चित सारथी ने उनका परिचय देते हुए कहा कि वे जाति और कुल दोनों से संपन्न हैं। यानी माता का परिवार और पिता का परिवार दोनों ही श्रेष्ठ हैं।

विवाह का उदाहरण देते हुए मुनिजी ने कहा कि पहले शादी में 'समधी' का बड़ा महत्व था। 'सम' यानी संपन्न और धी' यानी बुद्धिमान। पहले लोग यह सब देखते थे, पर आजकल ऐसा कुछ नहीं है। आगे कहते हैं कि अगर चाय में मधुमक्खी गिर जाए तो हम पूरी चाय फेंक देते हैं, क्योंकि एक मधुमक्खी के कारण पूरी चाय खराब हो जाती है। वैसे ही ज़िंदगी में भी, विवाह के समय एक गलती पड़ जाए तो सब बिगड़ जाता है। चित सारथी ने परदेशी राजा को यह भी बताया कि वह श्रमण चार ज्ञान धारी हैं, जिनकी मति भी निर्मल है और वाणी भी निर्मल। जब चित सारथी ने श्रमण के बारे में विस्तार से बताया तो परदेशी राजा आश्चर्यचकित हो गया। उसने तो सोचा था कि वे अज्ञानी होंगे, लेकिन सारथी की बातें सुनते-सुनते उसका भी मन हुआ कि वह भी उनसे एक बार मिलना चाहेगा।

राजा ने सारथी से कहा कि तुम इतना उनके बारे में बता रहे हो तो क्या हम उनसे एक बार मिलने जाएँ? इस कहानी को मुनिजी ने अगले प्रवचन में जारी रखने की बात की। मंच संचालन मंत्री विनयचंद पावेचा ने किया।

## एएम जैन कॉलेज ने मनाया स्थापना दिवस

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

**चेन्नई।** मीनाम्बक्कम स्थित श्री एसएस जैन एजुकेशनल सोसाइटी के अंतर्गत संचालित अगरचंद मानमल जैन कॉलेज ने 123वें स्थापना दिवस को बड़े गौरव और हर्षोल्लास के साथ मनाया।

यह स्मृति समारोह भगवान महावीर ज्ञान भवन में आयोजित किया गया और इसमें संकाय, छात्र, पूर्व छात्र और गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। इस समारोह में पद्मश्री मोहनमल चोरड़िया की चिरस्थायी विरासत को श्रद्धांजलि दी गई, जिनके दूरदर्शी नेतृत्व और शिक्षा के प्रति समर्पण ने कॉलेज के सतत विकास की प्रभावी नींव रखी थी।

कार्यक्रम की शुरुआत कॉलेज के संस्थापक की प्रतिमा पर माल्यार्पण और कुथुविलकु के प्रज्ज्वलन के साथ हुई समारोह में शाह अगरचंद मानमल परिवार द्वारा एक अत्याधुनिक कंप्यूटर प्रयोगशाला के निर्माण के लिए 21 लाख रुपए दान दिया गया। इस परिवर्तनकारी पहल का उद्देश्य कॉलेज की डिजिटल शिक्षण क्षमताओं को महत्वपूर्ण रूप से उन्नत करना और छात्रों को आधुनिक तकनीकी उपकरणों तक पहुँच प्रदान करना है। इस गरिमापूर्ण कार्यक्रम में कॉलेज के सचिव उधन कुमार चोरडिया ने कहा कि शिक्षा जीवन में बदलाव लाने का सबसे शक्तिशाली माध्यम है।

अपने कॉलेज के माध्यम से हम युवा मस्तिष्कों को मूल्यों, ज्ञान और कौशल से पोषित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं ताकि वे तेज़ी से बदलती दुनिया में आगे बढ़ सकें। उन्होंने कहा कि यह नई कंप्यूटर लैब नवाचार और प्रगति के प्रति हमारे समर्पण को दर्शाती है।



## नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई में बुधवार को भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) की जॉर्ज टाउन शाखा ने बॉम्बे म्यूचुअल बिल्डिंग, पैरीज़ में नि:शुल्क व्यापक स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया। यह शिविर एलआईसी की 69वीं बीमा स्थापना वर्षगांठ और एमजीएम अस्पताल, चेन्नई के साथ एजेंट दिवस के अवसर पर आयोजित किया गया था।

वरिष्ठ शाखा प्रबंधक दिनेश कुमार ने शिविर का उद्घाटन किया।

## 'आदर्श एसपीरा 2025' का रंगारंग शुभारंभ

बेंगलूरु। शहर के चामराजपेट स्थित सीतादेवी रतनचंद नाहर आदर्श कॉलेज में बुधवार को वार्षिक महोत्सव 'आदर्श एसपीरा 2025' का शुभारंभ हुआ। महोत्सव के प्रथम दिवस में विविध सांस्कृतिक एवं खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

# पर्युषण पर्व की आभा में निकली दिव्य चैत्य परिपाटी

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
dakshinbharat.com

चेन्नई। यहां किलपॉक श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ ट्रस्ट के तत्वावधान में बुधवार को आचार्यश्री हीरचंद्रसूरिश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में भव्य चैत्य परिपाटी का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 5:30 बजे आचार्यश्री के मंगल पाठ एवं मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय में दर्शन-चैत्यवंदन के साथ हुई। इसके पश्चात् चतुर्विध संघ के साथ चैत्य परिपाटी मिलर्स रोड स्थित नेमीनाथ जिनालय, अरिहंत वैकुंठ अपार्टमेंट स्थित मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय तथा लुंबिनी अपार्टमेंट स्थित शांतिनाथ जिनालय होते हुए एसपीआर सिटी स्थित आदिनाथ मंदिर तक पहुंची। पंचतीर्थ यात्रा के रूप में सम्पन्न इस आयोजन में आचार्यश्री सहित बड़ी संख्या में साधु-साध्वी और श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। आचार्यश्री ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि चैत्य का अर्थ है मन को जोड़ना। इसका उद्देश्य प्रभु के प्रति कृतज्ञता, आभार और अनुकंपा प्रकट करना है। यह केवल मंदिर-दर्शन नहीं, बल्कि तप, ध्यान और क्षमापना की आध्यात्मिक यात्रा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जीवन बिना लक्ष्य अधूरा है। हमारा लक्ष्य केवल भोग-विलास नहीं, बल्कि शरीर के माध्यम से धर्ममय कार्य होना चाहिए। मैत्री भाव सबके साथ होना आवश्यक है। आचार्यश्री ने पंन्यास विमल पुण्यविजयजी म.सा. की सौवीं ओली साधना की अनुमोदना करते हुए उन्हें समुदाय का गौरव बताया। साथ ही आगामी उपधान तप आराधना में जुड़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि मानव भव गति नहीं, प्रगति के लिए है। यह परिवर्तन नहीं, बल्कि पुनरावर्तन के लिए है। जीवन में लक्ष्य निर्धारित करने पर ही सिद्धि संभव है। इस अवसर पर एसपीआर सिटी प्रांगण में आयोजित नवकारसी का लाभ जसराज माणेकचंद श्रीश्रीमाल परिवार ने लिया।

Published by Bhupendra Kumar on behalf of New Media Company, Arihant Plaza, 2nd Floor, 84-85, Wall Tax Road, Chennai-600 003 and printed by R. Kannan Adityan at Deviyin Kanmani Achagam, 246, Anna Salai, Thousand Lights, Chennai-600 006.
Regn No. RNI No. : TNHIN / 2013 / 52520 **Editor : Bhupendra Kumar** (Responsible for selection of news under PRB Act.). Group Editor - Shreekant Parashar.
Reproduction of any matter from this newspaper in whole or in part or any such manner without prior written permission from the publisher is strictly prohibited and punishable by law.